पोस्टल रजि.नं.यूए-नैनीताल-356-2021-2023

BLM Academy

Affiliated to C.B.S.E. New Delhi, C.B.S.E. Affiliation No.: 3530343
ISO 9001:2015 (QMS) Certified School

Wish You all a Very Happy New Year

"The Best Way To Predict Your Future Is To Create It With BLM Academy."

Vision -
To prepare the children empowered with Indian ethical and spiritual values to face the global challenges.

Mission-
To produce enriched and enlightened human resource for the country.

Pillars -
SATYA, PURUSHARTH & PARAMARTH

Goal-
ब्रह्म तद् लक्ष्यम्

Admission Open
For The Academic Session 2025-2026
(Classes Nursery to IX & XI)

LIMITED SEATS
APPLY NOW

Streams: Science, Commerce & Humanities

Celebrate The Gift of Life

+91 7055515681
+91 7055515683
www.blmacademy.com
Padampur Devaliya, Gora Parao, Haldwani (Nainital), Uttarakhand
blma.principal@gmail.com

प्रणवो धनुः शरो हि आत्मा ब्रह्म तल्लक्ष्यमुच्यते।
अप्रमत्तेन वेद्धव्यं शरवत्तन्मयो भवेत् ।। (मुण्डक उपनिषद)

अक्टूबर 2025

उत्तरांचल दीप पत्रिका

यशस्वी पत्रकार वेदप्रकाश गुप्ता को समर्पित

सपा नेता ने कराया उपद्रव ?

₹:40

ई-मेल: uttranchaldeepatrika@gmail.com
Web: uttaranchaldeep.com

मासिक
उत्तरांचल दीप पत्रिका

वर्ष:8, अंक 6, अक्टूबर 2025

संस्थापक संपादक
स्व.वेदप्रकाश गुप्ता
प्रधान संपादक
साकेत अग्रवाल
संपादक
श्रीमती आदेश अग्रवाल
मुख्य कार्यकारी संपादक
केके चौहान
मुख्य उप संपादक
उदयभान सिंह
मार्केटिंग हेड
तारु तिवारी
प्रबंधक
दीपक तिवारी
वरिष्ठ संवाददाता
रवि दुर्गापाल

उत्तरांचल दीप ब्यूरो
दिल्ली : शालिनी चौहान
लखनऊ : पारस अमरोही
रुद्रप्रयाग : हिमांशु पुरोहित
नैनीताल : अफजल फौजी
अल्मोड़ा : कमल कपूर
पिथौरागढ़ : ललित जोशी
बागेश्वर : नरेंद्र बिष्ट
चंपावत : मनोज राय
बरेली : अनुज सक्सेना
मुरादाबाद : आर्शेंद्र कुमार अग्रवाल
डोईवाला : चंद्रमोहन कोठियाल
किच्छा : राजकुमार राज
रामनगर : एचसी भट्ट
थत्यूड़ : मुकेश रावत
रुद्रपुर : मुकेश गुप्ता
बाजपुर : इंद्रजीत सिंह
ग्राफिक्स डिजाइन: देवेंद्र सिंह बिष्ट
सभी पद अवैतनिक एवं परिवर्तनीय

मुख्यालय
हल्द्वानी: चंद्रकांता हाउस, जजी के सामने
नैनीताल रोड, हल्द्वानी (उत्तराखंड)

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक श्रीमती आदेश अग्रवाल द्वारा उत्तरांचल दीप, चंद्रकांता हाउस, जजी के सामने नैनीताल रोड हल्द्वानी से मुद्रित व प्रकाशित।
आएनआई नंबर: UTTHIN/2018/77440
पोस्टल रजि.नं.यूए-नैनीतील-356-2021-2023

उत्तरांचल दीप पत्रिका में प्रकाशित लेख, पत्र व अन्य कालम में लेखकों के विचार होते हैं, उनसे संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
समस्त विवाद हल्द्वानी न्यायालय के अधीन होंगे।

www.uttaranchaldeep.com
uttranchaldeepatrika@gmail.com
+91 8881788066 @uttranchaldeep

अंदर

मोदी शून्य से शिखर तक

1978 में मोदी को आरएसएस का संभाग प्रचारक नियुक्त किया गया, सूरत और वडोदरा में गतिविधियों की देखरेख की जिम्मेदारी दी गई, 1979 में वह आपातकाल के दौरान आरएसएस की भूमिका पर शोध और लेखन के लिए दिल्ली आ गए, 1985 में उन्हें आरएसएस से भाजपा में शामिल किया गया।

बिहार उत्तराखं

देवभूमि या आपदा भूमि

हर मानसून कई गांव बहा ले जाता है, हर बरसात बहुत से घर उजाड़ देती है और हर बारिश लाशों की नई गिनती कराती है ...

पर्यटन

कुमाऊं में छिपा स्वर्ग पेओरा

ब्रिटिशकालीन बंगलों, प्राचीन मंदिरों, कुमाऊंनी संस्कृति के साथ पेओरा गांव ऐसा ...

14

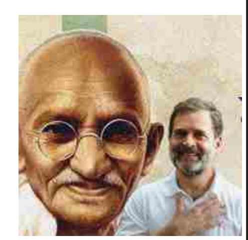

साहस नजरिया

गांधी का ख्वाब पूरा करेगा 'गांधी'

कांग्रेस वोट चोरी के मुद्दे को सुप्रीम कोर्ट नहीं ले जाना चाहती क्योंकि राहुल गांधी एंड कंपनी कोर्ट में झूठ ...

राष्ट्रीय

संघ को अपनी सौ साल की यात्रा पूरी करने में अनेक कठिनाइयों, चुनौतियों, झूठे विमर्शों, मनगढ़ंत आरोपों का सामना करना पड़ा है ...

साकेत अग्रवाल

अनावश्यक टिप्पणी से विवाद

भारत के इतिहास में आज तक ऐसा कभी नहीं हुआ कि हिंदुस्तान के मुख्य न्यायाधीश पर ही कोई जूता फेंक दे। इससे पहले ऐसी घटनाएं फिल्मों में अभिनेताओं और प्रत्यक्ष रूप से नेताओं पर होती थी। लेकिन ऐसी क्या मजबूरी हो गई है कि एक 72 साल के वकील राकेश किशोर ने चीफ जस्टिस बीआर गवई के ऊपर जूता फेंकने की कोशिश की। भारत में न्यायालय को न्याय का मंदिर और न्यायालय में बैठे न्यायाधीश को माई लॉड कहा जाता है। यानी 'मेरे प्रभु' माई लॉड का उपयोग न्यायाधीश, बिशप या कुलीन व्यक्ति के प्रति सम्मान व्यक्त करता है। इसका प्रयोग ब्रिटिश शासन के दौरान भारत में होता था और यह ब्रिटेन के लॉर्ड्स हाऊस से आया है। कुल मिलाकर कहने का मतलब है कि न्याय के मंदिर में बैठकर माई लॉड को भी संयम बरतना चाहिए, आदर्श व मर्यादा को नहीं भूलना चाहिए। न्याय के मंदिर में बैठे न्यायाधीश को जाति, धर्म, पंथ आदि से ऊपर उठकर बिना किसी पक्षपात, भेदभाव के पारदर्शी तरीके से न्याय करना चाहिए। यही न्यायाधीश का असली धर्म और कर्म है। न्यायाधीश यदि राजनेताओं जैसी भाषा बोलने लगे, किसी धर्म विशेष के प्रति लचीलापन और किसी दूसरे धर्म के प्रति कठोर, विवादित या अपमानित करने वाले वाक्यों का उपयोग करते हैं तो उसकी प्रतिक्रिया निश्चित है। लेकिन प्रतिक्रिया का तरीका संवैधानिक होना चाहिए। 6 अक्टूबर को सुप्रीम कोर्ट में जो हुआ वो नहीं होना चाहिए था, एक 72 वर्ष के वकील ने जो किया उसकी आलोचना होनी चाहिए, लेकिन राजनीति नहीं होनी चाहिए। चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया बीआर गवई के साथ जो हुआ उसके बाद सुप्रीम कोर्ट के वकील ही नहीं राजनेता भी दो खेमों में बंट गए हैं। दोनों तरफ से तरह-तरह की प्रतिक्रियाएं आ रही हैं। सोशल मीडिया पर सिर्फ चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया बीआर गवई और उनकी तरफ जूता फेंकने की कोशिश करने वाले वकील राकेश किशोर ट्रेंड कर रहे हैं। दोनों खेमे वकील राकेश किशोर और चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया बीआर गवई की कुंडली खंगाल रहे हैं। एक पक्ष का कहना है कि बीआर गवई के पिता इंदिरा गांधी के राज में तीन राज्यों के राज्यपाल रहे हैं, सांसद भी रहे। इस तरह चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया बीआर गवई को कांग्रेस से जोड़ा जा रहा है। तर्क दिया जा रहा है कि गुजरात में मोदी सरनेम को लेकर राहुल गांधी पर मानहानि का केस चला और उन्हें दो साल की सजा सुनाई गई जिससे राहुल गांधी की लोकसभा सदस्यता चली गई थी, लेकिन राहुल गांधी की लोकसभा सदस्यता बहाल करने में बीआर गवई की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इस तरह के और भी तमाम तर्क दिए जा रहे हैं।

विवाद की शुरुआत 16 सितंबर को एक पीआईएल की सुनवाई के दौरान हुई। सुनवाई के दौरान सीजेआई बीआर गवई ने याचिका को प्रचार हित याचिका बता दिया। सीजेआई गवई ने मौखिक रूप से कहा था, 'जाकर अपने देवता से ही कुछ करने को कहिए। अगर आप भगवान विष्णु के बहुत बड़े भक्त हैं, तो आप प्रार्थना करें और कुछ ध्यान करें।' इस टिप्पणी के बाद सीजेआई गवई सोशल मीडिया पर ट्रेंड होने लगे। उन पर धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने का आरोप लगने लगे। सोशल मीडिया पर आलोचना शुरू हुई तो सीजेआई गवई ने अदालत में स्पष्ट किया कि वह सभी धर्मों का सम्मान करते हैं और उनके शब्दों को गलत ढंग से पेश किया गया है। उन्होंने यह भी कहा कि उनकी टिप्पणी का संदर्भ आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया (एएसआई) के अधिकार क्षेत्र से जुड़ा था, जिसके पास मंदिर की देखरेख का जिम्मा है। यह पीआईएल राकेश दलाल द्वारा दायर की गई थी जिसमें दावा किया गया था कि मुगल आक्रमणों के दौरान मूर्ति को क्षतिग्रस्त कर दिया गया था। याचिका के अनुसार सरकार से इसे पुर्नस्थापित करने के लिए बार-बार अनुरोध करने के बावजूद यह उसी अवस्था में बनी हुई है। याचिकाकर्ता के अनुसार इसमें मूल रूप से चंद्रवंशी राजाओं द्वारा निर्मित खजुराहों के मंदिरों का इतिहास बताया गया था। भगवान विष्णु पर की गई टिप्पणी की क्या आवश्यकता थी। मौखिक टिप्पणी से बचा जाना चाहिए था। पीआईएल पर सुनवाई के दौरान इस तरह की टिप्पणी किए बिना क्या कोई अड़चन पैदा हो रही थी? क्या सीजेआई ने कभी किसी और धर्म पर इस तरह की टिप्पणी की है? निश्चित ही नहीं की है। खैर सीजेआई ने सफाई देकर इस पूरे विवाद को विराम देने की कोशिश की, लेकिन इसके बाद उन्होंने मॉरीशस में कह दिया कि बुलडोजर से देश नहीं चलेगा। बीआर गवई देश के मुख्य न्यायाधीश हैं, उन्हें बुलडोजर वाला बयान देने की बजाये इस पर एक्शन लेना चाहिए। बुलडोजर कार्रवाई पर रोक लगा देनी चाहिए, लेकिन वो ये सब न कर मॉरीशस में बयान देते हैं तो भारतीयों पर क्या बीतेगी, ये भी सीजेआई को समझना चाहिए था। इससे भारत की छवि पर कैसा प्रभाव पड़ेगा। इसलिए आरोपी वकील राकेश किशोर ने दावा किया कि पीआईएल पर सुनवाई के दौरान सीजेआई ने सनातन धर्म का अपमान किया। खुजराहो में सात फीट की भगवान विष्णु की मूर्ति है। इस मूर्ति का सिर धड़ से अलग है। जब विदेशी आक्रांता भारत आए थे, तो उन्होंने कई हिंदू मंदिरों पर हमला किया था। इनमें यह मंदिर भी शामिल था। हमले में भगवान विष्णु की मूर्ति क्षतिग्रस्त हो गई थी। मैं खुद उस मूर्ति के पास जाकर रो चुका हूं। मुझे इस बात का दुख है कि इतनी सुंदर मूर्ति का सिर गायब है। यह हम सभी लोगों के लिए दुख का विषय है। राकेश किशोर का कहना है कि इसी मूर्ति को ठीक करने की मांग जब सीजेआई के सामने उठाई गई तो उन्होंने कहा कि तुम तो इतने बड़े भगवान के भक्त हो। तुम ही जाकर मूर्ति से कहो कि वो ही कुछ कर लें। मुझे ये टिप्पणी ठीक नहीं लगी, इसके बाद मैं सो नहीं पा रहा था। मैंने खुद कुछ नहीं किया जो किया ईश्वरीय शक्ति ने किया है, जिसका मुझे कोई अफसोस भी नहीं है। ●

मन की बात

नेहरू ने की वोट चोरी

राहुल गांधी वोट चोरी की बात कर रहे हैं। उनको बताना चाहता हूं कि वोट चोरी की परंपरा तो कांग्रेस ने शुरू की है। बात 1952 की है जब पहला आम चुनाव हुआ तो रामपुर से कांग्रेस के मौलाना आजाद 20,000 वोटों से हार गए थे। जब ये बात नेहरू को पता चली तो उन्होंने तत्कालीन यूपी के सीएम गोविंद वल्लभ पंत को फोन किया और कहा मौलाना आजाद हारना नहीं चाहिए। गोविंद वल्लभ पंत ने कहा कि रिजल्ट घोषित हो चुका है। तब नेहरू ने धमकाया कि मौलाना आजाद नहीं जीते तो तुम भी मुख्यमंत्री नहीं रहोगे। डीएम से बात करो और रिजल्ट बदलवाओ। लिहाजा नौकरी बचाने के लिए डीएम और सीएम ने जीते हुए प्रत्याशी के वोट चोरी कर मौलाना आजाद को जीता हुआ घोषित कर दिया था। राहुल को अपने पुरखों का इतिहास पढ़ लेना चाहिए।

योगेश टोंडक, अभिनेता-निर्माता मुंबई।

राहुल विश्वास खो चुके

राजनीतिक भाग दौड़ का प्रतिफल सत्ता की कुर्सी पर जाकर ही विश्राम करता है। सफलता के इस मुकाम तक पंहुचने के लिए दूषित सोच, निराधार आरोप और जनता की कमजोर नस को पकड़कर प्रलोभन और आश्वासन के फूलों की वर्षा भी जरूरी है। जहां तक राहुल गांधी का प्रश्न हैं कई पीढ़ियों ने सत्ता के सिंहासन के आसपास ही आंख खोली हैं। वर्तमान में सत्ता से लंबी दूरी बैचेनी का कारण तो हैं ही, जो बौद्धिक छटपटाहट की तरफ भी इशारा करती है। ईवीएम हैक करने का आरोप हो या वोट चोरी का, किंतु सच ये है कि राहुल गांधी जनता का विश्वास खो चुके है। इसलिए वो जो भी आरोप लगाते हैं प्रबुद्ध वोटर अपना मुंह मोड़ लेता है। जहां तक मेरा आकलन हैं इस तरह के आरोपों से जनता के मूड बदलने की संभावना लगभग न के बराबर ही होती है।

हरी प्रकाश शर्मा, लाइनपार, मुरादाबाद

वोट चोरी का सबूत दे

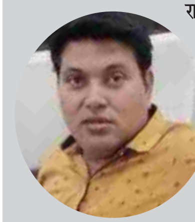

राहुल गांधी इन्हें कौन नहीं जानता कि ये बेलगाम हैं। राजनीति, अर्थव्यवस्था, रणनीति, विदेश नीति से इनका कोई रिश्ता नहीं है। इसलिए सिर्फ आरोप लगाते हैं और पतली गली से निकल जाते हैं। वोट चोरी हुई है तो सबूतों से साथ सुप्रीम कोर्ट क्यों नहीं जा रहे। क्योंकि राहुल को पता है कि फिर कोर्ट में माफी मांगनी पड़ेगी। इसलिए सड़क पर शोर मचाकर जनता को गुमराह करते रहो, लेकिन राहुल शायद ये नहीं जानते कि जनता के पास उनसे कहीं ज्यादा दिमाग है। राहुल गांधी सिर्फ विदेशी स्क्रिप्ट पढ़ने में माहिर हैं, जो देश विरोधी ताकतें लिखकर देती हैं वही संसद से लेकर सड़क तक उगलते हैं। इन्हें ने देश से मतलब न देशवासियों से और न ही गरीबी, बेरोजगारी, महंगाई से कोई वास्ता है। इन्हें सिर्फ सत्ता से मतलब है। लेकिन पूरा देश जानता है कि पप्पू टाइप नेताओं से देश नहीं चलता।

अमित कुमार शर्मा, स्योहारा, बिजनौर

वोट चोरी मुद्दा नहीं

राहुल गांधी का वोट चोरी का आरोप निराधार है, इसलिए वोट चोरी आम वोटर के लिए कोई मुद्दा ही नहीं है। न ही वोट चोरी की राजनीति से कांग्रेस को कोई लाभ होने वाला है। वोट चोरी की परंपरा तो राहुल के परनाना जवाहर लाल नेहरू ने डाली थी, जब वो एक वोट पाकर 14 वोट पाने वाले सरदार पटेल को हराकर पीएम बन गए थे। शर्म आनी चाहिए गांधी परिवार को इन्होंने तो सरनेम गांधी तक चुरा रखा है। राहुल कभी अपने दादा फिरोज खान का नाम खुद से क्यों नहीं जोड़ते। जबकि जमाना जानता है कि राहुल गांधी कौम से हिंदू नहीं है। फिर राहुल गांधी इतना झूठ परोस चुके हैं कि अब जनता उनके सच पर भी यकीन नहीं करती। राहुल के परिवार से तीन प्रधानमंत्री हुए हैं चौथा 10 साल तक सुपर प्रधानमंत्री रहा है। लेकिन राहुल में पीएम बनने का एक भी गुण मुझे तो नहीं दिखता है।

विनोद शाह, निर्माता निर्देशक, मुंबई

कांग्रेस का दामन दागदार

कांग्रेस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, नेता प्रतिपक्ष जैसी डिग्री लेने के बाद भी राहुल गांधी बुद्धि से पैदल हैं। इसलिए वोट चोरी का इल्जाम लगा कर शोर मचा रहे। लेकिन उनका दामन तो पहले से ही दागदार है। कांग्रेस ने सैदव मुस्लिम तुष्टिकरण की राजनीति की जो देश के भविष्य के लिए घातक है। अब वोट चोरी का नारा लगा कर देश को शर्मशार करने का प्रयास कर रहे हैं। भारत में स्वतंत्र चुनाव कराने के लिये चुनाव आयोग बना है। वो बिना किसी दबाव के पूरी पारदर्शिता से चुनाव करता है। ऐसे में सिस्टम पर सवाल उठाना सरासर गलत है। ऐसी ओछी राजनीति से कांग्रेस को कोई लाभ नहीं मिलेगा। देश की जनता राहुल गांधी पर बिल्कुल भी विश्वास नहीं करती है क्योंकि वह समुदाय विशेष के नेता बनते जा रहे हैं जिस कारण हिंदू समाज का भरोसा राहुल गांधी पर नहीं है।

राजेंद्र पुष्पक राजा, स्योहारा बिजनौर

कुर्सी के लिए देश बांटा

कांग्रेस पार्टी नहीं बल्कि टुकड़े-टुकड़े गैंग है। कांग्रेस ने कुर्सी की खातिर भारत माता को खंडित कर दिया। कांग्रेस के ही नेहरू ने पीएम बनने के लिए टीबी के मरीज जिन्ना को पाकिस्तान दिया। पाकिस्तान के वजूद में आने के बाद जिन्ना सिर्फ छह माह जीवित रहा, यदि कांग्रेस जिन्ना की बात मान लेती तो देश का भूगोल कुछ और ही होता। इंदिरा गांधी के वोट चोरी करने पर तो इलाहाबाद हाईकोर्ट तक ने मोहर लगाई है। लेकिन कुर्सी की खातिर इंदिरा गांधी ने रातों-रात देश में इमरजेंसी लगा दी। इंदिरा ने ही बांग्लादेश के रूप में बगल में सपोला और पाल लिया। कांग्रेस सत्ता से दूर रहने पर छटपटा रही है। भाजपा सरकार ने गरीब और मध्यम वर्ग के लिए कार्य किए हैं। इससे वेंटीलेटर पर पड़ी कांग्रेस वोट चोर गद्दी छोड़ का नारा लगाकर कार्यकर्ताओं में रूह फूंकने का प्रयास कर रही है।

सुहेल जैदी, लालकबर, रामपुर यूपी

वोट चोरी साबित करें

यह तो सभी जानते हैं कि राहुल गांधी को किसी बात की नॉलेज तो है नहीं आए दिन वह बिना सिर पैर की बात करते रहते हैं। पूरा देश क्या पूरा विश्व जान गया है कि वह पप्पू किस्म के नेता हैं। राहुल गांधी पर ये कहावत कि खियानी बिल्ली खंबा नोचे...फिट बैठती है। क्योंकि राहुल गांधी इस हद तक उतर आए हैं, कभी वोट चोर गद्दी छोड़ का नारा लगाते हैं तो कभी संवैधानिक संस्थाओं पर सवाल उठाते हैं तो कभी जेन-जी को भड़काने की कोशिश करते हैं। राहुल खुद को सिद्ध कीजिये, प्रधानमंत्री मोदी विश्व का नेतृत्व कर रहे हैं, उन पर कीचड़ उछालना ठीक नहीं है। बयानबाजी से कुछ नहीं होता वोट चोरी का सबूत है तो सुप्रीम कोर्ट में देकर सबके मुंह बंद कर दो। वरना देश मान लेगा कि वोट चोर गद्दी छोड़ का नारा खुद गद्दी पाने के लिए लगा रहे हो।

अरुण कुमार वर्मा, प्रदेश उपाध्यक्ष उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार मंडल

अखिलेश पर भड़की माया

लखनऊ की महारैली में मायावती ने जहां अखिलेश यादव पर बड़ा हमला बोला, तो वहीं योगी सरकार का आभार भी जताया। मायावती ने अखिलेश यादव पर कांशीराम स्मारक स्थल की कमाई के पैसे दबाने का आरोप लगाते हुए कहा कि अखिलेश यादव जब सत्ता में रहते हैं तो उन्हें पीडीए की याद नहीं आती। सत्ता से बाहर होते ही पीडीए की माला जपने लगते हैं। राजधानी लखनऊ के कांशीराम स्मारक स्थल पर बसपा की महारैली में मायावती ने योगी सरकार की तारीफ की। विशाल भीड़ को संबोधित करते हुए मायावती ने कहा कि कांशीराम स्थल की देखरेख के लिए वर्तमान भाजपा सरकार की वह आभारी हैं। उन्होंने कहा कि पूर्ववर्ती समाजवादी पार्टी की सरकार ने यहां आने वाले पर्यटकों के टिकटों के पैसों का दबा लिया था। लेकिन योगी सरकार में ऐसा नहीं हुआ। मायावती ने कहा कि समाजवादी पार्टी की सरकार में कांशीराम स्मारक स्थल से होने वाली कमाई को दबा लिया गया था। लेकिन जब उन्होंने वर्तमान सरकार से आग्रह किया कि इस स्थल से होने वाली कमाई का पैसा रखरखाव में खर्च किया जाए तो उन्होंने हमारी बात सुनी स्थल की मरम्मत के लिए हमारी पार्टी योगी आदित्यनाथ सरकार की आभारी हैं। मायावती ने अखिलेश यादव का नाम लेते हुए कहा कि जब वो सत्ता में होते हैं तो कांशीराम स्थल का रखरखाव करने से परहेज करते हैं। सत्ता में रहते हुए इन्हें कभी पीडीए की याद नहीं आती यह समाजवादी पार्टी का दोहरा चरित्र है। मायावती ने कहा कि समाजवादी पार्टी के दोगले रैवये से सावधान रहने की जरूरत है। मायावती ने कांशीराम के सपने का जिक्र करते हुए कहा कि उन्होंने वंचितों और शोषितों के लिए काम किया। उनके योगदान को हमेशा याद किया जाएगा। मायावती ने कहा कि कांशीराम जी की आखिरी इच्छा थी कि सत्ता की चाभी बहुजन समाज के पास होनी चाहिए। उन्होंने बसपा समर्थकों से अपील की कि कांशीराम के सपने को पूरा करने के लिए जोर लगाना होगा। मायावती ने आगे कहा कि पिछले कुछ वर्षों में पार्टी की छवि को धूमिल करने की कोशिश की गई है। सीबीआई के जंजाल में फंसाने का प्रयास हुआ, लेकिन कोर्ट से न्याय मिला। मायावती ने 2014 से पहले केंद्र में रही कांग्रेस सरकार पर भी जमकर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि आज कांग्रेस नेता हाथ में संविधान लेकर नाटकबाजी कर रहे हैं। कांग्रेस सरकार में हमेशा बाबा साहेब अंबेडकर का अपमान किया गया। उन्होंने लोकसभा नहीं जाने दिया गया। उन्हें भारत रत्न तक नहीं दिया। कांशीराम का भी अपमान किया। उनके निधन के बाद कांग्रेस सरकार ने छुट्टी तक घोषित नहीं की थी।

चारधाम यात्रियों में उत्साह

चारधाम यात्रा ने फिर रफ्तार पकड़ ली है। बारिश और बर्फबारी के बावजूद यात्रियों में भारी उत्साह बना हुआ है। केदारनाथ यात्रा ने नया रिकॉर्ड भी बनाया है। 8 अक्टूबर को यहां श्रद्धालुओं की संख्या 16 लाख 52 हजार के पार पहुंच गई, जबकि अभी धाम कपाट बंद होने में 14 दिन का समय शेष बचा है। 2024 में पूरे यात्राकाल में 16 लाख 52 हजार 76 यात्री केदार दर्शन के लिए पहुंचे थे। यानी इस बार पिछले साल का रिकार्ड टूटेगा। अकेले 8 अक्टूबर को ही केदारनाथ धाम में 5614 श्रद्धालुओं ने दर्शन किए। केदार धाम के कपाट 23 अक्टूबर को भैयादूज के अवसर पर बंद होंगे। अभी यात्रा 15 दिन और चलेगी। इस प्रकार यहां यात्रियों की संख्या ने नया रिकॉर्ड बनेगा। बद्रीनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री धाम में भी अब यात्रियों की संख्या बढ़ी है। प्रदेश सरकार की ओर से श्रद्धालुओं के उत्साह को देखते हुए सुरक्षित यात्रा के लिए पुख्ता इंतजाम किए गए हैं। यात्रा मार्ग में सुरक्षा के लिए जवानों की तैनाती की गई है। यात्रा मार्ग पर यातायात सुचारू बना रहे, इसके लिए भूस्खलन की दृष्टि से संवेदनशील स्थानों पर मलबे की सफाई के लिए जेसीबी की व्यवस्था की गई है। इस वर्ष 30 अप्रैल को गंगोत्री एवं यमुनोत्री धाम के कपाट खुलने के साथ ही चारधाम यात्रा का आगाज हो गया था। इसके बाद दो मई को केदारनाथ और चार मई को बदरीनाथ धाम के कपाट आम श्रद्धालुओं के दर्शनार्थ खोले गए थे। मानसून सीजन में अतिवृष्टि, बादल फटने और भूस्खलन की घटनाओं से चारधाम यात्रा प्रभावित हुई। प्रकृति की विनाशलीला में गंगोत्री धाम का महत्वपूर्ण पड़ाव धराली लगभग तबाह हो गया। मार्ग बुरी तरह तहस-नहस हो जाने से गंगोत्री और यमुनोत्री धाम की यात्रा को रोकना पड़ा था। बारिश थमने पर भी यात्रा को बहाल करना बड़ी चुनौती थी, लेकिन शासन-प्रशासन की टीमों ने युद्धस्तर पर कार्य कर आम जनजीवन की बहाली के साथ ही यात्रा मार्गों को सुचारू किया। दोनों धामों की यात्रा भी सुरक्षा इंतजामों के साथ शुरू हो गई। प्रशासन की ओर से यात्रियों को अभी भी एहतियात बरतने की सलाह दी गई है। यात्रियों को बार-बार आगाह किया जा रहा है कि मौसम खराब होने पर यात्रा करने से बचें। यदि यात्रा मार्ग में हैं, तो सुरक्षित स्थान पर शरण लें।

आजम खान का अखिलेश को झटका

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष व पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने कभी सपा में कद्दावर नेता रहे मोहम्मद आजम खान से रामपुर स्थित उनके आवास पर मुलाकात की है। इस मुलाकात के बाद तमाम तरह की चल रही चर्चाओं पर तो विराम लग गया है। लेकिन मोहम्मद आजम खान से उनकी मुलाकात किन परिस्थितियों में हुई? क्या आजम खान और अखिलेश के बीच बनी दूरी इस मुलाकात से खत्म हो गई है? इस मुलाकात के दौरान कोई तीसरा भी शामिल हुआ या नहीं? क्या अखिलेश यादव की मुलाकात आजम खान के परिवार से भी हुई? इन सवालों के जबाव देती एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रही है। जिसमें एक व्यक्ति मोहम्मद आजम खान से सवाल कर रहा है। उसके सवालों के जवाब में मोहम्मद आजम खान का आक्रोश साफ नजर आ रहा है। आजम खान सवाल के जबाव में कह रहे हैं कि अखिलेश यादव मुझसे मिलने आ रहे हैं इसलिए उनके साथ कोई दूसरा व्यक्ति नहीं होगा। सिर्फ मैं और अखिलेश यादव होंगे। एक और सवाल के जबाव में आजम खान कह रहे हैं कि अखिलेश से न तो मेरा बेटा मिलेगा न ही मेरी पत्नी मिलेगी। एक बार भावुक होते हुए मोहम्मद आजम खान ने कहा कि ईद के दिन मेरी पत्नी अकेले बैठी रो रही थी। हमे तो किसी ने फोन तक नहीं किया, हमारी गली का रास्ता लोग भूल गए थे। अब अगर अखिलेश यादव आ रहे हैं तो वो सिर्फ मुझ से ही मिल सकते हैं। मोहम्मद आजम खान की ये बातें अखिलेश यादव को असहज करने वाली हैं। रामपुर में आजम खान के आवास पर करीब डेढ़ घंटे चली मुलाकात के बाद जो खबरे बाहर आई उससे साफ हो गया कि मुलाकात में पुरानी गर्मजोशी का अभाव साफ दिखाई दे रहा था। इसलिए लगभग दो साल बाद हुई यह मुलाकात राजनीतिक गलियारों में चर्चा का विषय बन गई, लेकिन सामने आई तस्वीरों और बयानों से यह संकेत मिलता है कि दोनों नेताओं के बीच भावनात्मक दूरी बरकरार है। अखिलेश ने मुलाकात के दौरान अपनी ओर से हर संभव प्रयास किया, लेकिन आजम खान के चेहरे पर वह उत्साह नहीं था, जो पहले उनकी मुलाकातों में देखा जाता था। इस मुलाकात से एक बात ये भी साफ हुई कि आजम खान मानते हैं कि समाजवादी पार्टी में आज भी सबसे बड़ा मुस्लिम चेहरा वही हैं। मुलाकात के दौरान अखिलेश यादव ने पार्टी एकता और भविष्य की रणनीति पर बातचीत की कोशिश की, लेकिन आजम खान ने इसमें कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई। पार्टी कार्यकर्ताओं के बीच ये भी चर्चा है कि दोनों नेताओं के बीच हाथ मिलाने की औपचारिकता तो निभाई गई, लेकिन न तो चेहरे पर खुशी थी और न ही पुरानी गर्मजोशी। अखिलेश यादव ने आजम खान को सपा के लिए फिर से सक्रिय होने का आह्वान किया, लेकिन आजम खान ने कोई स्पष्ट प्रतिक्रिया न देकर साफ कर दिया कि राजनीति में इस तरह की मुलाकातें सिर्फ स्वार्थ के लिए की जाती हैं। 2017 का चुनाव नजदीक आ रहा है लिहाजा अखिलेश यादव सत्ता का स्वार्थ हासिल करने के लिए ही आजम खान पर डोरे डालने के लिए रामपुर आए थे। आजम खान से मुलाकात करने के बाद सपा मुखिया अखिलेश यादव ने कहा कि मैं उनसे (आजम खान) मिलने आया हूं। आजम खान साहब बहुत पुराने नेता हैं। उनका गहरा साया हमेशा हमारे साथ रहा है। यह बड़ी लड़ाई है और उसमें हम सब मिलकर लड़ेंगे।

संघ का सपना मजबूत राष्ट्र अपना

देवभूमि उत्तराखंड में देश के पहले गांव माणा से लेकर राज्य के अंतिम गांव मझोला तक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) सक्रिय रहा। संघ के सौ साल पूरे होने पर शताब्दी वर्ष का शंखनाद हर तरफ सुनाई दिया। देवभूमि के विभिन्न स्थानों पर पूर्ण गणवेश में घोष की धुन के साथ कदमताल करते स्वयंसेवकों के पथ संचलन ने लोगों का ध्यान खींचा। उत्तराखंड में 1351 बस्तियों, मंडलों में संघ शताब्दी वर्ष के कार्यक्रम आयोजित हुए। कार्यक्रमों में क्षेत्र के सबसे पुराने स्वयंसेवक से लेकर नए स्वयंसेवक तक शामिल हुए। 50,000 से अधिक स्वयंसेवकों ने पूर्ण गणवेश में हिस्सा लिया। जहां पथ संचलन या एकत्रीकरण संभव नहीं हो पाया, वहां संघ के स्वयंसेवकों ने आपदा प्रभावित गांवों में सेवा कार्यों की जिम्मेदारी अपने हाथ में ली। जैसे बासुकेदार, छीनाबगढ़ के चार गांवों, थराली, धराली आदि स्थानों में संघ की सक्रियता सेवा भाव के रूप में दिखाई दी। हल्द्वानी में शताब्दी शंखनाद कार्यक्रम में संघ के सह सरकार्यवाह आलोक जी मुख्य वक्ता रहे। पिथौरागढ़ में 83 साल के पूर्व राज्यपाल और पूर्व मुख्यमंत्री भगत सिंह कोशियारी तरुण स्वयंसेवकों के साथ बारिश में पथ संचलन करते दिखाई दिए। पौड़ी के श्रीनगर में मशकबीन की धुन पर और बद्रीनाथ में घोष के संगीत पर पथ संचलन ने मनमोहक दृश्य प्रस्तुत किया। ये पथ संचलन और एकत्रीकरण के कार्यक्रम 12 अक्टूबर तक चले। इसके बाद संघ हर घर तक राष्ट्रवाद की दस्तक देने पहुंचा। संघ ने पंच कर्तव्य, पर्यावरण, स्वदेशी, कुटुम्ब प्रबोधन, सामाजिक समरसता और नागरिक कर्तव्य का संदेश प्रत्येक नागरिक तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा था। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत प्रचार प्रमुख संजय कुमार का कहना है कि शताब्दी वर्ष के कार्यक्रम में देवभूमि उत्तराखंड का प्रत्येक परिवार जुड़ा है, इसके लिए योजना बनाई गई थी। पथ संचलन और एकत्रीकरण कार्यक्रम उम्मीद से अधिक सफल रहे। जहां आपदा आई, वहां सेवा कार्यक्रम चलाया गया। भविष्य में छोटे-छोटे स्थानों पर हिंदू सम्मेलन आयोजित किए जाएंगे। संघ का उद्देश्य भारत को मजबूत राष्ट्र के रूप में देखना और सामाजिक समरसता को बढ़ावा देना है।

जीत लिया एशिया

बीसीसीआई के सचिव देवजीत सैकिया का कहना है कि भारत का आपरेशन सिंदूर जारी है, भारत-पाकिस्तान के साथ युद्ध में है और हम पाकिस्तान के नेता से ट्रॉफी स्वीकार नहीं कर सकते, इसलिए हमने ट्रॉफी लेने से इनकार कर दिया है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि कोई नेता भारत को मिलने वाली ट्रॉफी और पदक अपने साथ ले जाए।

कृष्ण कुमार चौहान

भारतीय क्रिकेट टीम ने एशिया कप में लगातार तीन बार पाकिस्तान को धूल चटाकर खिताब जीत लिया। जबकि भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने वन-डे क्रिकेट वर्ल्ड कप में पाकिस्तान की महिला टीम को हराकर साबित कर दिया कि पाकिस्तान, भारत के सामने न तो खेल के मैदान में टिक सकता है और न ही जंग के मैदान में। कोलंबो में खेले गए महिला वर्ल्ड कप क्रिकेट मैच के दौरान भारतीय टीम की कप्तान हरमनप्रीत कौर और फातिमा सना ने भी औपचारिक हैंडशेक नहीं किया। इससे पहले एशिया कप में भी भारतीय कप्तान सूर्य कुमार यादव ने पाकिस्तान के कप्तान से हैंडशेक नहीं किया था। एशिया कप के फाइनल मुकाबले में पाकिस्तान को शर्मनाक हार का सामना करना पड़ा है। पाकिस्तान की टीम को फाइनल मुकाबले में शानदार शुरुआत मिली थी। टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करते हुए पाकिस्तान को साहिबजादा फरहान और फखर जमान की जोड़ी ने मजबूत शुरुआत दी थी। दोनों ने पहले विकेट के लिए 9.4 ओवर में पहले विकेट के लिए 84 रन की साझेदारी की। साहिबजादा फरहान 38 गेंद पर 3 छक्के और 5 चौके की मदद से 57 रन बनाकर आउट हुआ। भारत के खिलाफ यह उसका लगातार दूसरा अर्धशतक था। फखर जमान 35 गेंद पर 2 छक्के और 2 चौके की मदद से 46 रन बनाकर आउट हुआ। इसके बाद पाकिस्तान का कोई भी बल्लेबाज भारतीय गेंदबाजों के सामने नहीं टिका और पूरी टीम 19.1 ओवर में 146 रन पर पवेलियन लौट गई। भारतीय क्रिकेट टीम भी एक बार को दवाब में आ गई थी। दवाब भरे मैच में तिलक वर्मा ने पाकिस्तान के खिलाफ कमाल की हाफ सेंचुरी लगा दी। उन्होंने 41 गेंद पर अपना अर्धशतक पूरा किया। पाकिस्तान के खिलाफ भारत को आखिरी 12 गेंद पर 17 रन चाहिए थे। जो तिलक वर्मा और शिवम दुबे की जोड़ी ने पूरे कर भारत को एशिया कप दिलाया। इससे पहले पाकिस्तान के खिलाफ बल्लेबाजी कर रहे संजू सैमसन 21 गेंद में 24 रन बनाकर आउट हो गए थे। क्रीज पर पैर जमा चुके संजू, अबरार अहमद की गेंद को भांप नहीं पाए और उन्होंने आसान सा कैच दे दिया। इस तरह टीम इंडिया को 77 रन के स्कोर पर चौथा झटका लग चुका था। लेकिन पाकिस्तान के खिलाफ 146 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी टीम इंडिया 10 ओवरों में 58 रन बनाने में अपने 3 विकेट गंवा चुकी थी। भारत को अब जीत के लिए 60 गेंद में 89 रन की जरूरत थी। टीम इंडिया के लिए तिलक वर्मा और संजू सैमसन क्रीज पर खड़े थे। टीम इंडिया को अपने खिलाड़ियों पर भरोसा था कि वो इस संकट से बाहर निकलेंगे। जैसी उम्मीद थी वैसा हुआ भी।

कोलंबो में खेले गए महिला वर्ल्ड कप क्रिकेट मैच के दौरान भारतीय टीम की कप्तान हरमनप्रीत कौर और पाकिस्तानी कप्तान फातिमा सना ने भी औपचारिक हैंडशेक नहीं किया। इससे पहले एशिया कप में भारतीय कप्तान सूर्य कुमार यादव ने पाकिस्तान के कप्तान से हैंडशेक नहीं किया था।

मोहसिन नकवी की करतूत

एशिया कप 2025 फाइनल जीतने के बाद सूर्य कुमार यादव की अगुवाई वाली टीम इंडिया ने एसीसी के अध्यक्ष मोहसिन नकवी से ट्रॉफी लेने से इनकार कर दिया। क्योंकि नकवी एशियन क्रिकेट काउंसिल के अध्यक्ष होने के साथ ही वर्तमान में पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) के चेयरमैन और पाकिस्तान सरकार में गृह मंत्री भी हैं। जिसकी वजह से भारतीय टीम ने पहलगाम आतंकी हमले के विरोध स्वरूप उनके हाथ से ट्रॉफी लेने से मना कर दिया था। भारत का मानना है कि पहलगाम आतंकी हमले के पीछे पाकिस्तान का हाथ है। बीसीसीआई के सचिव देवजीत सैकिया का कहना है कि भारत का आपरेशन सिंदूर जारी है, भारत-पाकिस्तान के साथ युद्ध में है और हम पाकिस्तान के नेता से ट्रॉफी स्वीकार नहीं कर सकते जो हमारे देश के साथ युद्ध में है। इसलिए हमने ट्रॉफी लेने से इनकार कर दिया है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि वह नेता भारत को मिलने वाली ट्रॉफी और पदक अपने साथ ले जाए। भारतीय टीम के ट्रॉफी न लेने के फैसले की वजह से मोहसिन नकवी ट्रॉफी और भारतीय खिलाड़ियों के मेडल लेकर पुरस्कार वितरण समारोह से चले गए, जिससे एक विवादास्पद प्रकरण सामने आया। इसे लेकर न सिर्फ भारत में बल्कि पाकिस्तान सहित दुनियाभर में मोहसिन नकवी की आलोचना हुई। लेकिन पाकिस्तानी नेता है इसलिए उसकी सेहत पर आलोचना का कोई असर नहीं हुआ और एशिया कप ट्रॉफी व मेडल लौटाने के लिए शर्त रख दी। नकवी ने कहा कि इसके लिए एक समारोह आयोजित किया जाए जिसमें वो खुद भारतीय खिलाड़ियों को ट्रॉफी देंगे। इससे सवाल उठता है कि भारतीय टीम ने तो फाइनल जीतने के बाद ही मोहसिन नकवी के मुंह पर करारा तमाचा तब जड़ दिया था। खैर देर सबेर मोहसिन नकवी को ट्रॉफी और मेडल लौटाने ही पड़ेंगे। क्योंकि बीसीसीआई अगले महीने होने वाली अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) की बैठक में नकवी के खिलाफ विरोध दर्ज कराएगा। इससे पाकिस्तान के क्रिकेट खेलने पर दो साल का प्रतिबंध भी लग सकता है। मोहसिन नकवी के खिलाफ भी एक्शन हो सकता है। उनके खिलाफ ट्रॉफी चोरी का केस भी दर्ज कराया जा सकता है।

पाकिस्तानी शर्मिन्दा

एशिया कप में पाकिस्तान की शर्मनाक हार और मोहसिन नकवी की हरकतों पर पाकिस्तानी शर्मिन्दा है। पाकिस्तानी अपनी क्रिकेट टीम और खिलाड़ियों को भिगो-भिगो कर जूते मार रहे हैं। पाकिस्तान के डॉन अखबार की हेडलाइन है कि भारतीय क्रिकेट टीम ने एशिया कप में लगातार तीन बार पाकिस्तान को धूल चटाकर खिताब जीता है। भारतीय टीम 9वीं बार एशिया कप चैंपियन बनी है। ऐसे में पूरा पाकिस्तान एक बार फिर अपनी टीम से हताश और निराश है। निराशा भी ऐसी कि पाकिस्तान के लोग सोशल मीडिया पर पाकिस्तान क्रिकेट टीम को जूते मार रहे हैं, मजाकिया अंदाज में ही सही। खैर ये पहली बार हुआ है जब पाकिस्तानियों ने अपने फुंके हुए और कबाड़ी से खरीदे टीवी नहीं तोड़े। सोशल मीडिया पर पाकिस्तानी कह रहे हैं कि पाकिस्तानी टीम का जूतो से अंडों से और टमाटरों से स्वागत किया जाए। एक वीडियो में तो ये भी कहा जा रहा है कि पूरी टीम को तोप से बांध कर उड़ा दिया जाए। एक फैन तो इतना निराश हो गया कि उसने लिखा, पाकिस्तान टीम के बारे में एक बात जो मुझे पसंद है वह यह है कि वे मुझे निराश करने से कभी नहीं चूकते। एक यूजर ने लिखा कि भारतीय टीम को देखकर ही पाकिस्तानी टीम पैर कांपने लगते हैं।

महिला टीम ने भी पाकिस्तान को धोया

भारत ने महिला वर्ल्ड कप में पाकिस्तान को बुरी तरह हराकर अपनी दूसरी जीत हासिल कर ली है। उसने इससे पहले ओपनिंग मुकाबले में श्रीलंका को परास्त किया था। पाकिस्तान पर एक महीने में भारत की ये लगातार चौथी जीत है। कोलंबो के आर प्रेमदासा क्रिकेट स्टेडियम में हुए मैच में भारतीय महिला टीम ने पाकिस्तान को 88 रन से हरा दिया। भारतीय महिला टीम ने पाकिस्तानी महिला टीम को लगातार 12वीं बार हराया है। पहले बल्लेबाजी करते हुए भारतीय महिला टीम ने 248 का विशाल स्कोर बनाया था। जिसका पीछा करने उतरी पाकिस्तानी टीम 43 ओवर में 159 पर सिमट गई। यानी वो निर्धारित ओवर भी नहीं खेल पाई। पाकिस्तानी महिला क्रिकेट टीम ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी चुनी थी। भारत की तरफ से क्रांति गौड़ और दीप्ति शर्मा ने बेहतरीन गेंदबाजी की। क्रांति ने 10 ओवर में मात्र 20 रन देकर 3 विकेट झटके। वहीं दीप्ति शर्मा ने 9 ओवर में 45 रन देकर 3 विकेट झटके। स्नेह राणा ने 2 विकेट लिए। क्रांति गौड़ को प्लेयर ऑफ द मैच घोषित किया गया? इस मैच में भारतीय महिला टीम की जीत की उम्मीद पहले से थी लेकिन इसके बाद एक बार फिर सबका ध्यान दोनों टीमों के कप्तानों के हैंडशेक वाली रणनीति पर गया। एशिया कप की तरह महिला वर्ल्ड कप मैच के दौरान मैदान के अंदर और बाहर दोनों जगह तनाव रहा। क्योंकि मैच के पहले और बाद का पारंपरिक हैंडशेक गायब था। टॉस के समय भारतीय टीम की कप्तान हरमनप्रीत कौर और फातिमा सना ने भी औपचारिक हैंडशेक नहीं किया। इसके बाद पाकिस्तान की टीम के आउट होने पर दोनों टीमों के खिलाड़ी सीधे अपने ड्रेसिंग रूम की ओर चले गए। बीसीसीआई सचिव देवजीत सैकिया पहले ही कह चुके थे कि इस बात की कोई गारंटी नहीं होगी कि महिला वर्ल्ड कप मैच में टॉस के समय और मैच के बाद दोनों टीमों के खिलाड़ी हाथ मिलाएंगे। लिहाजा पाकिस्तानी कप्तान, टॉस प्रेजेंटर से बात करने के बाद सीधे डगआउट की तरफ चली गई। वहीं भारतीय कप्तान हरमनप्रीत कौर ने भी फातिमा सना के साथ हाथ मिलाने में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई। एशिया कप 2025 में भी भारत और पाकिस्तान के बीच 3 मैच खेले गए। तीनों मैचों में सूर्य कुमार यादव ने टॉस के समय पाकिस्तानी कप्तान सलमान आगा से हाथ नहीं मिलाया था। वहीं मैच के बाद भी टीम इंडिया ने पाक प्लेयर्स को पूरी तरह नजरंदाज किया था। हार के बाद पाकिस्तानी टीम की कप्तान फातिमा सना ने कहा, 'हमारी टीम ने पावरप्ले और डेथ ओवर्स में बहुत रन लुटाए, जिसमें अतिरिक्त रन भी शामिल थे। हमें भारत को 200 रन से कम पर रोकना चाहिए था। हमने शीर्ष पांच में स्पेशलिस्ट बल्लेबाजों को उतारा, लेकिन उन्हें बेहतर प्रदर्शन करना चाहिए था।' फातिमा ने जोर दिया कि उनकी टीम को लंबी साझेदारियां और परिस्थितियों के अनुसार ढलना जरूरी है।

एशिया कप में भारत के सामने तीन बार पाकिस्तान क्रिकेट टीम का आमना-सामना हुआ और लगातार तीन बार टीम इंडिया ने उसे धूल चटाई। इसके बाद 5 अक्टूबर 2025 को महिला वर्ल्ड कप में एक बार फिर वहीं हाल पाकिस्तान का हुआ। महिला क्रिकेट टीम ने पाकिस्तान को 88 रनों से करारी शिकस्त दी। इस मैच के बाद कांग्रेस नेता अभिषेक मनु सिंघवी ने पाकिस्तान को सलाह देते हुए कहा कि पाकिस्तानी छाती पीटना बंद करे और क्रिकेट पर ध्यान दें। कांग्रेस नेता ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पाकिस्तान से चुटकी लेते हुए पोस्ट किया, कि महिलाओं का विश्व कप मैच देखकर एहसास हुआ, चाहे वो ऑपरेशन सिंदूर हो, एशिया कप हो या महिलाओं का विश्व कप 2025। पाकिस्तान एक ही कला में माहिर है, मैदान के बाहर ड्रामा और जब बात मैदान पर खेलने की आती है तो नतीजा हर बार एक ही आता है। उन्होंने आगे लिखा कि जब भारत खेलता है तो वो युद्ध की बात करते हैं, जब भारत जीतता है तो बहाने बनाते हैं। इसलिए काम की बात यही है कि छाती कम पीटें, क्रिकेट पर ज्यादा ध्यान दें। वैसे एक कांग्रेसी से पाकिस्तान की हार पर इस तरह की प्रतिक्रिया की उम्मीद कम ही रहती है।

- **पाकिस्तान के डॉन अखबार की हेडलाइन है कि भारतीय क्रिकेट टीम ने एशिया कप में लगातार तीन बार पाकिस्तान को धूल चटाकर खिताब जीता है, भारतीय टीम 9वीं बार एशिया कप चैंपियन बनी है, ऐसे में पूरा पाकिस्तान एक बार फिर अपनी टीम से हताश और निराश है।**
- **मैच के बाद कांग्रेस नेता अभिषेक मनु सिंघवी ने पाकिस्तान पर तंज कसा कि पाकिस्तानी छाती पीटना बंद करे और क्रिकेट पर ध्यान दें, कांग्रेस नेता ने सोशल मीडिया पर चुटकी लेते हुए लिखा, महिलाओं का विश्व कप मैच देखकर एहसास हुआ, चाहे वो ऑपरेशन सिंदूर हो, एशिया कप हो या महिलाओं का विश्व कप नतीजा हर बार एक ही आता है।**

मोदी शून्य से शिखर तक

1978 में मोदी को आरएसएस का संभाग प्रचारक नियुक्त किया गया, सूरत और वडोदरा में गतिविधियों की देखरेख की जिम्मेदारी दी गई, 1979 में वह आपातकाल के दौरान आरएसएस की भूमिका पर शोध और लेखन के लिए दिल्ली आ गए, 1985 में उन्हें आरएसएस से भाजपा में शामिल किया गया।

शालिनी चौहान
नई दिल्ली

1950 में वडनगर गुजरात में बेहद साधारण परिवार में जन्मे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 17 सितंबर 2025 को 75 बरस के हो गए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने जन्मदिन के मौके पर 17 सितंबर को स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार योजना की शुरुआत कर देश की महिलाओं, बच्चों व किशोरियों को बड़ा गिफ्ट दिया है। यानी पूरे देश में महिलाओं, किशोरियों और बच्चों के स्वास्थ्य और पोषण सेवाओं को मजबूती देने के लिए ये ऐतिहासिक स्कीम लॉन्च की गई है। यह अभियान महिला और बाल स्वास्थ्य के क्षेत्र में अब तक का सबसे बड़ा कार्यक्रम होगा। इस कार्यक्रम को स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय और महिला एवं बाल विकास मंत्रालय संयुक्त रूप से संचालित करेंगे। ये अभियान 17 सितंबर से शुरू होकर 2 अक्टूबर तक चला। इस अभियान के तहत पूरे देश में एक लाख से अधिक स्वास्थ्य शिविर लगाए गए। सभी सरकारी हेल्थ संस्थानों में ये शिविर 2 अक्टूबर तक रोज लगे। इन शिविरों में महिलाओं के लिए स्त्री रोग विशेषज्ञ (गायनेकॉलोजिस्ट), बच्चों के लिए चाइल्ड स्पेशलिस्ट के साथ दांतों के डॉक्टर भी रहे। जिन बच्चों का टीकाकरण पूरा नहीं हो पाया, उन्हें इन शिविरों के जरिए पूरा किया गया। किशोरियों में एनीमिया की स्क्रीनिंग के साथ उसका ट्रीटमेंट किया गया। साथ ही मानसिक समस्याओं का समाधान भी किया गया। प्रधानमंत्री देश की आधी आबादी के लिए योजनाएं लाते रहते हैं। अपने जन्म दिन पर स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार योजना इसका ताजा उदहारण है।

17 वर्ष की आयु में संघ से जुड़े

नरेंद्र मोदी का बचपन से ही संघ की तरफ झुकाव था। गुजरात में आरएसएस का मजबूत आधार भी था। वो 1967 में 17 साल की उम्र में अहमदाबाद पहुंचे और उसी साल उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सदस्यता ले ली। इसके बाद 1974 में वे नव निर्माण आंदोलन में शामिल हुए। इस तरह सक्रिय राजनीति में आने से पहले मोदी कई वर्षों तक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक रहे। नरेंद्र मोदी का एक सामान्य आरएसएस कार्यकर्ता से लेकर प्रधानमंत्री बनने तक का सफर कतई आसान नहीं रहा। तमाम कठिनाइयों और चुनौतियों से पार करते हुए उन्होंने भारतीय और विश्व राजनीति में अपना लोहा मनवाया। पीएम मोदी का यह सफर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के खुद के विकास की कहानी का भी प्रतीक कहा जाएगा। क्योंकि हाशिए से निकलकर पार्टी अब निर्विवाद प्रभुत्व की स्थिति में आ गई है। मोदी की पहली महत्वपूर्ण राजनीतिक सक्रियता 1971 में देखने को मिली, जब उन्होंने बांग्लादेश मुक्ति युद्ध के समर्थन में जनसंघ के विरोध प्रदर्शन में भाग लिया, तब उन्हें कुछ समय के लिए हिरासत में भी रखा गया था। 1971 के भारत-पाक युद्ध के बाद, वह पूर्णकालिक आरएसएस प्रचारक बन गए। यहीं से आरएसएस और भाजपा दोनों के भीतर उनके उदय का मार्ग प्रशस्त हुआ। 1975 में आपातकाल के दौरान नरेंद्र मोदी ने आरएसएस के संदेश को सक्रिय रूप से फैलाया और अलग-अलग भेष धारण कर गिरफ्तारी से बचने में कामयाब रहे। 1978 में उन्हें आरएसएस का संभाग प्रचारक नियुक्त किया गया, सूरत और वडोदरा में गतिविधियों की देखरेख की जिम्मेदारी उन पर थी। 1979 में वह आपातकाल के दौरान आरएसएस की भूमिका पर शोध और लेखन के लिए दिल्ली आ गए। 1985 में उन्हें आरएसएस से भाजपा में शामिल किया गया।

1984 में सिर्फ दो लोकसभा सीटों से जीत हासिल करने से लेकर पार्टी के उत्थान में मोदी एक अटल स्तंभ के रूप में स्थापित हुए, उन्होंने अक्सर पार्टी कार्यकर्ताओं को सक्रिय करने और अपने राजनीतिक संदेशों को तेज करने के लिए पर्दे के पीछे से काम किया।

भाजपा में मोदी का उदय

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी उस समय भाजपा में शामिल किए थे जब पार्टी राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाने के लिए संघर्ष कर रही थी। एक युवा कार्यकर्ता के रूप में नरेंद्र मोदी गुजरात और उससे बाहर भाजपा के विस्तार के लिए अभियानों के आयोजन में शामिल हुए। नरेंद्र मोदी ने 1987 में अपनी पहचान तब बनाई जब उन्होंने अहमदाबाद नगर निगम चुनाव में भाजपा के अभियान को व्यवस्थित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसके परिणामस्वरूप पार्टी को निर्णायक जीत मिली और उन्हें भाजपा की गुजरात इकाई के संगठनात्मक सचिव के रूप में नियुक्त किया गया। 1990 में लालकृष्ण आडवाणी के राम जन्मभूमि आंदोलन और 1991-92 में मुरली मनोहर जोशी की एकता यात्रा के दौरान वरिष्ठ नेताओं के लिए लॉजिस्टिक्स संभालने से, मोदी ने एक ऐसे रणनीतिकार के रूप में प्रतिष्ठा अर्जित की, जो विचारधारा को व्यावहारिक राजनीतिक मशीनरी के साथ मिश्रित कर सकती थी। 90 के दशक की शुरुआत भाजपा के लिए भी परिवर्तनकारी थी। 1984 में सिर्फ दो लोकसभा सीटों से जीत हासिल करने से लेकर पार्टी के उत्थान में मोदी एक अटल स्तंभ के रूप में स्थापित हुए। उन्होंने अक्सर पार्टी कार्यकर्ताओं को सक्रिय करने और अपने राजनीतिक संदेशों को तेज करने के लिए पर्दे के पीछे से काम किया।

गुजरात में चुनौती का सामना

नरेंद्र मोदी को बड़ा राजनीतिक अवसर 7 अक्टूबर 2001 को मिला जब 51 साल की उम्र में गुजरात के मुख्यमंत्री के तौर पर नरेंद्र मोदी ने शपथ ली। वह राज्य के 14वें मुख्यमंत्री बने। केशुभाई पटेल को मुख्यमंत्री पद से हटाने के बाद मोदी को गुजरात की कमान ऐसे समय सौंपी गई जब गुजरात भूकंप से पीड़ित था। भूकंप में 20 हजार से ज्यादा लोग मारे गए थे। मोदी के गुजरात की सत्ता संभालने के लगभग पांच महीने बाद ही गोधरा रेल हादसा हुआ जिसमें 50 से ज्यादा हिंदू कारसेवक मारे गए। इसके ठीक बाद फरवरी 2002 में ही गुजरात में मुसलमानों के खिलाफ दंगे भड़क उठे। इन दंगों में सरकार के मुताबिक एक हजार से ज्यादा और ब्रिटिश उच्चायोग की एक स्वतंत्र समिति के अनुसार लगभग 2000 लोग मारे गए थे। इनमें ज्यादातर मुसलमान थे। जब तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने गुजरात का दौर किया तो उन्होंनें उन्हें राजधर्म निभाने की सलाह दी जिसे वाजपेयी की नाराजगी के संकेत के रूप में देखा गया था। लेकिन तत्कालीन उप प्रधानमंत्री लालकृष्ण अडवाणी ने मोदी की पैरवी की। इसके बाद मोदी ने जल्द ही गुजरात को भूकंप और दंगों की पीड़ा से उबारा और नए सिरे से गुजरात को खड़ा किया। इसके बाद वह 12 साल तक गुजरात के मुख्यमंत्री बने रहे जो एक रिकॉर्ड है। उन्होंने 2002, 2007 और 2012 में हुए गुजरात विधानसभा चुनाव में बहुमत के साथ भाजपा को लगातार जीत दिलाई। 2001 की यह नियुक्ति एक निर्वाचित सरकार के नेता के रूप में उनके निरंतर कार्यकाल की शुरुआत थी। मुख्यमंत्री रहते हुए मोदी पर आरोप लगते रहे लेकिन राज्य की राजनीति पर उनकी पकड़ मजबूत होती रही। मोदी के खिलाफ दंगों से संबंधित कोई आरोप किसी कोर्ट में सिद्ध नहीं हुआ। खुद मोदी ने कभी दंगों को लेकर न तो कोई अफसोस जताया है और न ही किसी तरह की माफी मांगी। महत्वपूर्ण तो ये है कि दंगों के चंद महीनों के बाद ही दिसंबर 2002 के गुजरात विधानसभा चुनाव में मोदी ने जीत दर्ज की। उन्हें सबसे ज्यादा फायदा उन इलाकों में हुआ जो दंगों से सबसे ज्यादा प्रभावित हुए थे।

1971 के भारत-पाक युद्ध के बाद, वह पूर्णकालिक संघ प्रचारक बने, यहीं से संघ और भाजपा दोनों के भीतर उनके उदय का मार्ग प्रशस्त हुआ, 1975 में आपातकाल के दौरान नरेंद्र मोदी ने संघ के संदेश फैलाए और अलग-अलग भेष धारण कर गिरफ्तारी से बचने में कामयाब रहे।

संन्यास लेना चाहते थे मोदी

12 वर्षो तक गुजरात में अपना जादू बिखेरने वाले नरेंद्र मोदी कभी साधु बनना चाहते थे। इतना ही नहीं एक समय था जब उन्होंने चाय की दुकान भी लगाई। मोदी के जीवन में इसी तरह के कई उतार-चढ़ाव आए। बचपन में नरेंद्र मोदी को साधु संतों को देखना बहुत अच्छा लगता था। मोदी खुद संन्यासी बनना चाहते थे, संन्यासी बनने के लिए नरेंद्र मोदी स्कूल की पढ़ाई के बाद घर से भाग गए और पश्चिम बंगाल के रामकृष्ण आश्रम सहित कई स्थानों पर घूमते रहे। आखिर में हिमालय पहुंच गए और कई महीनों तक साधुओं के साथ घूमते रहे। लेकिन भाग्य में संन्यासी बनना नहीं था बल्कि राजयोग था लिहाजा 2013 में मोदी कांग्रेस-नीत यूपीए को चुनौती देने के लिए एक मजबूत चेहरा बन गए। इस तरह मोदी भाजपा की तलाश के बीच राष्ट्रीय पसंद के रूप में उभरे। उनके संगठनात्मक अनुभव, वक्तत्व कौशल और गुजरात में सफलता ने उन्हें एक बढ़त दी और 2014 के आम चुनाव में भाजपा को एक अभूतपूर्व जीत दिलाई, जिससे भाजपा तीन दशकों में पहली एकल-बहुमत वाली सरकार बनाने में सफल हुई। नरेंद्र मोदी के एक विशाल राजनीतिक हस्ती के रूप में स्थापित होने के साथ ही गठबंधन-युग की अनिश्चितता में भी निर्णायक बदलाव आया और भारतीय राजनीति में एक नई दिशा स्थापित हुई।

भाजपा में युवाओं को अवसर

बात 2013 की है जब नरेंद्र मोदी को प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार बनाया जा रहा था, तब पार्टी के कई बड़े नेता इस फैसले से असहज थे। लालकृष्ण आडवाणी और मुरली मनोहर जोशी जैसे नेता मोदी के खिलाफ थे। मोदी को पता था कि अगर इन्हें सरकार में जगह दी गई तो उनकी स्वतंत्रता प्रभावित होगी। तभी एक तर्क गढ़ा गया कि 75 साल की उम्र के बाद नेता सक्रिय राजनीति से हट जाएंगे। हालांकि भाजपा की ओर से इस नियम का कभी भी औपचारिक रूप से एलान नहीं किया गया। यह पार्टी संविधान में भी दर्ज नहीं है। इसके बाद 2014 में लालकृष्ण आडवाणी, मुरली मनोहर जोशी तथा दूसरे वरिष्ठ नेताओं को एक मार्गदर्शक मंडल का हिस्सा बना दिया गया। इस मार्गदर्शक मंडल की आज तक एक भी बैठक नहीं हुई। हालांकि इस नियम को औपचारिक रूप से सबसे पहले आनंदीबेन पटेल ने स्वीकार किया और आनंदीबेन ने 2016 में गुजरात की मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया था। तब उन्होंने कहा था, कि मैं भी नवंबर 2016 में 75 साल की होने जा रही हूं। आनंदीबेन ने कहा था मैं हमेशा से ही भाजपा की विचारधारा, सिद्धांत और अनुशासन से प्रेरित रही हूं। इस बयान ने उस समय यह संदेश दिया कि पार्टी में उम्र की एक सीमा तय हो गई है। हालांकि इसके बाद हमेशा इसका पालन नहीं हुआ। भाजपा में यह जरूर मान्यता रही है कि नेतृत्व को समय-समय पर युवाओं को सौंपना चाहिए। लेकिन यह नियम कब लागू हो और कब नहीं, यह पूरी तरह राजनीतिक परिस्थितियों पर निर्भर करता रहा है। लिहाजा लालकृष्ण आडवाणी और मुरली मनोहर जोशी को 2014 में पीछे कर नया चेहरा सामने लाना था इसलिए उन्हें 75 साल का बताकर मार्गदर्शक मंडल का हिस्सा बनाया गया था। इसलिए राष्ट्रीय राजनीतिक परिदृश्य में मोदी के उदय को भाजपा की अपनी यात्रा से अलग करके नहीं देखा जा सकता। अपने शुरुआती वर्षों में एक ऐसी पार्टी के रूप में संघर्ष करने से लेकर भारतीय राजनीति में प्रमुख शक्ति बनने तक, मोदी इस विकास के एक गवाह और वास्तुकार दोनों हैं। 2014 के बाद पीएम मोदी को अब सिर्फ एक भाजपा नेता के रूप में नहीं देखा जाता। वह पार्टी की केंद्रीय शक्ति और पार्टी ने उनके व्यक्तित्व के इर्द-गिर्द अपनी पहचान और कहानी को फिर से गढ़ा है। डिजिटल अभियानों से लेकर हाई-वोल्टेज रैलियों तक, वह भाजपा के सबसे शक्तिशाली वोट हासिल करने वाले नेता बन गए। हालांकि 2014 की ऐतिहासिक जीत से पहले भी नरेंद्र मोदी राज्य स्तर पर भाजपा के सबसे भरोसेमंद वोट-गेटर थे।

देवभूमि या आपदा भूमि

हर मानसून कई गांव बहा ले जाता है, हर बरसात बहुत से घर उजाड़ देती है और हर बारिश लाशों की नई गिनती कराती है, इसके बावजूद सरकारें खामोश हैं, योजनाएं गूंगी हैं और जनता बेबस है, जिसे हम विकास कहते हैं, दरअसल वह विनाश का दूसरा नाम बन चुका है।

डॉ. हरीश चंद्र अंडोला
दून यूनिवर्सिटी

उत्तराखंड जिसे देवभूमि कहा जाता था, अब आपदाओं की भूमि बन गया है। बारिश, भूस्खलन, बादल फटना, नदी का रुख बदल जाना अब ये पहाड़ियों की जिंदगी में आम हो गया है। हर मानसून कई गांव बहा ले जाता है, हर बरसात बहुत से घर उजाड़ देती है और हर बारिश एक लाशों की गिनती कराती है। इसके बावजूद सरकारें खामौश हैं। योजनाएं गूंगी हैं और जनता बेबस है। जिसे हम विकास कहते हैं, दरअसल वह विनाश का दूसरा नाम बन चुका है। पहाड़ों पर सड़कें बनाने के लिए डायनामाइट से विस्फोट किए जाते हैं। पेड़ों की अंधाधुंध कटाई होती है। पूरी की पूरी पर्वत श्रृंखलाएं काट दी जाती हैं, ताकि टनल बने, चौड़ी सड़कें बनें, जल परियोजनाएं बनें। लेकिन ये सब किस कीमत पर? प्रकृति की शांति और संतुलन को तोड़कर हम क्या हासिल कर रहे हैं? जो सड़कें सुरक्षा के लिए होनी चाहिए थीं, वे अब मौत की राह बन गई हैं। जो टनल सुगमता का वादा करती थीं, वे अब आपदा का द्वार बन चुकी हैं। पर्यटन के नाम पर उत्तराखंड में जिस तरह संसाधनों का दोहन किया जा रहा है, वह अभूतपूर्व है। सैकड़ों गाड़ियां, हजारों पर्यटक, प्लास्टिक का पहाड़, ट्रैफिक की कतारें यह सब मिलकर उत्तराखंड के पर्यावरण पर ऐसा बोझ डाल रहे हैं, जिसे अब पहाड़ सह नहीं कर पा रहे। कभी यहां गर्मियों में पंखा नहीं चलता था, अब अक्टूबर में भी लोग एसी चला रहे हैं। यह सिर्फ जलवायु परिवर्तन नहीं बल्कि प्रकृति की चेतावनी है कि हमने अपनी सीमाएं पार कर दी हैं। बाहरी लोग भारी संख्या में आकर जमीनें खरीद रहे हैं, घर बना रहे हैं, कॉलोनियां उगा रहे हैं। स्थानीय लोगों की जमीनें औने-पौने दामों में छीनी जा रही हैं। संस्कृति खतरे में है, भाषा गुम हो रही है, और पहचान मिट रही है। उत्तराखंड अब उत्तर हाउसिंग प्रोजेक्ट बन चुका है। जो भूमि कभी साधु-संतों की थी, अब रियल एस्टेट माफिया की गिरफ्त में है। और सरकारें बस तमाशबीन बनी बैठी हैं।

सारी चेतावनियां बेअसर

दिल्ली से उत्तराखंड तक एक्सप्रेसवे बनने वाले है। इस पर कोई गर्व महसूस कर सकता है, लेकिन जो लोग उत्तराखंड की आत्मा को जानते हैं, उन्हें पता है कि

यह एक्सप्रेसवे उस दरवाजे की आखिरी कड़ी होगी जो शांति की ओर जाता था। यह मार्ग विकास के नाम पर उत्तराखंड की आत्महत्या की कहानी बन जाएगा। अभी तो वीकेंड में ही दिल्ली से हजारों लोग आते हैं, सोचिए जब यह एक्सप्रेसवे पूरा होगा और हर दिन लाखों की भीड़ पहाड़ों पर चढ़ेगी, तब क्या बचेगा यहां? विनाश का यह सिलसिला नियमों की कमी से नहीं, नियत की कमी से है। पर्यावरणीय रिपोर्टें बस एक औपचारिकता बन चुकी हैं। परियोजनाओं को मंजूरी देने वाले अधिकारी जानते हैं कि उनका हर हस्ताक्षर एक पेड़ को मार रहा है, एक चट्टान को कमजोर कर रहा है, एक गांव को डुबो रहा है। लेकिन धन, पद और प्रभाव के आगे ये सारी चेतावनियां बेअसर हो जाती हैं। इसलिए तो आज स्थिति यह है कि हिमालय जैसा अचल पर्वत भी थरथराने लगा है। यह केवल प्राकृतिक संकट नहीं बल्कि यह हमारी नैतिक विफलता है। हमने न सिर्फ पेड़ काटे, बल्कि भरोसे भी काट डाले। नदियों की धारा मोड़ी, तो साथ में भविष्य भी मोड़ दिया। हम भूल गए कि हिमालय सिर्फ बर्फ से नहीं बना, वह आस्था से बना है, संतुलन से बना है और इस संतुलन को तोड़ने की हमारी कोशिश अब हर बरसात में लाशों की गिनती बढ़ाकर जवाब दे रही है। समाधान कठिन है, पर असंभव नहीं। हमें तत्काल प्रभाव से नई निर्माण परियोजनाओं पर रोक लगानी होगी। पहाड़ों की सहनशीलता को विज्ञान से नहीं, विवेक से समझना होगा। पर्यटन को सीमित करना होगा उसके लिए जैसी अवधारणाओं को गंभीरता से लागू करना होगा।पर्यटकों की संख्या तय हो, वाहनों की सीमा तय हो और सबसे जरूरी स्थानीय लोगों की भागीदारी के बिना कोई भी निर्णय न लिया जाए। जमीन की खरीद- फरोख्त पर रोक लगानी होगी। यह जरूरी है कि कोई बाहरी व्यक्ति पहाड़ में जमीन खरीदने से पहले उस भूमि की संस्कृति और पारिस्थितिकी को समझे। नहीं तो वह सिर्फ एक नया खतरा लेकर आएगा। शिक्षा के स्तर पर हमें जलवायु संकट और पर्यावरणीय जागरूकता को स्कूलों से जोड़ना होगा। बच्चों को यह सिखाना होगा कि पेड़ सिर्फ ऑक्सीजन नहीं देते, वे पहाड़ों को थामे रहते हैं। नदी सिर्फ पानी नहीं देती, वह जीवन देती है। चट्टानें सिर्फ पत्थर नहीं होतीं, वे इतिहास, भूगोल और संस्कृति की नींव होती हैं। अगर अब भी हम नहीं रुके, तो अगली बार यह हादसा किसी और गांव में नहीं, आपके दरवाजे पर दस्तक देगा।

पर्यटन गतिविधियां पर्यावरण-संवेदनशील, सीमित और विनियमित हों, ताकि पारिस्थितिक संतुलन बना रहे, उत्तराखंड में लगातार बढ़ती प्राकृतिक आपदाएं केवल पर्यावरणीय घटनाएं नहीं हैं, बल्कि ये हमारे विकास मॉडल, नीति-निर्धारण एवं प्रकृति के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण पर गहरे प्रश्नचिह्न खड़ा करती हैं।

एक चेतना है उत्तराखंड

दिल्ली, देहरादून, हल्द्वानी, मसूरी कोई सुरक्षित नहीं बचेगा। उत्तराखंड सिर्फ एक राज्य नहीं, वह एक चेतना है। उसे बचाना केवल स्थानीय लोगों की जिम्मेदारी नहीं, यह पूरे देश की जिम्मेदारी है। सरकारों को अब सिर्फ घोषणाएं नहीं, कठोर और साहसी निर्णय लेने होंगे। वरना वह दिन दूर नहीं जब उत्तराखंड का हर गांव एक धराली व थराली बन जाएगा और फिर हम सिर्फ शोक सभा कर पाएंगे, समाधान नहीं। आज समय है संकल्प लेने का। समय है यह स्वीकार करने का कि हमने गलती की है और समय है उसे सुधरने का। अगर अभी नहीं चेते, तो हम इतिहास में दर्ज हो जाएंगे उन लोगों के रूप में, जिन्होंने देवभूमि को विनाश भूमि बना दिया। साल 2013 की केदारनाथ आपदा के बाद सुप्रीम कोर्ट की ओर से गठित विशेषज्ञ समिति ने बताया था कि उच्च हिमालयी घाटियां भूस्खलन और मलबा प्रवाह प्रभुत्व वाली अचानक बाढ़ों की चपेट में आ सकती हैं। इस समिति ने सिफारिश की थी कि उच्च हिमालयी घाटियों में भगीरथी पर्यावरणस संवेदनशील क्षेत्र (बीईएसजेड) जैसे पर्यावरण-संवेदनशील क्षेत्रों का चिह्नांकन किया जाना चाहिए। इससे उच्च हिमालयी घाटियों में मानवजनित हस्तक्षेप को न्यूनतम किया जा सकेगा। समिति ने सुझाव दिया था कि नदियों को मानवजनित अतिक्रमण और जल बिजली बैराज से मुक्त रखा जाना चाहिए ताकि बाढ़ के दौरान नदी बिना किसी रुकावट के बह सके। समिति का कहना है कि इन सिफारिशों को गंभीरता से नहीं लिया गया। इसके बजायनिर्माण सामग्री, लकड़ी या जमीन का अत्यधिक दोहन किया गया। उत्तराखंड में लगातार बढ़ती प्राकृतिक आपदाएं केवल पर्यावरणीय घटनाएं नहीं हैं, अपितु वे हमारे विकास मॉडल, नीति-

- **विनाश का यह क्रम नियमों की कमी से नहीं, नियत की कमी से है, पर्यावरणीय रिपोर्टें बस एक औपचारिकता हैं, परियोजनाओं को मंजूरी देने वाले अफसर जानते हैं कि उनका हर हस्ताक्षर एक पेड़ को मार रहा है, एक चट्टान को कमजोर कर रहा है, एक गांव को डुबो रहा है।**
- **2013 की केदारनाथ आपदा के बाद सुप्रीम कोर्ट की ओर से गठित विशेषज्ञ समिति ने रिपोर्ट में कहा था कि नदियों को मानवजनित अतिक्रमण और जल बिजली बैराज से मुक्त रखा जाना चाहिए ताकि बाढ़ के दौरान नदी बिना किसी रुकावट के बह सके।**

निर्धारण एवं प्रकृति के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण पर गहरे प्रश्नचिह्न खड़ा करती हैं। भूस्खलन, बाढ़, बादल फटना, वनाग्नि और भू-धंसाव जैसी घटनाएं न केवल राज्य की पारिस्थितिकी को, बल्कि उसकी सामाजिक और आर्थिक संरचना को भी गंभीर रूप से प्रभावित कर रही हैं। यह स्पष्ट है कि जलवायु परिवर्तन तथा मानवीय हस्तक्षेप की संयुक्त परिणति ने उत्तराखंड को आपदा-प्रवणता की चरम सीमा तक पहुंचा दिया है।ऐसी परिस्थिति में मात्र तात्कालिक राहत उपाय पर्याप्त नहीं हैं। आवश्यकता है एक दीर्घकालिक, पर्यावरण-संवेदी और समुदाय-आधारित नीति दृष्टिकोण की, जो विकास को प्रकृति के साथ सहअस्तित्व के रूप में पुनर्परिभाषित करे। इस दृष्टिकोण में सतत विकास, पारंपरिक ज्ञान, स्थानीय भागीदारी और वैज्ञानिक विवेक का संतुलन अनिवार्य है। आपदा-पूर्व चेतावनी प्रणालियों को सशक्त किया जाना चाहिए। इसके अंतर्गत स्थानीय स्तर पर प्रशिक्षित स्वयंसेवकों की टीमों का गठन, त्वरित प्रतिक्रिया तंत्र का विकास तथा आपदा प्रबंधन और जलवायु शिक्षा को स्कूली पाठ्यक्रमों में समावेशित किया जाना आवश्यक है, जिससे भावी पीढ़ी को इन खतरों के प्रति सजग एवं सक्षम बनाया जा सके। पर्वतीय पर्यटन को इको-टूरिज्म में परिवर्तित करने की दिशा में गंभीर प्रयास होने चाहिए। पर्यटन गतिविधियां पर्यावरण-संवेदनशील, सीमित और विनियमित हों, ताकि पारिस्थितिक संतुलन बना रहे। क्योंकि उत्तराखंड में लगातार बढ़ती प्राकृतिक आपदाएं केवल पर्यावरणीय घटनाएं नहीं हैं, बल्कि ये हमारे विकास मॉडल, नीति-निर्धारण एवं प्रकृति के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण पर गहरे प्रश्नचिह्न खड़ा करती हैं।

वैज्ञानिकों का मत

वैज्ञानिकों ने कहा है कि भगीरथी पर्यावरण-संवेदनशील क्षेत्र (बीईएसजेड) अधिसूचना को लागू किया जाए। हिमालय की अमूल्य जैव विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण को सुनिश्चित करने के लिए पर्यावरण-संवेदनशील क्षेत्र का विस्तार लद्दाख से अरुणाचल प्रदेश तक पूरे ऊपरी हिमालयी घाटियों तक किया जाना चाहिए। इससे जलवायु परिवर्तन के कारण हिमालय पर मंडराने वाले आपदा जोखिम को कम करने में मदद मिलेगी। फिलहाल आपदा का दंश झेल रहे उत्तराखंड की नजरें अब इससे उबरने के लिए केंद्रीय मदद पर टिक गई हैं। राज्य की ओर से 5700 करोड़ रुपये की क्षतिपूर्ति का प्रस्ताव केंद्र को भेजा गया है। उत्तराखंड की जैव विविधता, सांस्कृतिक धरोहर और संवेदनशील पारिस्थितिकी की रक्षा के लिए यह अत्यावश्यक है कि हम अब सजग होकर ठोस कार्रवाई करें। अतः राज्य सरकार, वैज्ञानिक संस्थान, गैर-सरकारी संगठन और स्थानीय समुदायों को मिलकर एक साझा, समावेशी और पर्यावरणोन्मुख दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। जब तक विकास को 'प्रकृति-विरोधी लाभ' के बजाय 'प्रकृति-संगत जीवन' के रूप में पुनर्परिभाषित नहीं किया जाएगा, तब तक उत्तराखंड की आपदाएं निरंतर तीव्र होती रहेंगी। यही समय है जब हमें चेतने, सीखने और ठोस बदलाव लाने की दिशा में कदम बढ़ाने होंगे। अन्यथा वह समय दूर नहीं जब देवभूमि की पहचान केवल त्रासदियों और आपदाओं की भूमि तक सीमित होकर रह जाएगी। हमें अब प्रकृति के अनुरूप विकास की राह अपनाने का सार्थक संकल्प लेना होगा, इसमें उत्तराखंड की दीर्घकालिक सुरक्षा और समृद्धि निहित है।

गांधी का ख्वाब पूरा करेगा 'गांधी'

कांग्रेस वोट चोरी के मुद्दे को सुप्रीम कोर्ट नहीं ले जाना चाहती क्योंकि राहुल गांधी एंड कंपनी कोर्ट में झूठ को सच साबित करने में नाकाम रहेगी, इसलिए सड़क पर हंगामा मचा रहे हैं, ये नकारात्मक राजनीति न तो राहुल गांधी का भविष्य बना सकती है और न ही कांग्रेस को आगे बढ़ा सकती है, इसलिए हम कह रहे हैं कि जो काम असली गांधी नहीं कर पाए उस काम को राहुल गांधी ने करने की ठान ली है?

भारत भूषण
आईएफटीईएम

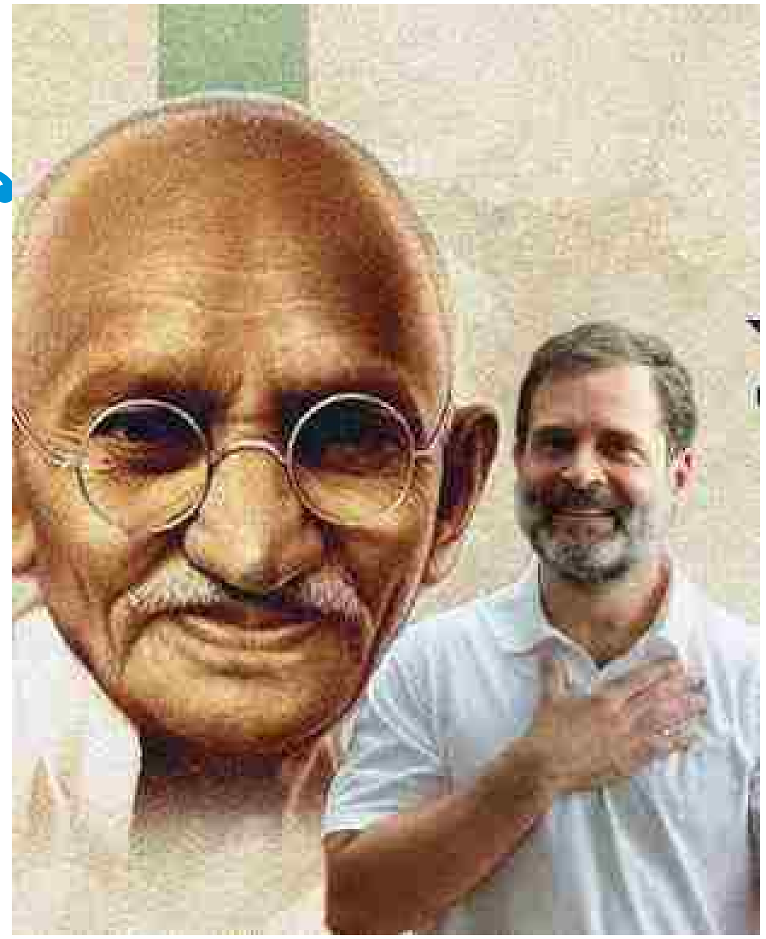

जो काम असली महात्मा गांधी नहीं कर पाए वो नकली 'गांधी' यानी राहुल गांधी करने के लिए आतुर हैं। राहुल गांधी शायद महात्मा गांधी की अंतिम इच्छा पूरा करना चाहते हैं जिसमें बापू ने कहा था कि 'देश को आजाद कराने का कांग्रेस का लक्ष्य पूरा हो चुका है और अब इसे भंग कर दिया जाए। कांग्रेस की जगह 'लोक सेवा संघ' बनाया जाए। संघ का चरित्र राजनीतिक न होकर, समाज सेवा जैसा हो।' यानी महात्मा गांधी की अंतिम इच्छा थी कि कांग्रेस को राजनीतिक रूप से खत्म कर दिया जाए, किंतु राहुल गांधी के परनाना जवाहर लाल नेहरू को बापू का ये सुझाव पसंद नहीं आया। नेहरू खेमे के अन्य नेता भी इससे सहमत नहीं थे। महात्मा गांधी के आदर्शों की कांग्रेस होने का ढोल तो आज तक पीटा जाता है, लेकिन गांधी की इच्छा को कुचने का काम तो कांग्रेस ने ही किया है। ऐसे में सवाल ये कि महात्मा गांधी की इच्छा का नेहरू ने विरोध किस स्वार्थ के लिए किया था? क्या नेहरू को डर था कि नया संगठन बनाने से उनकी पकड़ कांग्रेस के सदस्यों पर नहीं रहेगी? जबकि कांग्रेस में उनका गुट मजबूत स्थिति में था। इस तरह के उल्लेख लेखक और पत्रकार पीयूष बबेले की किताब 'नेहरू मिथक और सत्य' में दर्ज है। वैसे गांधी कांग्रेस को क्यों विसर्जित या भंग करना चाहते थे? इस सवाल के जवाब के पीछे कांग्रेस का देश को आजाद कराने का लक्ष्य पूरा होना तो था ही साथ ही कांग्रेस का गठन किसी भारतीय ने नहीं बल्कि एक रिटायर अंग्रेज आईसीएस अधिकारी स्कॉटलैंड निवासी ऐलन ओक्टोवियन ह्यूम ने 28 दिसंबर, 1885 को किया था। तब इसमें सामाजिक कार्याकर्ता, पत्रकार और वकीलों का दल भी शामिल था। 140 साल की बूढ़ी हो चुकि कांग्रेस को अब राहुल गांधी समाप्त कर क्या बापू के सपनों को पूरा करना चाहते हैं? क्योंकि जब से राहुल गांधी का कांग्रेस में हस्तक्षेप बढ़ा है तभी से कांग्रेस लगातार हासिये पर जा रही है। 2013 के बाद तीन लोकसभा चुनावों सहित कांग्रेस 90 चुनाव हार चुकी है। जिस कांग्रेस की कभी लगभग सभी राज्यों में सरकारें होती थी उस कांग्रेस की सरकार तीन राज्यों में सिमट गई हैं। कांग्रेस की जो हालत आज है वो देश की आजादी के बाद भी रही थी, इसलिए जवाहर लाल नेहरू ने कहा था कि नेता जमीन से दूर हो रहे हैं। अब कम ही लोग जमीन पर उतरते हैं। कांग्रेस के लोग सुस्त हो गए हैं। जनता के साथ संपर्क खत्म हो रहा है। हमें जनता को हल्के में नहीं लेना चाहिए। ऐसा करना हमेशा ही घातक होता है। पुरानी पूंजी हमेशा नहीं बनी रहेगी। बिना कमाए संचित पूंजी पर जीना अंततः हमें दिवालिएपन की कगार पर ले जाएगा। नेहरू ने तो तब किसी तरह हालात सुधार लिए थे, लेकिन राहुल गांधी कांग्रेस को लगभग दिवालिया कर चुके हैं। आज कांग्रेस के पास संगठन नाम की कोई चीज ही नहीं बची है। कांग्रेसी एसी में बैठकर सोशल मीडिया पर राजनीति कर रहे हैं। सिर्फ तुष्टीकरण के सहारे कांग्रेस थोड़ी बहुत बची है, लेकिन मोदी के रहते एक दिन ये तुष्टीकरण का खेल भी खत्म हो सकता है।

- **राहुल गांधी का जब से कांग्रेस में हस्तक्षेप बढ़ा है तभी से कांग्रेस लगातार हासिये पर जा रही है, 2013 के बाद 3 लोकसभा चुनावों सहित कांग्रेस 90 चुनाव हार चुकी है, जिस कांग्रेस की कभी लगभग सभी राज्यों में सरकारें होती थी उस कांग्रेस की सरकार तीन राज्यों में सिमट गई हैं।**
- **राहुल गांधी की नकारात्मक राजनीति पर आचार्य प्रमोद कृष्ण ने कहा कि राहुल गांधी अक्सर 'जोकर' जैसी बातें करते हैं, इसलिए अब उन्हें कोई गंभीरता से नहीं लेता, फिर भी वह रोज कोई न कोई ऐसा बयान देते हैं जिससे भारत का ही नहीं उनकी खुद की पार्टी का सिर शर्म से झुक जाता है।**

नेहरू के वक्त भी भटकी थी कांग्रेस

महात्मा गांधी की हत्या के बाद 13 मार्च 1948 को सेवाग्राम में एक सम्मेलन में बोलते हुए नेहरू ने कहा था कि आज सवाल ये है कि कांग्रेस का क्या हो? नेहरू कहते हैं कि महात्मा गांधी ने 'लोक सेवा संघ' की योजना बनाई थी। लेकिन बापू ने जो सुझाव दिया उसके अनुरूप तो 'लोक सेवा संघ' पॉलिटिकल संस्था नहीं रहती, इस संगठन का काम सिर्फ समाज सेवा तक रहता। इस हिसाब से तो दूसरी पॉलिटिकल संस्था बनानी पड़ेगी। कांग्रेस राजनीति से हटेगी तो कोई और राजनीतिक पार्टी बनानी पड़ेगी। खाली नाम बदलने से लोग बेकाबू हो सकते हैं इसलिए ये विचार किया गया कि कांग्रेस को राजनीतिक रूप से खत्म ना किया जाए। कांग्रेस पुरानी पार्टी है और इसका पार्टी के सदस्यों पर जो नियंत्रण है वो नई पार्टी नहीं कर सकती। जब जवाहर लाल नेहरू कांग्रेस को राजनीतिक दल बनाए रखने की बात कर रहे थे तो वो समय-समय पर कांग्रेस की कमियों पर भी बात कर रहे थे। नेहरू जानते थे कि कांग्रेस रास्ते से भटक रही है। पुराने कांग्रेसी आज भी समझ रहे हैं कि जब से राहुल गांधी के हाथ में कांग्रेस की बागडोर आई है कांग्रेस रास्ते से भटक गई है। इसलिए कांग्रेस के वरिष्ठ नेता कांग्रेस से किनारा करते जा रहे हैं। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता लगभग कांग्रेस छोड़ चुके हैं, जो कांग्रेस में हैं वो घुटन महसूस कर रहे हैं। राहुल गांधी की दादी इंदिरा गांधी और पिता राजीव गांधी के साथ काम कर चुके कांग्रेसी नेता राहुल के अधीन काम करने में असहज हैं।

जोकर जैसी बात करते हैं राहुल

संभल में कल्कि धाम के पीठाधीश्वर आचार्य प्रमोद कृष्णम कभी कांग्रेस में सक्रिय रहते थे, वो कांग्रेस के टिकट पर दो लोकसभा चुनाव भी लड़ चुके हैं, प्रियंका गांधी के सलाहकार रहे हैं, लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जनहित के कार्यों की सराहना करने व पीएम को कल्किधाम बुलाने के कारण उन्हें कांग्रेस से निष्कासित कर दिया गया। अब वो कांग्रेस से आजाद हैं और कांग्रेस के खिलाफ मुखर होकर बोलते हैं। हाल ही में उन्होंने राहुल गांधी की नकारात्मक राजनीति पर कहा कि राहुल गांधी अक्सर 'जोकर' जैसी बातें करते हैं, इसलिए अब उन्हें कोई गंभीरता से नहीं लेता। फिर भी वह रोज कोई न कोई ऐसा बयान देते हैं जिससे भारत का सिर शर्म से झुक जाता है। आचार्य ने कहा कि वह देश को अपमानित करने के साथ ही तोड़ने की बात करते हैं। आचार्य प्रमोद कृष्णम ने सरकार से अपील की कि वो राहुल के बयानों का संज्ञान ले क्योंकि राहुल गांधी संवैधानिक संस्थाओं को बदनाम कर रहे हैं। आचार्य ने कहा कि बिहार के चुनाव में जनता राहुल गांधी को खारिज कर देगी। क्योंकि राहुल गांधी कभी वोट चोर, गद्दी छोड़, चौकीदार जैसे नारे देते हैं, लेकिन उनके सभी नारे प्रभावहीन हो चुके हैं। राहुल गांधी ने कभी देश हित की बात नहीं की, उनके मुंह से कभी किसी ने नहीं सुना कि उनकी सरकार बनी तो अवैध घुसपैठियों, रोहिंग्या और बांग्लादेशियों को देश से बाहर किया जाएगा। बल्कि कांग्रेस समर्थक घुसपैठियों की पैरवी करते हैं। जब कहते हैं कि वो देश का लोकतंत्र और संविधान का बचाना चाहते हैं, तब लोगों को 1975 के आपातकाल याद ताजा हो जाती है।

नकारात्मक राजनीति

केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी की राजनीति को नकारात्मक और निराशावादी बताते हुए कहा था कि अब देश की जनता उन्हें गंभीरता से नहीं लेती है। वाणिज्य मंत्री गोयल का यह बयान उस ट्वीट की प्रतिक्रिया में आया था, जिसमें राहुल गांधी ने आरोप लगाया था कि मोदी सरकार अमेरिका की टैरिफ के आगे झुक जाएगी। इस पर पीयूष गोयल ने कहा था कि भारत सरकार किसी डेडलाइन के दबाव में नहीं, बल्कि देश के हित में निर्णय लेती है। मोदी सरकार किसी डेडलाइन के अनुसार नहीं चलती, बल्कि राष्ट्रीय हित में काम करती है। यूपीए सरकार के दौरान भारत को वैश्विक मंचों पर बातचीत करने के लिए भीख मांगनी पड़ती थी, गिड़गिड़ाना पड़ता था, जबकि अब भारत मजबूती और आत्मविश्वास के साथ वैश्विक साझेदारों से बातचीत करता है। इसलिए राहुल गांधी और उनके सहयोगी भारत की जनता का विश्वास खो चुके हैं, देश की जनता उन्हें बार-बार चुनावों में खारिज कर रही है। विपक्ष के पास देश के विकास के लिए कोई सकारात्मक एजेंडा नहीं हैं। विपक्ष विकास की राजनीति की बजाय आलोचना, भड़काने और भ्रम फैलाने की राजनीति कर रहा है। लिहाजा झूठ बहुत दिनों तक जिन्दा नहीं रहता एक न एक हिन सच सामने आ जाता है।

उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी की राजनीति को नकारात्मक और निराशावादी बताते हुए कहा था कि अब देश की जनता उन्हें गंभीरता से नहीं लेती है, वाणिज्य मंत्री का यह बयान उस ट्वीट की प्रतिक्रिया में आया था, जिसमें राहुल गांधी ने आरोप लगाया था कि मोदी सरकार अमेरिका की टैरिफ के आगे झुक जाएगी।

विवेक खो रहे राहुल गांधी

राहुल गांधी की जैसे-जैसे उम्र बढ़ रही है वो विवेक खाते जा रहे हैं, देश की जनता को क्या सुनना या देखना पसंद है, जनता किन बातों से प्रभावित होती है, मोदी के खिलाफ जहर उगलने से जनता पर क्या असर हो रहा है ये सब राहुल गांधी की समझ से कोसो दूर है। वो नकारात्मक राजनीति कर रहे हैं इसलिए आजकल वो हिंसक भी हो रहे हैं, वोट चोरी के एटम बम और हाइड्रोजन बम फोड़ने की बात कर रहे हैं, बमबाजी से क्या वो जनता को डराना चाहते हैं? लेकिन जब वो एटम बम लेकर आए और चुनाव आयोग पर वोट चोरी का आरोप लगाया तो उनकी ही पार्टी के नेताओं ने एटम बम की हवा निकाल दी, महाराष्ट्र में जिस सीएसडीएस के डाटा के आधार पर वोट चोरी का आरोप लगाया था उसी सीएसडीएस के प्रमुख संजय कुमार ने सार्वजनिक रूप से माफी मांगी और बताया कि उनकी टीम से डाटा समझने में गलती हुई है। संजय कुमार ने राहुल गांधी को भी सलाह दी थी कि वो भी चूक के लिए माफी मांग सकते हैं। कर्नाटक की कांग्रेस सरकार के मंत्री केएन राजन्ना ने राहुल गांधी के वोट चोरी के नारे के बाद यह बयान देकर विवाद खड़ा कर दिया था कि मतदाता सूची में अनियमितताएं तो कांग्रेस के सत्ता में रहने के दौरान हुई थीं। इसके लिए उन्हें सहकारिता मंत्री के पद से हाथ धोना पड़ा। इस तरह राहुल गांधी का वोट चोरी का एटम बम फुस्स हो गया था। अब वो हाइड्रोजन बम लाने की बात कर रहे हैं। राहुल गांधी भले ही कितने बम फोड़ ले, कितने ही सरकार और संवैधानिक संस्थाओं पर सितम कर लें, लेकिन वो अब एक राजनेता के तौर पर अपनी विश्वसनीयता पूरी तरह खो चुके हैं। वो झूठा नेरेटिव गढ़ कर अपने मन को बहला सकते हैं, अपने आसपास रहने वाले कांग्रेसियों को मुद्दा थमा सकते हैं, लेकिन उनकी विदेशी स्क्रिप्ट पर देश की जनता कितना भरोसा करती है ये चुनाव के नतीजे बता देते हैं। जिससे कभी-कभी लगता है कि कांग्रेस को खत्म करने का काम जो असली महात्मा गांधी नहीं कर पाए वो नकली गांधी यानी राहुल गांधी पूरा करना चाहते हैं? क्योंकि जिस रास्ते पर राहुल गांधी जा रहे हैं, जिस तरह की नकारात्मक और देश विरोधी राजनीति वो कर रहे हैं, जिस तरह से राहुल गांधी पाकिस्तान के पोस्ट ब्वाय बने रहते हैं जिस तरह से वो देश विरोधी ताकतों की कठपुतली बने हैं, जिस तरह से वो आतंकियों के समर्थन में खड़े रहते हैं, जिस तरह से वोट चोरी का आरोप लगा रहे हैं, उन पर शायद देश की जनता को यकीन करना मुश्किल इसलिए भी हो रहा है क्योंकि छोटे छोटे मुद्दों पर सुप्रीम कोर्ट जाने वाली कांग्रेस वोट चोरी के मुद्दे को सुप्रीम कोर्ट नहीं ले जा रही? साफ है कि राहुल गांधी एंड कंपनी कोर्ट में झूठ को सच साबित करने में नाकाम रहेगी, इसलिए सड़क पर हंगामा मचा रहे हैं। इस तरह की नकारात्मक राजनीति न तो राहुल गांधी का भविष्य बना सकती है और न ही कांग्रेस को आगे बढ़ा सकती है। इसलिए हम कह रहे हैं कि जो काम असली गांधी नहीं कर पाए उस काम को राहुल गांधी ने करने की ठान ली है? ●

कुमाऊं में छिपा स्वर्ग पेओरा

ब्रिटिशकालीन बंगलों, प्राचीन मंदिरों, कुमाऊंनी संस्कृति के साथ पेओरा गांव ऐसा डेस्टीनेशन है जहां समय मानो थम सा जाता है, ब्रिटिशकालीन बंगले ऊंची छतों, लकड़ी के बीम, विशाल बरामदे के साथ पुराने जमाने का आकर्षण बिखेरते हैं, इन बंगलों में ठहरना ब्रिटिश व कुमाऊंनी संस्कृति के मिश्रण का अनुभव कराता है।

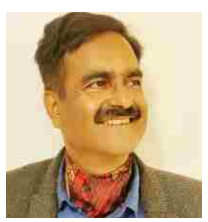

कमल कपूर
वरिष्ठ पत्रकार

उत्तराखंड के प्रसिद्ध डेस्टिनेशंस के बारे में तो सभी जानते होंगे, लेकिन क्या पेओरा गांव का नाम भी सुना या देखा है? यह एक छोटा-सा लेकिन खूबसूरत हिल स्टेशन है जो फ्रूट बाउल ऑफ उत्तराखंड के नाम से मशहूर है। वैसे उत्तराखंड को देवभूमि यानी देवों की भूमि कहा जाता है, जहां कई देवी-देवताओं के प्राचीन देवालय हैं। उत्तराखंड अपनी बेजोड़ खूबसूरती और डेस्टिनेशन के लिए भी मशहूर है। उत्तराखंड के पॉप्युलर डेस्टिनेशंस ऑली, चोपटा, चकराता, मसूरी, नैनीताल, कौसानी, रानीखेत, चारधाम और देहरादून जैसी जगहों के बारे में तो सभी जानते हैं, लेकिन उत्तराखंड में कई ऐसी बेजोड़ स्थान हैं, जिनके बारे में बेहद कम लोग जानते होंगे। ऐसी ही एक जगह है पेओरा गांव। यह गांव नैनीताल और अल्मोड़ा के बीच पड़ता है। पेओरा गांव हिमालय की खूबसूरत चोटियों और घने जंगलों से घिरा हुआ है। यहां की खूबसूरत छटा और छिपते हुए सूरज का नजारा अलग ही होता है। देवदार, काफल, ओक और बुरांश के पेड़ों से घिरा पेओरा किसी जन्नत से कम नहीं लगता। जिस तरह रामगढ़ को कुमाऊं के फलों का कटोरा कहा जाता है, उसी तरह पेओरा को भी उत्तराखंड के फलों का कटोरा कहा जाता है। यहां सेब से लेकर आलूबुखारा, खुबानी, कीवी और आड़ू काफी मात्रा में होते हैं। इसके अलावा पेओरा अपने हर्बल प्रॉडक्ट्स के लिए भी मशहूर है। हालांकि यहां कोई लोकल मार्केट नहीं है और न ही कोई शॉपिंग स्पेस है, लेकिन हर्बल प्रॉडक्ट्स को यहां की लोकल हर्बल फैक्टरी से खरीद सकते हैं।

ब्रिटिशकालीन बंगले

कुमाऊं की मनोरम पहाड़ियों में बसा पेओरा गांव आधुनिक सभ्यता से लगभग अछूता है। 6,000 फीट की ऊंचाई पर स्थित, पेओरा गांव शहरी जीवन की भागदौड़ से दूर अपने प्राचीन प्राकृतिक दृश्यों, समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और शांत वातावरण के लिए भी जाना जाता है। यह गांव उन लोगों के लिए एक आदर्श स्थान है जो एकांत या अपनों के साथ अच्छा समय बिताना चाहते हैं। उत्तराखंड के ज्यादातर पर्यटन स्थलों के विपरीत, पेओरा गांव पूरी तरह शांत और प्रामाणिक ग्रामीण अनुभव देता है। बर्फ से ढकी हिमालय की चोटियों, हरी-भरी घाटियों और प्रचुर वनस्पतियों और जीवों से घिरा यह गांव प्रकृति प्रेमियों और फोटोग्राफरों के लिए किसी स्वर्ग से कम नहीं है। अपने ब्रिटिशकालीन बंगलों, प्राचीन मंदिरों और साधारण कुमाऊंनी संस्कृति के साथ पेओरा गांव एक ऐसा डेस्टीनेशन है जहां समय मानो थम सा जाता है।

पेओरा वो गांव है जहां हर व्यक्ति एक-दूसरे को जानता है और तो और जो भाग्यशाली होते हैं, वे कम भाग्यशाली लोगों का भाग्य बनाने में मदद करते हैं, आज के जमाने में भी, वचनों का पालन किया जाता है, एक दूसरे को सम्मान दिया जाता है और अपसी विश्वास बनाए रखा जाता है।

ब्रिटिशकालीन बंगलों की ऊंची छतों, लकड़ी के बीमों और विशाल बरामदों के साथ पुराने जमाने का आकर्षण देखने को मिलता हैं। इनमें से कई घरों को अच्छी तरह से संरक्षित किया गया है। इन ऐतिहासिक बंगलों में से किसी एक में ठहरना ब्रिटिश और कुमाऊंनी संस्कृति के मिश्रण का अनुभव कराता है। यह गांव इस तरह के अपने अद्भुत प्राकृतिक नजारों से भरपूर है जो साल भर पर्यटकों को मंत्रमुग्ध करता है। यह गांव राजसी बर्फीले पहाड़ों से घिरा हुआ है, जहां से नंदा देवी और त्रिशूल चोटियों के नजारे साफ दिखाई देते हैं, जो इसे ट्रैकर्स और फोटोग्राफरों के लिए एक स्वप्निल गंतव्य बनाते हैं। हरी-भरी घाटियां सेब, आड़ू और खुबानी जैसे फलों से लदे बाग गांव के आकर्षण में चार चांद लगाते हैं। ये फल पर्यटकों के लिए एक स्वादिष्ट व्यंजन भी हैं। मशरूम के शौकीनों को भी इस प्राकृतिक क्षेत्र में प्रचुर मात्रा में मशरूम मिलेगा। लेकिन मशरूम के लिए आपको विशेषज्ञ की मदद लेनी होगी, क्योंकि पिओरा में जहरीले मशरूम भी उगते हैं। पिओरा जाएं तो एक टोकरी साथ ले जाएं। जितने चाहें उतने सेब, नाशपाती, आड़ू, प्लम इकट्ठा कर लें। पेड़ों से सीधे ताजे और रसीले फल तोड़ना कितना मजेदार होगा यह आप सोच सकते हैं। वास्तव में फलों का चयन करने से आप खुद को प्रकृति के करीब महसूस करेंगे।

वन्यजीवों का घर

यह गांव विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों और वन्यजीवों का घर भी है, जो इसे प्रकृति की सैर और पक्षी दर्शन के लिए आदर्श बनाते हैं। यहां जानवर स्थानीय लोगों के साथ सौहार्दपूर्ण ढंग से रहते हैं। तेंदुओं और जंगली सूअरों से लेकर हिरण और सियार जैसे वन्यजीवों से इस गांव का जंगल भरा पड़ा है। पक्षी प्रेमी हरे-भरे पेड़ों के बीच लाल जंगली मुर्गे, हिमालयन बुलबुल, कालिज तीतर और अन्य पंख वाले जीवों को देखने का आनंद ले सकते हैं, रंग-बिरंगे बैठे पक्षियों से लेकर सुंदर उड़ने वाले पक्षियों तक को निहार सकते हैं। ठंडी, ताजी पहाड़ी हवा और प्रकृति की मधुर ध्वनियां एक ऐसा शांत वातावरण का एहसास करती हैं जो सेलानियों को पूरी तरह से सुकून देती है। चाहे आप किसी भी औपनिवेशिक बंगले की खिड़की पर बैठे हों, चाय की चुस्की ले रहे हों या सेब के बागों में टहल रहे हों, पेओरा गांव की शांति और हरी-भरी वादियां सैलानियों को बाहरी दुनिया को भूलने पर मजबूर कर देती है।

पेओरा की सांस्कृतिक विरासत

पेओरा गांव सिर्फ मनमोहक व प्राकृतिक दृश्यों के लिए ही नहीं, बल्कि पारंपरिक कुमाऊंनी संस्कृति का भी केंद्र है। पेओरा गांव की सबसे खास विशेषताओं में से एक इसकी पारंपरिक वास्तुकला है, जो इस क्षेत्र के इतिहास और संस्कृति का प्रमाण है। पेओरा के कुमाऊंनी घर अपनी अनूठी लकड़ी की कारीगरी के लिए जाने जाते हैं, जिनमें बारीक नक्काशीदार दरवाजे, खिड़कियां और फर्नीचर हैं जो पीढ़ियों से चले आ रहे हैं। इनकी तिरछी छतें सर्दियों में भारी बर्फबारी को झेलने के लिए डिजाइन की गई हैं, जो स्थानीय वास्तुकला का एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करती हैं और प्रकृति के तत्वों का सामना करने के तैयार रहती हैं। ये घर इस क्षेत्र की स्थापत्य शैली के आदर्श उदाहरण हैं, जिसमें सौंदर्य और कार्यक्षमता का अद्भुत संगम है। इस क्षेत्र में इस गांव का अटूट सांस्कृतिक महत्व भी है। स्थानीय किंवदंतियों के अनुसार पेओरा गांव को भगवान विष्णु के कूर्म अवतार का जन्मस्थान माना जाता है। इस गांव का ऐतिहासिक और आध्यात्मिक महत्व इसके मंदिरों और तीर्थस्थलों में झलकता है, जो यहां के शांतिपूर्ण वातावरण में रहस्यवाद का एक तत्व जोड़ता है। गांव में घूमते हुए सैलानी खुद को इस क्षेत्र के समृद्ध इतिहास और शिल्पकला में डूब जाते हैं। गांव का देहाती आकर्षण, इसके सादे लेकिन खूबसूरती से गढ़े हुए घर, कुमाऊं की जीवनशैली की झलक पेश करते हैं। स्थानीय लोग अपने गर्मजोशी भरे आतिथ्य के लिए जाने जाते हैं। आगंतुकों का खुले दिल से स्वागत करते हैं, अपनी संस्कृति और इतिहास की कहानियां साझा करने के लिए उत्सुक रहते हैं। पेओरा वो गांव है जहां हर व्यक्ति एक-दूसरे को जानता है और तो और जो भाग्यशाली होते हैं, वे कम भाग्यशाली लोगों का भाग्य बनाने में मदद करते हैं। आज के जमाने में भी, वचनों का पालन किया जाता है। सम्मान दिया जाता है और विश्वास बनाए रखा जाता है। जब जिंदगी और भी उलझ जाए, तो अपना सामान पैक कीजिए और ऐसी जगहों पर जाकर चिंतन कीजिए, यह देखने की कोशिश कीजिए कि चीजें कितनी सरल हैं और जिंदगी कितनी सरलता से जी जा सकती है। कैसे किसी की मदद कर खुद को भाग्यशाली बनाया जा सकता है।

- **पिओरा जाएं तो एक टोकरी साथ ले जाएं और जितने चाहें उतने सेब, नाशपाती, आड़ू, प्लम इकट्ठा कर लें, पेड़ों से सीधे ताजे और रसीले फल तोड़ना कितना मजेदार होगा यह आप सोच सकते हैं वास्तव में फलों का चयन करने से आप खुद को प्रकृति के करीब महसूस करेंगे।**
- **पेओरा गांव की सबसे खास विशेषताओं में से एक इसकी पारंपरिक वास्तुकला है, जो इस क्षेत्र के इतिहास और संस्कृति का प्रमाण है, पेओरा के कुमाऊंनी घर अपनी अनूठी लकड़ी की कारीगरी के लिए जाने जाते हैं, जिनमें बारीक नक्काशीदार दरवाजे, खिड़कियां और फर्नीचर हैं जो पीढ़ियों से चले आ रहे हैं।**
- **पेओरा में सेब से लेकर आलूबुखारा, खुबानी, कीवी और आड़ू काफी मात्रा में होते हैं, पेओरा अपने हर्बल प्रॉडक्ट्स के लिए भी मशहूर है, हालांकि यहां कोई लोकल मार्केट नहीं है और न ही कोई शॉपिंग स्पेस है, लेकिन हर्बल प्रॉडक्ट्स को यहां की लोकल हर्बल फैक्टरी से खरीद सकते हैं।**

पेओरा गांव की जीवनशैली शांतिपूर्ण और सरल व साधारण है, जो प्रकृति से गहराई से जुड़ी हुई है। यहां लोग पारंपरिक कुमाऊंनी संस्कृति का पालन करते हैं, जिनमें मिट्टी के चूल्हों पर खाना पकाना और पारंपरिक हस्तशिल्प शामिल है।

घाटियों में ट्रैकिंग

साहसिक गतिविधियों के शौकीनों के लिए पेओरा और उसके आसपास कई ट्रैकिंग ट्रेल्स हैं जो हिमालय तथा आसपास की घाटियों के शानदार नजारे पेश करते हैं। पेओरा के जंगल और वन्य क्षेत्र ट्रैकिंग के रोमांच के लिए एकदम सही हैं। किसी भी स्थानीय व्यक्ति से पसंदीदा रास्तों के बारे में पूछें और उन पर चलें। ट्रैकिंग के दौरान आप राजसी शिवालिक पर्वतमाला के शानदार नजारों का आनंद ले पाएंगे और पक्षियों की चहचहाहट पर भी ध्यान दे पाएंगे, जो धूप वाले महीनों में विशेष रूप से मधुर होते हैं। पेओरा से मुक्तेश्वर तक के 20 किलोमीटर के रास्ते पर ट्रैकिंग का विचार कर सकते हैं, जो हरे-भरे जंगलों से होकर गुजरता है या 31 किलोमीटर दूर शीतलाखेत के स्याही देवी मंदिर तक ट्रैकिंग कर सकते हैं। जो लोग धीमी गति से जीवन जीना पसंद करते हैं, वे जंगल और गांव में आराम से टहलने का विकल्प चुन सकते हैं। चाहे आप नौसिखिए हों या अनुभवी ट्रैकिंग करने वाले, हर स्तर के लिए उपयुक्त ट्रेल्स मौजूद हैं। कुल मिलाकर पेओरा गांव एक ऐसा अनुभव देता है जो ताजगी और आनंद दोनों से भरपूर है। हरियाली और बर्फ से ढकी चोटियां मनमोहक पृष्ठभूमि प्रदान करता हैं। जो लुभावने दृश्यों के साथ ट्रैकिंग के अनुभव को और भी बेहतर बनाता हैं। पेओरा से 20 किलोमीटर दूर स्थित मुक्तेश्वर हिल स्टेशन आंखों को सुकून देने वाला है। प्राकृतिक सुंदरता और मनमोहक प्राकृतिक परिवेश से भरपूर, यह गांव 2,171 मीटर की ऊंचाई पर है और इसका नाम प्रसिद्ध मुक्तेश्वर मंदिर के नाम पर पड़ा है। इस शहर से विशाल नंदा देवी शिखर और हिमालय के अन्य पर्वतों के मनोरम दृश्य दिखाई देते हैं। इस जगह की सैर आकर्षण प्रकृति का आनंद लेने, देवदार के जंगलों से गुजरती हवा की आवाज सुनने, पक्षी दर्शन और ध्यान गतिविधियों में निहित है। पेओरा से 21 किलोमीटर दूर अल्मोड़ा अपने कई प्रसिद्ध मंदिरों जैसे कसार देवी, नंदा देवी, डोली दाना, श्यायी देवी, खकमारा, अष्ट भैरव, जाखनदेवी आदि के कारण आध्यात्मिक स्थल है। यह भी चीड़ व देवदार के घने जंगलों से घिरा हुआ है, जिसके किनारे कोशी और सुयाल नदियां बहती हैं। अल्मोड़ा, कुमाऊं साम्राज्य पर शासन करने वाले चंद राजाओं की राजधानी थी। इसे उत्तराखंड के कुमाऊं क्षेत्र का सांस्कृतिक केंद्र भी माना जाता है।

संघ के 100 साल

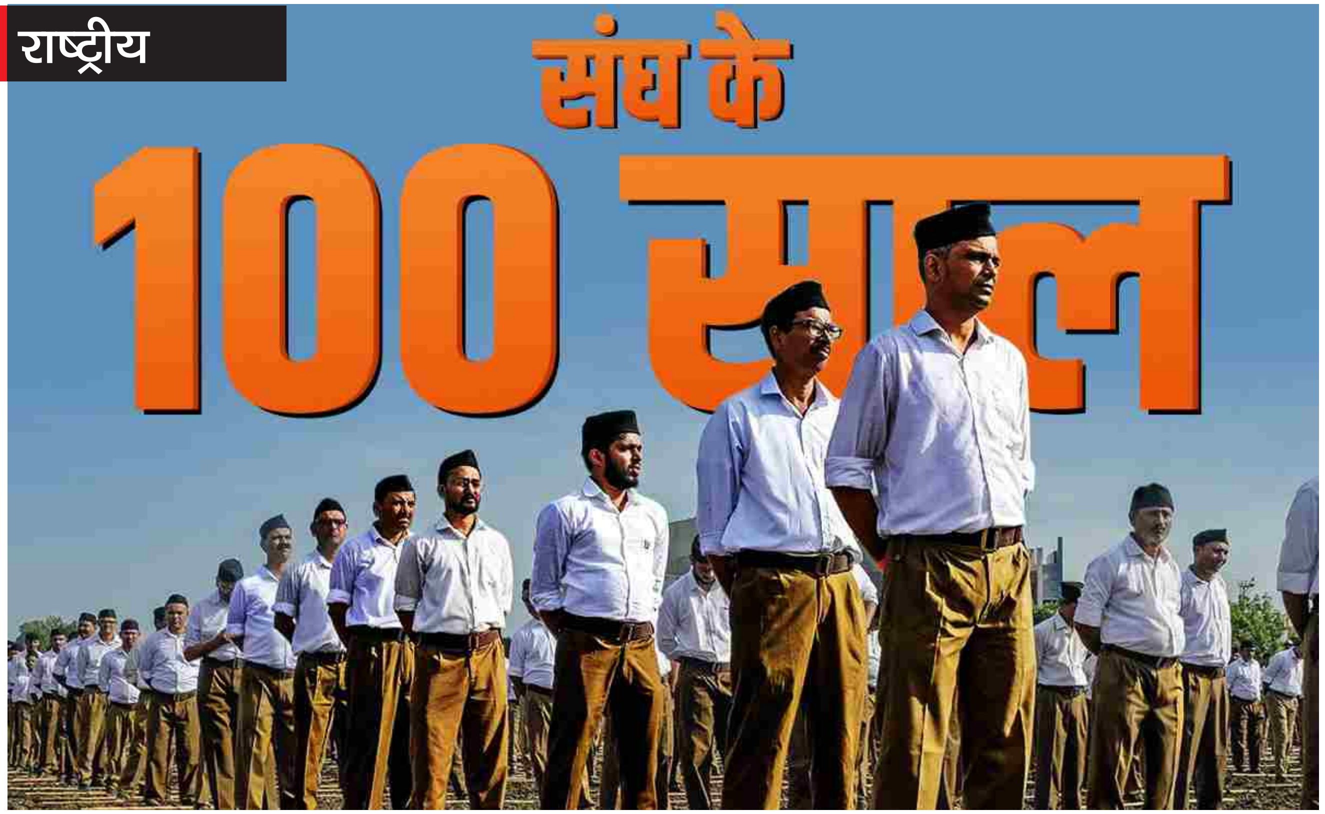

संघ को अपनी सौ साल की यात्रा पूरी करने में अनेक कठिनाइयों, चुनौतियों, झूठे विमर्शों, मनगढ़ंत आरोपों का सामना करना पड़ा है, संघ के बारे में विरोधियों ने जो झूठे विमर्श गढ़े उनमें सबसे प्रमुख रहा कि यह सांप्रदायिक संगठन है, मुस्लिम विरोधी है, इस विमर्श को गढ़ने में विशेष रूप से कांग्रेस और वामपंथी विचारधारा के राजनीतिक दलों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सर्वेश कुमार सिंह
वरिष्ठ पत्रकार, लखनऊ

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।।

भगवान श्रीकृष्ण के अर्जुन से कहे गए ये वचन शाश्वस्त, सनातन और चिरंतन भारतीय संस्कृति की जीवनी शक्ति हैं। इस जगत में जब-जब धर्म का नाश और अधर्म की वृद्धि होती है या संस्कृति पर आक्रमण होते हैं तो ईश्वरीय शक्ति स्वयं अवतरित होती है। यह शक्ति त्रेता में भगवान श्रीराम के रूप में तो द्वापर में भगवान श्रीकृष्ण के रूप में इस धरा पर अवतरित हुई हैं। वही ईश्वरीय शक्ति, राष्ट्र चेतना के रूप में कलियुग में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के रूप में सौ साल पहले विजयादशमी के दिन अवतरित हुई है। इस दैवीय शक्ति से प्रेरित और संपन्न समाज सेवा के लिए अवतरित इस अद्भुत संगठन ने अपनी स्थापना के सौ साल पूरे कर लिए हैं। किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि आखिर कोई संगठन बगैर विघटित हुए, बगैर किसी विवाद के, बगैर किसी सरकारी सहायता के भी सौ साल पूरे कर सकता है। भारत में समाज सेवा, धर्म स्थापना और मानव सेवा के लिए अनेक संगठनों ने समय-समय पर जन्म लिया है। उन्होंने अच्छे कार्य किए हैं। वे अपने-अपने उद्देश्यों के प्रति समर्पित रहे हैं, किंतु वे एक सीमित कालखंड तक ही अपने आप को सशक्त और सबल बनाकर रख सके हैं। संघ की स्थापना के पूर्व अनेक संगठनों की स्थापना हुई, लेकिन वे समय की चुनौतियों का सामना करने में पूरी तरह सफल नहीं हो सके। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एक मात्र ऐसा संगठन है,जो सौ साल बाद भी उसी ऊर्जा, उसी लगन और उसी प्रेरणा को लेकर नित नवीन स्वरूप बनाए हुए खड़ा है और राष्ट्र आराधना के अपने उद्देश्य में सफल भी हुआ है।

संघ को समझना होगा

विचारणीय है कि संघ ने जब सौ साल पूरे किए हैं तो क्या कारण है कि यह अन्य संगठनों की तरह थका नहीं, रूका नहीं, ठहरा नहीं। अनथक आगे बढ़ता रहा है, बल्कि ऐसा विस्तार किया कि आज दुनिया का सबसे बड़ा स्वयंसेवी संगठन बना हुआ है। संघ के विस्तार और उसकी सांगठनिक रचना को देखें तो आज लगभग 78 हजार स्थानों पर एक लाख 25 हजार इसकी दैनिक और साप्ताहिक शाखाएं लग रही हैं। संघ सेवा के कामों में दुनिया में सबसे आगे है।

आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि आखिर कोई संगठन बगैर विघटित हुए, बगैर किसी विवाद के, बगैर किसी सरकारी सहायता के सौ साल पूरे कर सकता है, भारत में समाज सेवा, धर्म स्थापना और मानव सेवा के लिए अनेक संगठनों ने समय-समय पर जन्म लिया है, अच्छे कार्य किए, वे अपने उद्देश्यों के प्रति समर्पित रहे हैं, किंतु वे एक सीमित कालखंड तक ही अपने आप को सशक्त बनाकर रख सके हैं।

देश के शहरी और ग्रामीण स्थानों पर लगभग एक लाख 29 हजार सेवा कार्य संचालित कर रहा है। सुदूर वनवासी क्षेत्रों, पर्वतीय क्षेत्रों से लेकर संपूर्ण भारत में शिक्षा और संस्कार के कई लाख केद्र संचालित कर रहा है। संघ ने समाजिक जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं छोड़ा है, जहां अपने उद्देश्य के लिए कोई कार्य खड़ा न किया हो। इसलिए संघ से प्रेरित लगभग 40 विभिन्न संगठन सक्रिय हैं। दुनिया के समाजशास्त्री अध्ययन कर रहे हैं कि आखिर कोई संगठन दुनिया का सबसे बड़ा और निर्विवाद संगठन कैसे बनता है? इस प्रश्न का उत्तर जानने के लिए संघ को पढ़ने और संघ के बारे में सुनने से ज्यादा उसमें उतरने की जरूरत है। संघ को समझना है तो संघ के निकट जाना ही पड़ेगा, तब संघ समझ में आएगा। संघ की अद्भुत पद्यति शाखा को समझना और उसमें जाकर देखना होगा।

बाधाओं और चुनौतियों का सामना

मां भारती के सपूत स्वतंत्रता सेनानी डॉक्टर केशव बलिराम हेडगेवार ने जंगें आजादी के दौर में विजयदशमी के पावन पर्व के दिन 27 सितंबर 1925 को महाराष्ट्र के नागपुर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) की स्थापना देश, संस्कृति व समाज हित के कार्यों को करने के उद्देश्य से की थी। इस संकल्प के चलते राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ स्थापना काल से लेकर के आज तक देश की सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय ढांचे को मजबूत करने में निरंतर लगा हुआ है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने स्थापना के समय ही अपना उद्देश्य और ध्येय स्पष्ट कर दिया था। संघ का ध्येय उसकी प्रार्थना की प्रथम पंक्ति 'नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमे, त्वया हिंदूभूमे सुखमं वर्धितोअहम' और प्रार्थना के अंत में 'भारत माता की जय' से सुस्पष्ट है। संघ किसी के विरोध में कोई कार्य नहीं करता और न ही किसी के विरोध के लिए इसकी स्थापना हुई है। जब संघ का स्वयंसेवक नियमित रूप से 'नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमे' कहता है तो स्पष्ट हो जाता है कि वह इस भारत मां की पूजा करता है, उन्हें नमन करता है, उनके लिए समर्पण का भाव प्रकट करता है और अंत में जब 'भारत माता की जय' कहता है तो स्पष्ट होता है कि वो भारत को सदैव विजयी और यशस्वी देखने की कामना करता है। ऐसे निस्वार्थ और निष्काम उद्देश्य को धारण किए हुए संघ को भी अपनी सौ साल की यात्रा पूरी करने में अनेक कठिनाइयों, चुनौतियों, झूठे विमर्शों, मनगढ़ंत आरोपों का सामना करना पड़ा है। संघ के बारे में विरोधियों ने जो झूठे विमर्श गढ़े उनमें सबसे प्रमुख रहा कि यह सांप्रदायिक संगठन है, मुस्लिम विरोधी संगठन है। इस विमर्श को गढ़ने में विशेष रूप से कांग्रेस और वामपंथी विचारधारा के राजनीतिक दलों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। लेकिन ये सभी आरोप समय के साथ झूठे साबित होते चले गए। देश में एक भी घटना ऐसी नहीं घटी, जिसमें संघ पर कोई आरोप प्रमाणित हुआ हो। देश में आजादी के बाद भीषण साम्प्रदायिक दंगे भी हुए लेकिन किसी में संघ को आरोपित नहीं किया जा सका। किसी भी न्यायालय ने संघ के खिलाफ कोई आदेश पारित नहीं किया। आजादी के तत्काल बाद महात्मा गांधी की हत्या से जब सारा देश स्तब्ध था। तब राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने गांधी की हत्या की घोर निंदा की। संघ ने 13 दिन का शोक मनाने के लिए शाखाओं को रोक दिया। इसके बावजूद संघ को महात्मा गांधी की हत्या के लिए दोषी ठहराने का एक अभियान चलाया गया। संघ पर तत्कालीन केंद्र सरकार ने प्रतिबंध भी लगा दिया, लेकिन न्यायालय से संघ निर्दोष साबित हुआ। आपातकाल में संघ पर दूसरा प्रतिबंध लगा। अयोध्या में विवादिद ढांचा ध्वंस के बाद भी संघ पर संक्षिप्त प्रतिबंध लगाया गया। लेकिन संघ ने अपने संगठन कौशल और समाज के स्नेह और सामूहिक सामाजिक शक्ति के बल पर इनका सामना किया।

संघ शक्ति का केंद्र शाखा

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शक्ति का केन्द्र बिंदु उसकी शाखा है। शाखा देखने में कुछ बालकों, युवाओं या प्रौढ़ों का एक छोटा सा समूह किसी मैदान में खेलता, योग व्यायाम करता या विचार विमर्श करता दिख जाएगा। भगवा ध्वज के सम्मुख प्रार्थना करते स्वयंसेवकों को देखकर उनके समर्पण को समझा जा सकता है। यही वह केंद्र है, जो किसी सामान्य से बालक या युवा को समर्पित, निष्ठावान, चरित्रवान, उद्देश्य के लिए उत्कट राष्ट्र भावना लिए स्वयंसेवक का निर्माण कर देता है। शाखा सामान्य खेलकूद का मैदान नहीं, बल्कि राष्ट्र के लिए व्यक्तित्व निर्माण की कार्यशाला है। यहां न तो किसी की जाति पूछी जाती है न किसी के साथ ऊंच-नीच का कोई भाव होता है। बस अगर कुछ होता है तो सिर्फ हिंदू समाज के संगठन की प्रबल भावना। यही मंत्र समूचे देश में आज सवा लाख से अधिक शाखाएं खड़ी करके संघ को दुनिया का सबसे बड़ा संगठन बना सका है।

- **राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने इस वर्ष विजयादशमी से लेकर अगले वर्ष 2026 की विजयादशमी तक संघ शताब्दी वर्ष मनाने का निर्णय लिया है, इस शताब्दी वर्ष में जो कार्यक्रम संघ ने निर्धारित किए हैं, वे संघ की व्यापक और समाजहित की समग्र दृष्टि को प्रतिबिम्बित करते हैं।**
- **संघ के विस्तार और उसकी सांगठनिक रचना को देखें तो आज लगभग 78 हजार स्थानों पर एक लाख 25 हजार इसकी दैनिक और साप्ताहिक शाखाएं लग रही हैं, संघ सेवा के कामों में दुनिया में सबसे आगे है, देश के शहरी और ग्रामीण स्थानों पर लगभग एक लाख 29 हजार सेवा कार्य संचालित कर रहा है।**

सशक्त भारत के लिए संघ दृष्टि

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने इस वर्ष विजयादशमी से लेकर अगले वर्ष 2026 की विजयादशमी तक संघ शताब्दी वर्ष मनाने का निर्णय लिया है। इस शताब्दी वर्ष में जो कार्यक्रम संघ ने निर्धारित किए हैं, वे संघ की व्यापक और समाजहित की समग्र दृष्टि को प्रतिबिम्बित करते हैं। संघ ने जो कार्यक्रम निर्धारित किए हैं। वे भारत की सम-सामयिक चुनौतियों का भी सामना करने के लिए समाज को खड़ा करेंगे। ये कार्यक्रम पंच परिवर्तन के नाम से जाने जा रहे हैं। समाज में संघ पांच विशेष कार्य अभियान आरंभ करने जा रहा है। इसमें सबसे प्रमुख है, सामाजिक समरसता। संघ ने समाज में भेदभाव ऊंच-नीच ,जात-पात को समाप्त करने के लिए सामाजिक समरसता को सबसे ऊपर रखा है। आज अगर कोई सबसे बड़ी चुनौती भारत के सामने है तो वह है सामाजिक भेदभाव, जातिवाद, अलगाववाद। इनको समूल समाप्त करने के लिए संघ सामाजिक समरसता का जागरण और प्रबोधन करेगा। इसके बाद दूसरा प्रमुख कार्य है, पर्यावरण संरक्षण, आज भारत ही नहीं, बल्कि संपूर्ण विश्व पर्यावरण संबंधी चुनौतियों का सामना कर रहा है। ये चुनौतियां समय के साथ और अधिक भयावह होने वाली हैं। इसलिए संघ ने इसे प्रमुख गतिविधि मानकर इसके लिए जनजागरण कर समाज को पर्यावरण संरक्षण के लिए खड़ा करने का फैसला किया है। भारत में परिवारों का विघटन भी एक प्रमुख समस्या बनी हुई है। इसे दूर करने के लिए कुटुम्ब प्रबोधन का भाव जगाना है। भारत जब परतंत्रता की बेड़ियों में नहीं जकड़ा था और स्वदेशी शासन, स्वदेशी व्यवस्था संचालित होती थी तो आत्मनिर्भर था। आज फिर स्व का भाव जगाकर भारत की स्व की भावना को प्रबल करना आवश्यक है यह मानकर स्वदेशी और निज राष्ट्र, निज भाषा. निज संस्कृति, निज धर्म के प्रति स्वाभिमान का भाव जगाने के लिए अभियान आरंभ किया जा रहा है। एक नागरिक के रूप में हमारे क्या कर्तव्य हैं, यह जानना हर देशवासी के लिए आवश्यक है। उनका पालन करने से सामाजिक जीवन में अनुशासन का भाव जागृत होता है और हम राष्ट्रीय दायित्व का निर्वहन करने के लिए भी तैयार और तत्पर होते हैं। यह भावना जगाने के लिए नागरिक कर्तव्य को पंच परिवर्तन का पांचवा आयाम संघ ने बनाया है। अपने संगठन बल और व्यापक आधार के बल पर संघ पंच परिवर्तन से देश में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने में अवश्य सफल होगा। ●

शत्रु संपत्तियों का जिन्न फिर निकला

देहरादून में आईएसबीटी के पास टर्नर रोड पर 70 बीघा जमीन फैज मोहम्मद की शत्रु संपत्ति के रूप में दर्ज है, जिसे केंद्रीय गृह मंत्रालय ने सूचीबद्ध कर रखा है, फैज मोहम्मद के नाम माजरा क्षेत्र में 1800 बीघा शत्रु संपत्ति 2023 में चिह्नित की गई थी, लेकिन अचानक इन फाइलों को ठंडे बस्ते में डाल दिया गया।

दिनेश मानसेरा
वरिष्ठ पत्रकार

देवभूमि उत्तराखंड में शत्रु संपत्ति के मामले केंद्र के आदेश और मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के निर्देश के बाद शत्रु संपत्तियों की फाइलें एक-एक कर फिर खुलने लगी हैं। नवंबर 2023 में काबुल हाउस के बाद फैज मोहम्मद की शत्रु संपत्ति समेत 34 अन्य संपत्तियों की फाइलें खोली गई थी, लेकिन भ्रष्ट सिस्टम ने इन फाइलों को खामोशी की चादर में छिपा दिया गया था। किंतु इस बार केंद्रीय गृह मंत्रालय से सख्त आदेश मिलने पर जिला मजिस्ट्रेट शत्रु संपत्तियों पर कब्जा लेकर राज्य सरकार के माध्यम से गृह मंत्रालय को रिपोर्ट करेंगे। 2023 से पहले गृह मंत्रालय ने एक सर्वे में देश भर में 12,611 के करीब शत्रु संपत्तियां चिह्नित की थी। जिनकी कीमत करीब एक लाख करोड़ रुपये आंकी गई थी। इनमें से 12,485 संपत्तियां ऐसी हैं जिनके मालिक बंटवारे के दौरान पाकिस्तान जाकर बस गए और 126 लोग ऐसे थे जो चीन के नागरिक बन गए थे। उत्तराखंड के पांच जिलों हरिद्वार, ऊधमसिंह नगर के किच्छा, देहरादून, नैनीताल और अल्मोड़ा में कुल मिलाकर 69 शत्रु संपत्तियां हैं, जिन्हें अवैध कब्जों से मुक्त कराने का अभियान उत्तराखंड सरकार ने केंद्रीय गृह मंत्रालय के आदेश के बाद फिर शुरू किया है। ऐसे में सवाल उठता है कि जिन लोगों ने शत्रु संपत्तियों पर कब्जा कर रखा है क्या वो फिर सिस्टम से मिलकर इन फाइलों को खामोशी चादर में नहीं लपेट देंगे?

भूमाफियाओं का कब्जा

उत्तराखंड में फैज मोहम्मद के नाम से शत्रु संपत्तियां देहरादून में पंजीकृत हैं। इन संपत्तियों पर सहारनपुर व देहरादून के कुछ भू-माफिया का कब्जा है। उन्होंने फर्जी वारिसान दस्तावेजों के जरिए उन पर अवैध कब्जा कर रखा है। उत्तराखंड गठन के बाद भी देहरादून हरिद्वार के भू-राजस्व दस्तावेज सहारनपुर कमिश्नरी में ही रहे, क्योंकि उस समय कमिश्नरी सहारनपुर में हुआ करती थी और वहां वर्षों पुराने जमीन के दस्तावेज उपलब्ध थे। वहीं से भू-माफिया देहरादून की जमीनों के अभिलेखों में फर्जीवाड़ा करते रहे। देहरादून की डीएम रही सोनिका ने सहारनपुर से मूल दस्तावेजों को देहरादून मंगवाकर भूमाफियाओं पर कार्रवाई शुरू की थी, लेकिन भूमाफियाओं ने अपने प्रभाव का उपयोग कर कार्रवाई पर रोक लगवा दी थी। अब केंद्रीय गृह मंत्रालय ने एक बार फिर फैज मोहम्मद के नाम से दर्ज शत्रु संपत्तियों का जिन्न बोतल से बाहर निकाला है। देहरादून प्रशासन ने कस्टोडियन संपत्ति काबुल हाउस खाली करवाने के आदेश के बाद फैज मोहम्मद की शत्रु संपत्तियों पर काबिज लोगों की नींद हराम कर दी है। देहरादून में आईएसबीटी के पास टर्नर रोड पर 70 बीघा जमीन फैज मोहम्मद की शत्रु संपत्ति के रूप में चिह्नित की गई है, जिसे केंद्रीय गृह मंत्रालय ने भी सूचीबद्ध कर रखा है। फैज मोहम्मद के नाम माजरा क्षेत्र में 1800 बीघा शत्रु संपत्ति 2023 में चिह्नित की गई थी। डीएम के निर्देश पर सिटी मजिस्ट्रेट ने उक्त जमीन के दस्तावेजों की जांच की और मौका मुआयना भी किया था, लेकिन उसके बाद अचानक इन फाइलों को ठंडे बस्ते में डाल दिया गया था। एक अनुमान के मुताबिक, इन दोनों संपत्तियों की कीमत अरबों में है और इस पर सहारनपुर, मुजफ्फरनगर के लोग अवैध रूप से बसे हैं या बसाए गए हैं। इस साजिश में कई रसूखदार सफेदपोश भी शामिल हैं। इस बार केंद्रीय गृह मंत्रालय ने धामी सरकार को निर्देश दिया है कि राज्य सरकार शत्रु संपत्तियों को अपने कब्जे में लेकर जिला मजिस्ट्रेट को सौंप दे। जिला मजिस्ट्रेट अपनी अभिरक्षा में सार्वजनिक हित में इसका स्वयं उपयोग कर सकते हैं तथा इसे किसी अन्य को नहीं सौंपा जा सकता। इसी क्रम में नैनीताल में मेट्रोपोल होटल की शत्रु संपत्ति को भी खाली कराया गया है। बाकी संपत्तियों की फाइलों को भी ठंडे बस्ते से बाहर निकाल लिया गया है। हरिद्वार और ऊधमसिंह नगर जिले के किच्छा में भी शत्रु संपत्ति है।

क्या होती शत्रु संपत्ति

केंद्र सरकार ने 10 सितंबर 1959 और 18 दिसंबर 1971 को एक अध्यादेश जारी कर उन संपत्तियों को शत्रु संपत्ति घोषित किया था जिनके मालिक आजादी के समय हुए बंटवारे के दौरान देश छोड़कर पाकिस्तान चले गए थे या फिर किसी दूसरे देश में बस गए थे और वहां की नागरिकता हासिल कर ली थी। जो लोग दूसरे देशों में जाकर बस गए थे उनकी संपत्ति को शत्रु संपत्ति नाम दिया गया था, लेकिन कुछ षडयंत्रकारियों ने खुद को देश छोड़ चुके लागों का वारिस या रिश्तेदार बताकर फर्जी दस्तावेजों के आधार पर शत्रु संपत्ति पर अपना दावा ठोक दिया। इन्हीं षडयंत्रकारियों ने शत्रु संपत्ति की फर्जी रजिस्ट्री भी करा ली, जिनके मामले स्थानीय अदालतों में चल रहे हैं। लेकिन अब केंद्रीय गृह मंत्रालय ने कानूनी कार्रवाई शुरू कर दी है और इन संपत्तियों को कब्जे में लेने की प्रक्रिया तेज कर दी है। जिससे भू-माफियाओं में खलबली मची है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी का कहना है कि उत्तराखंड में स्थित सभी शत्रु संपत्तियों, जिनके बारे में केंद्रीय गृह मंत्रालय से जानकारी मिली है, की पहचान कर ली गई है। शासन स्तर से सभी जिला अधिकारियों को इन्हें खाली कराकर जनहित में उपयोग करने को कहा गया है। हमारी सरकार ने नैनीताल की शत्रु संपत्ति को खाली करा लिया है। उसे पार्किंग के लिए इस्तेमाल करने की अनुमति दे दी गई है। धामी ने कहा कि राज्य सरकार ने उत्तराखंड की सभी शत्रु संपत्तियों को खाली कराने का संकल्प लिया है।

देहरादून की डीएम रही राधा रतूड़ी, आशीष श्रीवास्तव शासन में सचिव रहे शैलेश बगौली, डीजीपी रहे अनिल रतूड़ी, डीआईजी अजय रौतेला, सबकी जानकारी में देहरादून की शत्रु संपत्ति के मामले थे, लेकिन जब भी कब्जा मुक्त कराने का प्रयास हुआ तब राजनीतिक दबाव ने उनके काम में बाधा डाल दी।

गृह विभाग होता है शत्रु संपत्ति का मालिक

2023 में देहरादून की डीएम सोनिका ने शत्रु संपत्ति मामले में ऐतिहासिक फैसला सुनाते हुए वहां काबिज लोगों को 15 दिनों में अवैध कब्जा छोड़ने का आदेश दिया था। साथ ही नोटिस जारी किया था कि इस मियाद के खत्म होते ही जिला प्रशासन बलपूर्वक शत्रु संपत्ति को खाली कराएगा। कुछ लोगों पर इन शत्रु संपत्तियों को खुर्दबुर्द करने के आरोप लगे थे और कई लोग फर्जी वारिस बनकर अरबों रुपये की काबुल हाउस की संपत्ति को हथियाने के प्रयास कर रहे थे। इसमें सहारनपुर से फर्जी दस्तावेज बनाए जाने के भी मामले सामने आए थे। लेकिन डीएम सोनिका के फैसला सुनाने के बाद षडयंत्रकारियों में खलबली मच गई थी। काबुल के राजा से जुड़ी इन शत्रु संपत्ति के मामले में हाईकोर्ट के निर्देश पर ही डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट की अदालत में सुनवाई हुई थी, जिसमें शत्रु संपत्ति पर काबिज और अन्य दावेदारों को सुनने के बाद उन्हें कब्जा छोड़ने की चेतावनी दी गई थी। क्योंकि उक्त संपत्ति का मालिक केंद्रीय गृह मंत्रालय होता है, जिसकी देखरेख की जिम्मेदारी जिला प्रशासन की होती है। नैनीताल में भी मेट्रोपॉल शत्रु संपत्ति को सरकार ने अपने कब्जे में लेने के लिए यही प्रक्रिया अपनाई थी और इस बारे में हाईकोर्ट नैनीताल ने भी दिशा-निर्देश दिए थे।

देहरादून में राजस्व खातों में 1937 से रिक्त पड़ी सर्वे चौक के सामने करनपुर परगना परवा दून खेवट संख्या 16 खतौनी संख्या 17 आबादी की 0.6230 हेक्टेयर भूमि को अब अतिक्रमण मुक्त करके जिला प्रशासन अपना कब्जा लेने जा रहा है। इस बारे में जिला अधिकारी कार्यालय से अपर जिला अधिकारी (वित्त व राजस्व) राम जी शरण शर्मा के द्वारा सुनवाई के बाद आदेश जारी कर दिए गए हैं कि उक्त भूमि कस्टोडियन है और इसका कोई वारिस नहीं है। ये संपत्ति बीबी जवीदा बेवा शेर मोहम्मद खान के नाम हुआ करती थी, जिनका कोई विधिक वारिस नहीं है। आदेश में ये भी लिखा गया है कि उक्त संपत्ति अब बाजार में बहुत अधिक भाव की है, जिस वजह से इसके झूठे दावे हो रहे हैं।

तहसीलदार राशिद की भूमिका संदिग्ध

1879 में काबुल के राजा मोहम्मद याकूब खान देहरादून आकर बसे थे। यहां उनकी संपत्ति कई स्थानों पर थी। वर्ष 1924 में उनकी मौत हो गई। उनके वंशज देश बंटवारे के दौरान विदेश चले गए। बाद में वे पाकिस्तान के नागरिक बन गए। उनके पारिवारिक

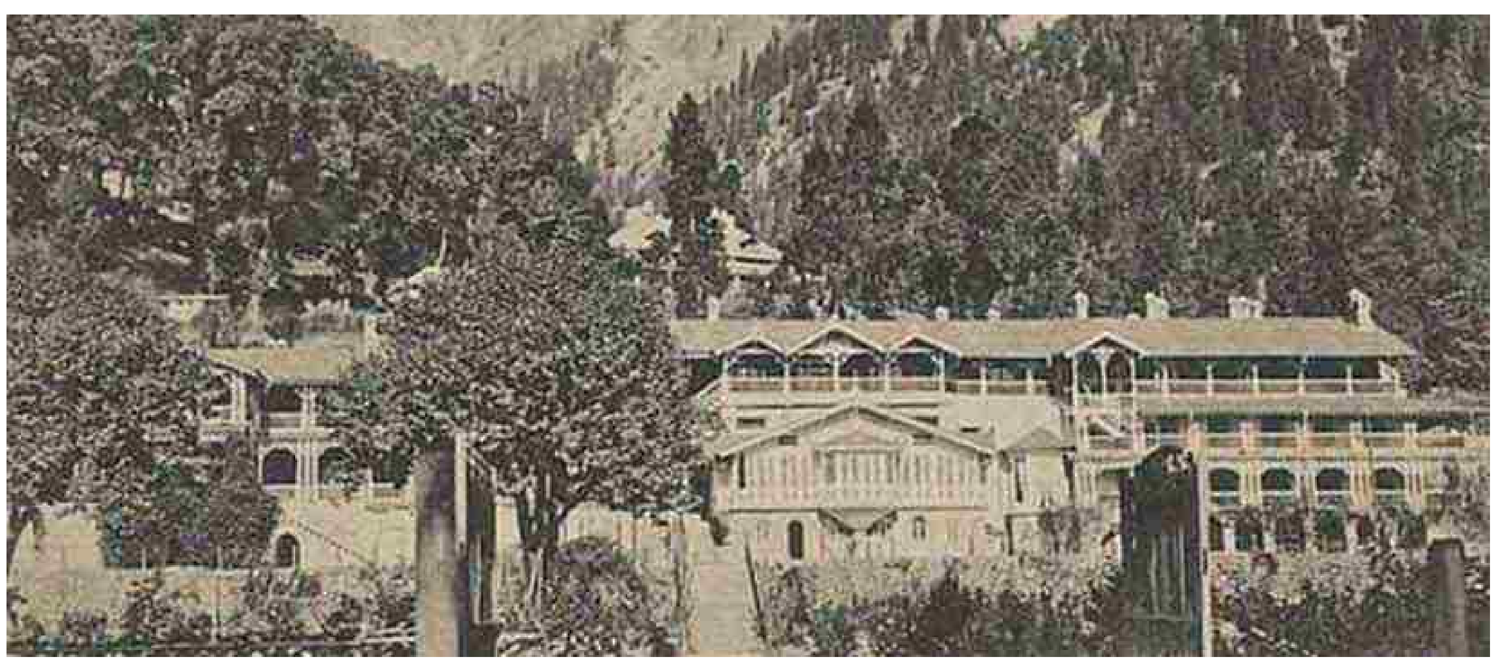

फैज मोहम्मद की संपत्तियों की कीमत अरबों में है, इस पर सहारनपुर, मुजफ्फरनगर के लोग अवैध रूप से बसाए गए हैं, इस साजिश में कई सफेदपोश भी शामिल हैं, इस बार केंद्रीय गृह मंत्रालय ने धामी सरकार को निर्देश दिया है कि राज्य सरकार शत्रु संपत्तियों को अपने कब्जे में लेकर जिला मजिस्ट्रेट को सौंप दे।

मित्र रहे मोहम्मद असलम खान यूपी में और देहरादून में रहते हैं। उनका कहना है कि सरकार इस संपत्ति को अपने कब्जे में लेकर जनहित के कामों में लगाए। लेकिन काबुल के राजा के फर्जी रिश्तेदार, सहारनपुर देहरादून में बन गए और वे देहरादून की शत्रु संपत्तियों पर फर्जी दस्तावेज बनाकर अपने दावे करने लगे थे। इनमें मोहम्मद शाहिद, मोहम्मद खालिद अब्दुल रज्जाक का गिरोह शामिल था। दूसरा गिरोह आरिफ खान का था। जबकि तीसरा गिरोह तारीक अख्तर का था, जो 23 शत्रु संपत्तियों की रजिस्ट्री कराकर सरकार धोखा देना चाहते थे। हालांकि इस मामले में इन गिरोह के खिलाफ एफआईआर भी दर्ज हुई थी किंतु गिरफ्तारी किसी की नहीं हुई थी। इस सारे प्रकरण में तहसीलदार रहे राशिद की भूमिका को भी संदिग्ध माना गया था। इन शत्रु संपत्तियों को नगर निगम के दस्तावेजों में भी हेरफेर करके चढ़ाया जाने वाला था जिसे तत्कालीन नगर आयुक्त विनय शंकर पांडेय द्वारा रोका गया था। ऐसा नहीं है कि इन मामलों की जानकारी शासन के अधिकारियों को नहीं थी। राधा रतूड़ी जब देहरादून की डीएम थीं, तब उनकी जानकारी में यह प्रकरण था। शासन में सचिव रहे शैलेश बगौली, जिला अधिकारी रहे आशीष श्रीवास्तव, डीजीपी रहे अनिल रतूड़ी, डीआईजी रहे अजय रौतेला, सबकी जानकारी में देहरादून की शत्रु संपत्ति के मामले थे। लेकिन जब-जब कब्जा मुक्त कराने की बात सामने आती थी तब कोई न कोई सफेदपोश राजनीतिक दबाव उनके काम में बाधा डाल देता था या उन्हें रोक देता रहा है।

मई 2023 में भी शत्रु संपत्ति पर केंद्र के सख्त रुख के बाद राज्य सरकार हरकत में आई थी। उत्तराखंड में जिला प्रशासन को 69 ऐसी संपत्तियों की सूचना मिली है, जिन्हें सरकार ने चिह्नित किया था। इनमें 68 संपत्तियों का पता केंद्र सरकार की मदद से लगाया गया था। इन सभी संपत्तियों की कीमत अरबों रुपये में है। सरकार ने सभी जिलाधिकारियों को इन संपत्तियों की जांच का काम प्राथमिकता से करने के निर्देश दिए थे। जिसके बाद पहाड़ों की रानी मसूरी में कैमल बैक रोड में 1680 वर्ग मीटर जमीन को शत्रु संपत्ति के रूप में चिह्नित करते हुए प्रशासन ने कब्जे में लिया था। इसके बाद मसूरी में शत्रु संपत्ति का निरीक्षण किया गया। तत्कालीन नायब तहसीलदार विनोद तिवारी ने मसूरी कैमल बैक रोड स्थित शत्रु संपत्तियों का स्थलीय निरीक्षण एवं उससे संबंधित अभिलेखों की प्रमाणित प्रतियां उपलब्ध कराई। नायब तहसीलदार ने केंद्रीय गृह मंत्रालय को लखनऊ सेंटर द्वारा अवगत कराया गया था कि पाक नागरिक आरिफा खातून और अमीरा खातून पुत्री चौधरी हैदर हुसैन की संपति स्थित भवन दिल-ए-राम-स्टेट, कैमल बैक रोड, मसूरी देहरादून शत्रु संपत्ति है। जिसके बाद जिलाधिकारी देहरादून के निर्देश पर मसूरी में शत्रु संपति की विस्तृत रिपोर्ट सामने आई थी। इसके बाद उप सचिव द्वारा मसूरी में शत्रु संपति के चारों ओर से तारबाड़ करने के निर्देश दिए थे। शत्रु संपत्ति अधिनियम, 1968 तथा भारत रक्षा अधिनियम, 1968 तथा भारत सरकार, नई दिल्ली 10 सितंबर 1965 की अधिसूचना के अनुसार भारत में स्थित चल और अचल संपत्ति, जो पाकिस्तानी राष्ट्र से संबंधित या उनके नियंत्रण अथवा उनकी ओर से प्रबंधित थी, शत्रु संपत्ति मानी जाती है। ऐसी संपत्तियों को भारत के शत्रु संपत्ति अभिरक्षक में निहित किया गया है। उत्तराखंड के पांच जिलों हरिद्वार, ऊधमसिंह नगर, देहरादून, नैनीताल और अल्मोड़ा में 69 शत्रु संपत्तियों की सूचना है. ये सभी संपत्तियां शहरी क्षेत्रों में हैं। जिसके कारण इनका मूल्य कई सौ करोड़ बताया जा रहा है। देहरादून शहर, मसूरी, नैनीताल शहर और ऊधमसिंह नगर में किच्छा, ऊधमसिंह नगर और हरिद्वार में भगवानपुर, ज्वालापुर समेत कई स्थानों पर इनके होने की जानकारी सरकार के पास है। इन संपत्तियों पर मौजूदा कब्जे या अतिक्रमण के बारे में सही जानकारी जुटाई जा रही है। प्रशासन की टीम मौके पर जाकर संपत्तियों की जांच कर रही है।

गौरव

मॉडर्न भारत के विश्वकर्मा नरेंद्र मोदी

देश के 5 करोड़ परिवारों को पक्के घर मिल चुके हैं, जिनमें शौचालय, बिजली, पानी और रसोई गैस जैसी सुविधाएं सुनिश्चित की गई, यह केवल आवास नहीं बल्कि सम्मान जनक जीवन का निर्माण है, 11 वर्षों में स्वच्छता क्रांति आई और 12 करोड़ से अधिक शौचालय बने, इन शौचालयों को इज्जत घर नाम दिया गया।

उदय भान सिंह
लेखक

भारत की सांस्कृतिक परंपरा में भगवान विश्वकर्मा को सृजन, निर्माण और शिल्प का देवता माना गया है। वे पूरे समाज के लिए एक नई संरचना गढ़ने वाले सृजक कहे जाते हैं। मंदिरों से लेकर महलों तक, नगरों से लेकर औद्योगिक संरचनाओं तक विश्वकर्मा का नाम हर सृजनात्मक प्रयास का प्रतीक रहा है। संयोगवश 17 सितंबर दोहरा महत्व रखता है। इस दिन जहां एक और विश्वकर्मा जयंती मनाई जा रही है तो वहीं दूसरी ओर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का जन्मदिन भी है। अगर तिथियों के मेल से हटकर देखें तो एक गहरा संदेश नजर आता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी आधुनिक भारत के उन्हीं विश्वकर्मा के रूप में उभरकर सामने आए हैं, जिन्होंने भारत को नई आकृति, नई ऊर्जा, नया आत्मविश्वास और प्रभावशाली वैश्विक पहचान दी है। नरेंद्र मोदी ने गरीब तबके को सम्मानपूर्वक जीवन दिया है। गरीबी देखी है लिहाजा गरीबों का दुख समझते हैं, उसे कम करने की हर संभव कोशिश करते हैं। इसलिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी देशवासियों के दिलों में बसते हैं। गुजरात के वडनगर में 17 सितंबर 1950 को जन्मे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का राजनीतिक उदय 2001 में गुजरात से हुआ। जब वो गुजरात के मुख्यमंत्री बने। इसके बाद उन्होंने राज्य की छवि को बदलने का संकल्प लिया। गुजरात की बिजली संकट, पेयजल संकट, औद्योगिक ठहराव और ग्रामीण गरीबी जैसी चुनौतियों का सामना किया। मोदी ने योजनाबद्ध तरीके से विकास का ऐसा खाका खींचा, जिससे गुजरात को 'मॉडल स्टेट' के रूप में अलग ही पहचान मिली। गुजरात का मुख्यमंत्री रहते नरेंद्र मोदी ने ग्रामीण क्षेत्रों में 24 घंटे बिजली उपलब्ध कराने का सपना देखा और उसे साकार किया। ज्योति ग्राम योजना ने न केवल किसानों को सिंचाई के लिए निर्बाध बिजली दी बल्कि गांवों में लघु उद्योग और शिक्षा की रोशनी भी की। यह कदम वास्तव में ग्रामीण भारत को नए युग की ओर ले जाने वाला साबित हुआ। नरेंद्र मोदी ने गुजरात को वैश्विक निवेश का केंद्र बनाने के लिए वाइब्रेंट गुजरात समिट की शुरुआत की। यह आयोजन केवल निवेश जुटाने के लिए ही नहीं था बल्कि राज्य को औद्योगिक कॉरिडोर, स्पेशल इकोनॉमिक जोन और वैश्विक विनिर्माण केंद्र के रूप में स्थापित करने का एक प्रयास था। नर्मदा परियोजना और उससे जुड़े सिंचाई तंत्र ने गुजरात के लाखों किसानों को राहत दी। जल संसाधनों का यह पुनर्निर्माण राज्य की कृषि को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में मील का पत्थर साबित हुआ। इन सब प्रयासों ने नरेंद्र मोदी को राष्ट्रीय स्तर पर 'विकास पुरुष' की छवि दी और यही छवि उन्हें 2014 में प्रधानमंत्री पद तक लेकर आई।

महिलाओं का सम्मान

2014 में पहली बार देश का प्रधानमंत्री बनने के बाद नरेंद्र मोदी ने विकास की परिभाषा को विस्तार दिया। उनके फैसले केवल तात्कालिक लाभ तक सीमित नहीं रहे बल्कि उन्होंने भारत के विकास को भविष्य के अनुरूप गति देने का काम किया। 'हर गरीब को घर' का सपना मोदी सरकार की सबसे बड़ी योजनाओं में से एक है। देश के 5 करोड़ के करीब परिवारों को पक्के घर मिल चुके हैं, जिनमें शौचालय, बिजली, पानी और रसोई गैस जैसी सुविधाएं सुनिश्चित की गई। यह केवल आवास नहीं बल्कि सम्मान जनक जीवन का निर्माण है। मोदी सरकार के 11 वर्षों के कार्यकाल में स्वच्छता क्रांति आई और 12 करोड़ से अधिक शौचालय बने, इन शौचालयों को इज्जत घर नाम दिया गया। क्योंकि ग्रामीण महिलाएं को शौचालय न होने की वजह से जंगल जाना पड़ता था। देश की आजादी के बाद ग्रामीण महिलाओं की इस पीड़ा को नरेंद्र मोदी समझा। देश में अभी 10.33 करोड़ से ज्यादा महिलाएं पीएम उज्जवला योजना के तहत सब्सिडी पर गैस सिलेंडर का लाभ उठा रही हैं। इस योजना के तहत महिलाओं को एक साल में 14.2 किलोग्राम वाले 9 रसोई गैस सिलेंडरों पर 300 रुपये प्रति सिलेंडर की सब्सिडी मिलती हैं। जल जीवन मिशन के तहत 2025 तक 12.31 करोड़ से अधिक ग्रामीण घरों को नल से जल कनेक्शन दिए जा चुके हैं। जल जीवन मिशन का उद्देश्य सभी ग्रामीण घरों में पीने योग्य पानी उपलब्ध कराना है। अगस्त 2019 में यह मिशन शुरू किया गया था। अगस्त में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने प्रधानमंत्री जन धन योजना के ताजा आंकड़े बताते हुए कहा कि गरीबों के बैंक खातों की संख्या 55 करोड़ को पार कर गई है, जिनमें से अधिकतर खातेदार ऐसे लोग हैं, जो कभी बैंक के दरवाजे तक भी नहीं गए हैं।

पीएम मोदी ने पारंपरिक कारीगरों और शिल्पकारों के लिए पीएम विश्वकर्मा योजना शुरू की, इस योजना में बढ़ई, लोहार, सुनार, राजमिस्त्री जैसे कारीगरों को आधुनिक उपकरण, वित्तीय सहायता और प्रशिक्षण दिया जा रहा है, यह सीधे-सीधे विश्वकर्मा की परंपरा को सम्मान देने जैसा है।

बुनियादी ढांचा

मोदी सरकार ने भारतमाला, सागरमाला, उच्च-गति वाले एक्सप्रेसवे, एयरपोर्टों का विस्तार और बुलेट ट्रेन परियोजना, ये सब भारत के परिवहन नेटवर्क को 21वीं सदी के अनुरूप बना रहे हैं। गति शक्ति योजना ने विभिन्न मंत्रालयों और परियोजनाओं को जोड़कर समन्वित विकास का नया मॉडल प्रस्तुत किया है। 2025 तक 50 से अधिक एक्सप्रेसवे संचालित हो चुके हैं और कई निर्माणाधीन हैं। जिससे कनेक्टिविटी बढ़ी है। केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने मानसून सत्र में संसद को बताया था कि मुंबई-अहमदाबाद हाई स्पीड रेल परियोजना (508 किलोमीटर) पर तेजी से काम चल रहा है, जिसमें 406 किलोमीटर में नींव का काम पूरा हो चुका है और 127 किलोमीटर लंबे पुल पर ट्रैक बिछाने का काम शुरू हो चुका है। इस परियोजना के प्रमुख कार्य जो पूरे हो चुके हैं, उनमें 395 किलोमीटर में खंभे और 300 किलोमीटर से अधिक में गर्डर कास्टिंग और गर्डर लॉन्चिंग शामिल हैं। इंजनों को बिजली देने के लिए ओवरहेड उपकरण मस्तूलों का निर्माण भी शुरू हो गया है। कुल 12 स्टेशनों में से 8 स्टेशनों (वापी, बिलिमोरा, सूरत, भरूच, आणंद, वडोदरा, अहमदाबाद और साबरमती) पर नींव का काम पूरा हो चुका है। महाराष्ट्र खंड में, 3 स्टेशनों (ठाणे, विरार, बोईसर) पर नींव का काम चल रहा है। यानी बुलेट ट्रेन का सपना जल्दी पूरा होने वाला है।

टेक्नोलॉजिकल

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने डिजिटल इंडिया का नारा दिया और उसे गांव-गांव तक पहुंचाया। आज यूपीआई और डिजीलॉकर जैसे प्लेटफॉर्म भारत की पहचान बन चुके हैं। छोटे दुकानदार से लेकर बड़े उद्योगपति तक सभी के लिए लेन-देन आसान हुआ है। डिजिटल इंडिया ऐसा माध्यम बन गया कि चाहे ड्राइविंग लाइसेंस बनवाना हो या जन्म प्रमाण पत्र, बिजली बिल, पानी बिल या आयकर रिटर्न का भुगतान करना हो सब डिजिटल इंडिया प्लेटफॉर्म के माध्यम से तेजी से और आसानी से किया जा सकता है। यानी डिजिटल इंडिया 21वीं सदी में देश की मजबूती का नारा बन गया है। यह नारा देश के विकास के लिए नवाचार और स्वचालन को बढ़ावा देने के साथ आत्मनिर्भर भारत के दृष्टिकोण को साकार कर रहा है। भारत को विनिर्माण और उत्पादन का वैश्विक केंद्र बनाने के लिए पीएम नरेंद्र मोदी ने मेक इन इंडिया की शुरुआत की। रक्षा उत्पादन से लेकर इलेक्ट्रॉनिक्स और मोबाइल मैन्युफैक्चरिंग तक में भारत आत्मनिर्भरता की राह पर है। कोविड-19 महामारी के दौरान आत्मनिर्भर भारत अभियान ने इस दिशा को और गति दी तथा स्वदेशी कोविड वैक्सीन बनाने में सफलता हासिल की। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ही पारंपरिक कारीगरों और शिल्पकारों के लिए पीएम विश्वकर्मा योजना शुरू की। इस योजना के तहत बढ़ई, लोहार, सुनार, राजमिस्त्री जैसे कारीगरों को आधुनिक उपकरण, वित्तीय सहायता और प्रशिक्षण दिया जा रहा है। यह सीधे-सीधे भगवान विश्वकर्मा की परंपरा को सम्मान देने जैसा है।

सांस्कृतिक पुनर्जागरण

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का विजन केवल आर्थिक या औद्योगिक ढांचों तक सीमित नहीं है। उन्होंने भारत की सांस्कृतिक आत्मा को भी नए सिरे से गढ़ा है। काशी विश्वनाथ धाम कॉरिडोर निर्माण हो या अयोध्या में श्रीराम मंदिर तथा उज्जैन के महाकाल मंदिर परिसर का विस्तार और सौंदर्यीकरण, सोमनाथ से केदारनाथ तक कई धार्मिक स्थलों के जीर्णोद्धार और आधुनिक सुविधाओं से जोड़ने का कार्य प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यकाल में हुआ है। जिससे भारत की संस्कृति को नया जीवन मिला। इन कार्यों ने यह सिद्ध किया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी केवल विकासपुरुष नहीं बल्कि राष्ट्र की आत्मा के निर्माणकर्ता भी हैं। यदि भगवान विश्वकर्मा को केवल इमारतें या औजार गढ़ने वाला देवता मानें तो वह अधूरा दृष्टिकोण होगा। विश्वकर्मा का अर्थ है वह शक्ति जो समाज, संस्कृति, राष्ट्र और भविष्य की नई संरचना गढ़े। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राजनीति को इसी दृष्टि से लिया है। उन्होंने एक ओर जहां गरीबों को घर, सड़क, बिजली, पानी और आर्थिक मदद दी वहीं दूसरी ओर आधुनिक हाईवे, डिजिटल प्लेटफॉर्म और ग्लोबल कनेक्टिविटी की मजबूत नींव रखी। उन्होंने एक ओर पारंपरिक शिल्पकारों को सम्मान दिया तो दूसरी तरफ भारत की सांस्कृतिक धरोहर को विश्व के सामने प्रस्तुत किया। ऐसे में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को आधुनिक भारत का विश्वकर्मा कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी, क्योंकि उन्होंने भौतिक विकास से लेकर सांस्कृतिक पुनर्जागरण तक और स्थानीय निर्माण से लेकर वैश्विक पहचान तक हर स्तर पर भारत को नई संरचना दी है। भारत आज जिस आत्मविश्वास और सृजनात्मक ऊर्जा के साथ आगे बढ़ रहा है उसमें पीएम मोदी की भूमिका विश्वकर्मा जैसी ही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत की छवि को वैश्विक स्तर पर भी नए सिरे से गढ़ा। जी-20 की अध्यक्षता, अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन, क्वाड जैसे मंचों पर भारत की भागीदारी और ग्लोबल साउथ की आवाज के रूप में भारत की भूमिका, ये सब दिखाते हैं कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत को ग्लोबल पॉलिटिक्स में केंद्रीय स्थान दिलाया है। यह भी 'विश्वकर्मा' की भूमिका का विस्तार ही है जहां राष्ट्र का निर्माण केवल भीतर नहीं बल्कि ग्लोबल स्टेज पर भी होता है।

- **गुजरात के वडनगर में 17 सितंबर 1950 को जन्मे पीएम नरेंद्र मोदी का राजनीतिक उदय 2001 में गुजरात में तब हुआ जब वो गुजरात के मुख्यमंत्री बने, इसके बाद उन्होंने राज्य की छवि बदलने का संकल्प लिया, गुजरात की बिजली, पेयजल संकट, औद्योगिक ठहराव और ग्रामीण गरीबी जैसी चुनौतियों का सामना किया।**
- **2025 तक 50 से अधिक एक्सप्रेसवे संचालित हो चुके हैं जबकि 11 निर्माणाधीन हैं, जिससे कनेक्टिविटी बढ़ी है, केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने मानसून सत्र में संसद को बताया था कि मुंबई-अहमदाबाद बुलेट ट्रेन परियोजना पर तेजी से काम चल रहा है।**

राजनीति के तरीके बदले

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश की राजनीति के तौर-तरीके भी बदले हैं। जाति की बिसात पर सत्ता के सिंहासन पर विराजमान होने वाले क्षेत्रपों की राजनीति को पूरी तरह खत्म कर दिया। परिवारवाद की राजनीति हासिये पर है। पटेल समाज के प्रभाव वाले गुजरात में 12 साल तक मुख्यमंत्री रहे मोदी ने गुजरात में पटेल सियासत को जिस तरह हाशिए पर रखा, उसी तर्ज पर प्रधानमंत्री बनने के बाद जाट प्रभाव वाले हरियाणा में गैर-जाट राजनीति को तवज्जो दी और मराठा प्रभाव वाले महाराष्ट्र में गैर-मराठा को साधकर कमल खिलाया। प्रधानमंत्री मोदी के सियासी सफर पर नजर डालें तो साफ है कि वह परंपरागत राजनीति से हटकर अपनी सियासी लकीर खींचते हैं। इसलिए नरेंद्र मोदी भाजपा के लिए एक ट्रंप कार्ड हैं। क्योंकि मुख्यमंत्री रहते हुए मोदी ने गुजरात में भाजपा की सियासी जड़ें ऐसी जमाईं कि दोबारा कांग्रेस की फसल खड़ी नहीं हो पाई। अब देश भर में कांग्रेस तीन लोकसभा चुनाव सहित 90 चुनाव हार चुकी है। इसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का मैजिक ही कहा जा सकता है।

कांग्रेस का जेन-जी एक्टिव

लगातार चुनाव में हार का सामना कर रहे राहुल गांधी सहित विपक्षी नेता अब यही चाहते हैं कि कैसे भी लगे देश में आग लगे, लेकिन लद्दाख में हिंसा कराने वाले सोनम वांगचुक के खिलाफ राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के तहत मामला दर्ज हो चुका है, वांगचुक को गिरफ्तार कर उनके खिलाफ भ्रष्टाचार की जांच शुरू कर दी गई है।

कांग्रेस की मंशा है लद्दाख जैसे छोटे-छोटे आबादी वाले प्रदेशों में हिंसा कराकर देश में अराजकता फैलाई जाए, जिससे देश टुकड़ों में बंट जाए, वैसे कांग्रेस का इतिहास रहा है कि वो जब तक सत्ता में रही तब तक सांप्रदायिक दंगे होते रहे, ताकि समाज बंटा रहे और उसकी कुर्सी बची रहे।
लेह में हुई हिंसक घटना ने सोनम वांगचुक को सवालों के घेरे में खड़ा कर दिया है, उनकी हीरो वाली छवि विलेन में तब्दील हो गई है, लेकिन वांगचुक की मुश्किलें तो अब और बढ़ने वाली हैं, सोनम वांगचुक समाजसेवा के नाम बड़ा धंधा करते हैं, एनजीओ भी चलाते हैं।

केके चौहान

कांग्रेस का जेन-जी एक्टिव हो गया है। लद्दाख में कांग्रेस के पार्षद और समर्थकों ने भाजपा के कार्यालय में आग लगा दी। पुलिस वाहनों को फूंक डाला। इससे राहुल गांधी और कांग्रेस के इरादे साफ समझे जा सकते हैं कि कैसे वो देश में आग लगाने की कोशिश कर रहे हैं। भाजपा नेता अमित मालवीय का सीधा आरोप है कि कांग्रेस के पार्षद फुंत्सोग स्टैंजिन त्सेपाग की हिंसा में मुख्य भूमिका रही है। भाजपा सांसद संबित पात्रा ने प्रेस कांफ्रेंस में एक तस्वीर दिखाई, जिसमें कांग्रेस पार्षद फुंत्सोग स्टैंजिन त्सेपाग प्रदर्शन के बीच हथियार लेकर घूमता नजर आ रहा है। भाजपा ने लद्दाख में जो हुआ उसे कांग्रेस का खेल बताया जा रहा है। लद्दाख की घटना के कुछ दिन पहले ही राहुल गांधी ने जेन-जी का आह्वान किया था कि वो लोकतंत्र बचाने, वोट चोरी रोकने के लिए आगे आए। ठीक एक हफ्ते के भीतर कांग्रेस नेता फुंटसॉग स्टैंजिन त्सेपाग और कांग्रेस समर्थक व समाजसेवी की आड़ में छिपे समाज विरोधी सोनम वांगचुक के जहरीले भाषणों ने लद्दाख को आग के हवाले कर दिया। यह हिंसा उस आंदोलन के बीच हुई, जिसके तहत सामाजिक व पर्यावरण कार्यकर्ता सोनम वांगचुक लद्दाख को पूर्ण राज्य का दर्जा देने की मांग कर रहे थे। वो कह रहे हैं कि लद्दाख को संविधान की छठीं अनुसूची में शामिल किया जाए। हिंसा के बाद गृह मंत्रालय ने बयान जारी कर दावा किया है कि सोनम वांगचुक ने अरब स्प्रिंग शैली के विरोध प्रदर्शनों और नेपाल में जेन-जी के हिंसक विरोध प्रदर्शनों का भड़काऊ उल्लेख करके भीड़ को हिंसा के लिए भड़काया। भड़काऊ भाषण की वजह से ही 24 सितंबर को लेह में हिंसक भीड़ ने भाजपा कार्यालय में आगजनी की, पुलिस वाहनों को फूंक दिया। पथराव में 30 से अधिक सुरक्षाकर्मी घायल हो गए। स्थिति काबू से बाहर होने पर पुलिस को आत्मरक्षा में गोली चलानी पड़ी, जिसमें चार लोगों की मौत हो गई। लगातार चुनाव में हार का सामना कर रहे राहुल गांधी सहित विपक्षी नेता अब यही चाहते हैं कि कैसे भी लगे देश में आग लगे। पुलिस ने सोनम वांगचुक के खिलाफ राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के तहत मामला दर्ज कर लिया है। तथाकथित समाजसेवी वांगचुक को गिरफ्तार कर उनके खिलाफ भ्रष्टाचार की जांच शुरू कर दी है।

बढ़ सकती है सोनम वांगचुक की मुस्किल

सोनम वांगचुक लद्दाख को पूर्ण राज्य का दर्जा दिए जाने की मांग को लेकर 15 दिन से अनशन पर बैठे थे, लेकिन हिंसा होते ही अनशन छोड़ कर भाग गए और शांति की अपील करने लगे। वो हिंसा के आरोपियों और कांग्रेस नेता का बचाव करने लगे। लेह में हुई हिंसक घटना ने सोनम वांगचुक को सवालों के घेरे में खड़ा कर दिया है। उनकी हीरो वाली छवि विलेन में तब्दील हो गई है। लेकिन वांगचुक की मुश्किलें तो अब और बढ़ने वाली हैं। सोनम वांगचुक समाजसेवा के नाम बड़ा धंधा करते हैं। एक एनजीओ भी चलाते हैं। एनजीओ के नाम से शैक्षिक संस्था खोलने के लिए 2018 में 150 एकड़ जमीन भी सरकार की तरफ उन्हें मिली थी। इसी सरकारी जमीन के घोटाले की जांच अब शुरू हो गई है। उनके एनजीओ को विदेशी फंडिंग की जांच के लिए सीबीआई लद्दाख पहुंच गई है। गृह मंत्रालय ने पर्यावरण एक्टिविस्ट सोनम वांगचुक के संस्थान स्टूडेंट्स एजुकेशनल एंड कल्चरल मूवमेंट ऑफ लद्दाख का विदेशी अंशदान (विनियमन) अधिनियम लाइसेंस रद्द कर दिया है। इसमें अधिनियम के कई उल्लंघनों का हवाला दिया गया है। सोनम वांगचुक की यह संस्था सांस्कृतिक और एजुकेशनल प्रोग्राम्स के लिए विदेशी फंड लेती थी। जो एफसीआरए के तहत रेजिस्टर्ड था। सरकार का आरोप है कि वांगचुक ने जन-आंदोलन की आड़ में न केवल कानून का उल्लंघन किया बल्कि विदेशी फंडिंग और निजी लाभ के लिए पैसों का गलत इस्तेमाल किया। उनके एनजीओ के खिलाफ जल्द ही प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) भी जांच शुरू कर सकती है। एनजीओ पर आरोप है कि उसने विदेशी चंदे की सही जानकारी नहीं दी और एफसीआरए कानून के नियमों का पालन नहीं किया। साथ ही विदेश से मिले फंड्स लौटाने का भी आरोप है। वांगचुक के हिमालयन इंस्टीट्यूट ऑफ अल्टरनेटिव्स लद्दाख को 2023-24 में दान में 6 करोड़ रुपये मिले। जो 2024-25 में बढ़कर 15 करोड़ रुपये से अधिक हो गए। संस्था के 7 बैंक खाते हैं, जिनमें से 4 घोषित नहीं किए गए। सोनम वांगचुक शायद भूल गए कि ये बदलता भारत है, यदि यहां आंदोलन के नाम पर हिंसा फैलाने की कोशिश करोगे तो बच नहीं पाओगे। वांगचुक गलत फहमी का शिकार हुए और कांग्रेस का मोहरा बन गए। क्योंकि कांग्रेस की मंशा है लद्दाख जैसे छोटे छोटे आबादी वाले प्रदेशों में हिंसा कराकर देश में अराजकता फैलाई जाए। जिससे देश टुकड़ों में बंट जाए। वैसे कांग्रेस का इतिहास रहा है कि वो जब तक सत्ता में रही तब तक सांप्रदायिक दंगे होते रहे। ताकि समाज बंटा रहे और उसकी कुर्सी बची रहे। राहुल गांधी और विपक्ष विदेशी ताकतों के इशारे पर जेन-जी के सहारे यह हथकंडा भी अपना रहा है।

लद्दाख में हुई हिंसा को विपक्ष ने जेन-जी आक्रोश बताने की कोशिश की, विपक्ष की मंशा है कि लद्दाख की घटना को बिहार चुनाव में भुनाया जाए, लेकिन पासा उलटा पड़ गया, हिंसा के हीरो वांगचुक रासुका में जेल चले गए, उनके भ्रष्टाचार की फाइल खुल गई, विदेशी फंडिग का लाइसेंस कैंसिल हो गया और विपक्ष व कांग्रेस के अरमानों पर पानी फिर गया।

भाजपा का आरोप है कि वांगचुक, गलतफहमी का शिकार होकर या जानबूझकर, कांग्रेस का मोहरे बन गए हैं। वांगचुक के नेतृत्व में हो रहे प्रदर्शनों को कांग्रेस हवा दे रही थी। ताकि भाजपा सरकार को बदनाम किया जा सके। 24 सितंबर, 2025 को हुई हिंसा के बाद ये आरोप और भी तीखे हो गए, जिसमें चार लोगों की जान चली गई थी। हालांकि वांगचुक ने भाजपा के इन आरोपों को सिरे से खारिज किया है। 25 सितंबर को उन्होंने स्पष्ट किया कि कांग्रेस का इस आंदोलन से कोई लेना-देना नहीं है। उन्होंने कहा कि उनका आंदोलन अराजनीतिक है और राजनीतिक दलों को चुनाव खत्म होने तक इससे दूर रहना चाहिए। वांगचुक का आरोप है कि भाजपा उन्हें बलि का बकरा बना रही है। सोनम वांगचुक ने दावा किया कि भाजपा नेता ने जिस तस्वीर को स्थानीय कांग्रेस पार्षद की तस्वीर बताकर हिंसा करने का आरोप लगाया गया, वो तस्वीर उनकी थी ही नहीं। किसी और की तस्वीर को कांग्रेस पार्षद की तस्वीर बताकर दोष मढ़ दिया गया। ऐसे में सवाल उठ रहा है कि जब सोनम वांगचुक का आंदोलन गैरराजनीतिक है तो वो कांग्रेस पार्षद को क्यों बचा रहे हैं? क्यों कांग्रेस पार्षद की पैरवी कर रहे हैं? कांग्रेस ने भी भाजपा के आरोपों का खंडन किया है। कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने कहा है कि भाजपा सरकार अपनी विफलताओं से ध्यान भटकाने के लिए ऐसे आरोप लगा रही है। इसके अलावा जम्मू और कश्मीर कांग्रेस ने यह भी स्पष्ट किया है कि वांगचुक या उनके परिवार का पार्टी से कोई संबंध नहीं है।

राहुल के दिमाग में राजशाही

राजशाही परिवार के युवराज राहुल गांधी कुछ ही वर्षो में 60 साल के होने वाले हैं। यानी वरिष्ठ नागरिक बन जाएंगे और वरिष्ठ नागरिक की पेंशन पाने के हकदार भी हो जाएंगे, लेकिन उनकी राजनीति जिस दोयम दर्जे की है उससे नहीं लगता कि राहुल गांधी कभी सीनियर सिटीजन के रूप में व्यवहार करेंगे। राजनीति में वो 20 साल पूरे कर चुके हैं, लेकिन राजनीति क्या होती है, कैसे होती है? इसकी समझ शायद उन्हें राजनीति के इतने लम्बे करियर में भी नहीं आई। उनके खानदान से तीन प्रधानमंत्री हुए हैं इसलिए वो लोकतंत्र का मतलब राजशाही मानते हैं। पहले दादा, फिर दादी और उसके बाद पापा पीएम बने। गांधी परिवार भारत का प्रभावशाली परिवार रहा है इसलिए खानदान के सदस्यों ने स्कूल कालेज के दर्शन किए बिना ही बड़ी बड़ी यूनिवर्सिटी के डिग्रियां हासिल कर ली। क्योंकि राहुल गांधी का जिस तरह के दोयम दर्जे का व्यवहार है, उनकी भाषा है, उनका मिजाज है वो प्रश्न तो पैदा करता ही है, कि क्या राहुल गांधी शिक्षित है भी? लेकिन अहंकारी हैं? उन्हें अहंकार इस बात का भी है कि वो देश पर राज करने वाले तीन प्रधानमंत्री के राजशाही खानदान से ताल्लुक रखते हैं। इसलिए एक दौर में उन्हें कांग्रेसी युवराज भी कहते थे। लेकिन 2014 में भ्रष्ट और तानाशाह गांधी परिवार से देश ने खुद को आजाद कर लिया और देश की बागडोर नरेंद्र मोदी को सौंप दी। मोदी ने पीएम बनने के बाद सत्ता सुख नहीं भोगा बल्कि देश को विकसित और आत्मनिर्भर बनाने में लगे हैं। इसलिए लगातार तीसरी बार देश ने उन्हें अपना प्रधानमंत्री चुना और गद्दारों व भ्रष्टाचारियों को सत्ता से दूर रखा। केंद्र में ही नहीं बल्कि राज्यों में भी जहां सपा, बसपा, कांग्रेस की सरकारें होती थी वहां भी भाजपा और एनडीए की सरकार बन गई। 2014 के बाद राज्यों के चुनाव हुए तो एक-एक कर भाजपा व एनडीए की सरकार बनाती चली गई। उत्तराखंड और उत्तर प्रदेश के साथ हरियाणा, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश में भाजपा ने सरकार रिपीट कर नया इतिहास रच दिया। मोदी में वो मैजिक है जो चुनाव की धार ही बदल देता है। इसलिए अकेले नरेंद्र मोदी को हटाने के लिए करीब 40 दलों ने मिलकर इंडिया गठबंधन बनाया, 2024 के लोकसभा चुनाव में हर हथकंडा अपनाया लेकिन सत्ता का मुंह नहीं देख पाए। इसलिए कांग्रेस सहित पूरा इंडिया गठबंधन सत्ता के लिए छटपटा रहा है। हर चुनाव में भाजपा विरोधी नारा लगाते हैं कि इस बार उनकी सरकार बन रही है, लेकिन जब नतीजे आते हैं तो सरकार बनाने का दावा करने वाले सदमें में चले जाते हैं। बिहार चुनाव करीब है लिहाजा एक बार फिर विपक्ष दावा कर रहा है कि इस बार बिहार में उसकी सरकार। बिहार चुनाव में जीत हासिल करने के लिए कांग्रेस सहित विपक्षी दल जेन-जी को भड़काना चाहते हैं। लद्दाख में हुई हिंसा को विपक्ष ने जेन-जी आक्रोश बताने की कोशिश की। विपक्ष की मंशा है कि लद्दाख की घटना को बिहार चुनाव में भुनाया जाए, लेकिन पासा उलटा पड़ गया। हिंसा के हीरो वांगचुक रासुका में जेल चले गए। उनके भ्रष्टाचार की फाइल खुल गई, विदेशी फंडिग का लाइसेंस कैंसिल हो गया और विपक्ष व कांग्रेस के अरमानों पर पानी फिर गया।

बदलाव

पुलिस चली चौपाल पर

मध्य प्रदेश पुलिस ने ऐसा प्रशिक्षण मॉडल बनाया है जिसमें प्रशिक्षुओं को मार्शल आर्ट्स सिखाई जा रही है, जो उनकी आत्मरक्षा और शारीरिक दक्षता को और बढ़ाएगा, यानी मध्य प्रदेश पुलिस एक ऐसे भविष्य के लिए अपनी पीढ़ी तैयार कर रही है जो न केवल कानून का रखवाला होगा, बल्कि समाज का संवेदनशील और सहायक अंग बनेगा।

डीजीपी कैलाश मकवाना

आलोक एम इंदौरिया
विश्लेषक व स्तंभकार

पुलिस का नाम जहन में आते ही एक बदमिजाज, सख्त, गाजीबाज, लाठीबाज और सरकारी गुंडे जैसी छवि नजरों के सामने तैरने लगती है। आज की तारीख में जब पुलिस और जनता के बीच की खाई को लेकर लगातार सवाल उठते रहते हैं, तब मध्य प्रदेश पुलिस का एक अभिनव प्रयास इस दिशा में नई उम्मीद जगाता है। पारंपरिक पुलिसिंग की सीमाओं से परे, अब खाकी केवल अपराध नियंत्रण तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि गांवों की चौपालों पर बैठकर वहां के लोगों की परेशानियों को समझेगी और सुलझाएगी। यह बदलाव मध्य प्रदेश पुलिस की ट्रेनिंग शाखा द्वारा शुरू किए गए 'विलेज विजिट, कम्युनिटी कनेक्टर' कार्यक्रम का हिस्सा है, जिसने पुलिस और ग्रामीण समुदायों के बीच एक सेतु बनाने की पहल की है। इसके लिए पुलिस ट्रेनिंग में एक क्रांतिकारी बदलाव किया गया है। यानी अब तक पुलिस प्रशिक्षण का मतलब था कठोर इनडोर और आउटडोर ड्रिल, कानून की मोटी किताबों का अध्ययन और अपराधों से निपटने की तकनीकें सीखना। लेकिन, मध्य प्रदेश पुलिस के डीजीपी कैलाश मकवाना और एडीजी ट्रेनिंग राजाबाबू सिंह की जोड़ी के मार्गदर्शन और कड़े प्रयासों से यह सोच पूरी तरह बदल गई है। उनका मानना है कि एक प्रभावी पुलिसकर्मी सिर्फ शारीरिक रूप से सक्षम नहीं होना चाहिए, बल्कि उसमें संवेदनशीलता और संवाद का हुनर भी होना चाहिए। इसी सोच के साथ प्रदेश के सभी सात पुलिस ट्रेनिंग स्कूल (पीटीएस) और इंदौर के पुलिस ट्रेनिंग कॉलेज (पीटीसी) ने अपने-अपने अधिकार क्षेत्र में आठ-आठ गांव गोद लिए हैं। यह पहली बार है जब प्रशिक्षु आरक्षियों को उनके नौ महीने के प्रशिक्षण के दौरान सिर्फ कैंपस तक सीमित न रखकर सीधे जनता के बीच भेजा जा रहा है। इसका मकसद सिर्फ 'कम्युनिटी पुलिसिंग' को बढ़ावा देना नहीं, बल्कि भावी पुलिसकर्मियों को जमीनी हकीकत से रू-ब-रू कराना भी है।

सवालों की सूची और गांवों का संवाद

यह कार्यक्रम सिर्फ खानापूर्ति नहीं है। पीटीएस और पीटीसी के पुलिस अधीक्षकों ने मिलकर एडीजी ट्रेनिंग से विचार-विमर्श करके एक विस्तृत सवालों की सूची तैयार की है। हर हफ्ते युवा आरक्षी गांवों में जाते हैं और लोगों से उनके जीवन, उनकी समस्याओं और उनके अनुभवों के बारे में बात करते हैं। उन्हें शिक्षा, स्वास्थ्य, पंचायती राज, भूमि विवाद, पानी, बिजली, राशन और यहां तक कि पशुपालन जैसे 27 से अधिक विभागों से संबंधित जानकारी इकट्ठा करने का दायित्व दिया गया है। यह डेटा न केवल उन्हें गांवों की समस्याओं की गहराई से समझने में मदद करेगा, बल्कि भविष्य में उन्हें मिलने वाली फील्ड पोस्टिंग के लिए भी तैयार करेगा। इस पहल के पीछे एक बड़ा उद्देश्य है पुलिस और जनता के बीच की दूरी कम करना है। जब एक वर्दीधारी गांव की चौपाल पर बैठकर ग्रामीणों से उनके मन की बात सुनेगा, तो विश्वास का एक नया अध्याय शुरू होगा। यह कार्यक्रम प्रशिक्षु आरक्षियों को न केवल विनम्रता सिखाएगा, बल्कि उन्हें यह भी बताएगा कि आम जनता से बात करने का सही सलीका और तरीका क्या होता है?

मध्य प्रदेश पुलिस के डीजीपी कैलाश मकवाना और एडीजी ट्रेनिंग राजाबाबू सिंह की जोड़ी के मार्गदर्शन और प्रयासों से सिस्टम को बदलने की पहल हुई है, उनका मानना है कि एक प्रभावी पुलिसकर्मी सिर्फ शारीरिक रूप से सक्षम नहीं होना चाहिए, बल्कि उसमें संवेदनशीलता व संवाद का हुनर भी होना चाहिए।

प्रशिक्षण का नया क्षितिज

यह नवाचार सिर्फ 'कम्युनिटी कनेक्ट' तक सीमित नहीं है। प्रशिक्षण के इस नए मॉडल में प्रशिक्षुओं को छह राज्यों की लोकल मार्शल आर्ट्स भी सिखाई जा रही है, जो उनकी आत्मरक्षा और शारीरिक दक्षता को और बढ़ाएगा। इस तरह मध्य प्रदेश पुलिस एक ऐसे भविष्य के लिए अपनी पीढ़ी तैयार कर रही है जो न केवल कानून का रखवाला होगा, बल्कि समाज का एक संवेदनशील और सहायक अंग भी बनेगा। भोपाल संभाग के जिन गांवों को इस कार्यक्रम के लिए चुना गया है, उनकी सूची भी जारी की गई है। इन गांवों में पुलिस की नियमित आवाजाही होगी, जिससे वहां के लोग अब वर्दी को डर की बजाय भरोसे की नजर से देखेंगे। यह एक छोटा सा कदम है, लेकिन इसके दूरगामी परिणाम हो सकते हैं। यह पुलिसिंग को एक नया अर्थ देगा, जहां पुलिसकर्मी सिर्फ 'पकड़ो और बंद करो' की सोच से बाहर निकलकर 'सुनो और समझो' की नीति पर काम करेंगे। यह कार्यक्रम सही मायनों में लोकतंत्र की नींव को मजबूत करेगा, जहां सरकार का एक अहम अंग सीधे जनता से जुड़कर उनकी परेशानियों को हल करने का प्रयास करेगा।

पुलिस का नया अध्याय

मध्य प्रदेश पुलिस आज सिर्फ कानून व्यवस्था बनाए रखने वाली संस्था नहीं है बल्कि समाज के हर पहलू से जुड़कर उसे बेहतर बनाने का माध्यम बन रही है। इस बदलाव का श्रेय डीजीपी कैलाश मकवाना को जाता है। जिनके प्रयासों ने तय पुलिसिंग के पारंपरिक ढांचे को तोड़कर एक आधुनिक, संवेदनशील और प्रभावी मॉडल पेश किया है। यूं तो उन्होंने कई नवाचारों को मध्य प्रदेश पुलिस में लागू किया है जिनमें से कुछ मुख्य नवाचारों को हम यहां प्रस्तुत कर रहे है। बेहद संवेदनशील आईपीएस अफसर में शुमार डीजीपी कैलाश मकवाना का चयन मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव ने उनकी काबिलियत के कारण किया था। निसंदेह मुख्यमंत्री मोहन यादव का ये चयन मध्य प्रदेश की जनता के हित में रहा। कैलाश मकवाना ने भी पदभार संभालते ही पुलिस विभाग में कई क्रांतिकारी बदलावों की शुरुआत की। उनकी सबसे प्रशंसित पहलों में से एक 'नशे से दूरी है बहुत जरूरी' अभियान है। इस अभियान ने देश ही नहीं बल्कि विश्व का ध्यान मध्य प्रदेश की ओर खींचा। यह अभियान सिर्फ एक नारा नहीं, बल्कि एक व्यापक रणनीति थी जिसने प्रदेश में नशे के खिलाफ एक मजबूत जंग छेड़ दी है। युवाओं को नशे के खतरों से जागरूक करने, उन्हें पुनर्वास में मदद करने और समाज को इस समस्या के प्रति सचेत करने के इस प्रयास को न केवल राष्ट्रीय स्तर पर, बल्कि लंदन में एक प्रतिष्ठित समारोह में सम्मान मिलने से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी सराहना मिली है। यह दिखाता है कि पुलिस सिर्फ अपराध नियंत्रण तक सीमित नहीं है, बल्कि समाज सुधार का एक अभिन्न अंग भी है। नशे के खिलाफ डीजीपी कैलाश मकवाना की लड़ाई भोपाल से चलकर सुदूर ग्रामीण अंचल तक पहुंची और नशे पर रोक लगाने में बेशक उतनी कामयाबी नहीं मिली हो, लेकिन नशे को लेकर बच्चे-बच्चे में जो अवेयरनेस आई है उसके परिणाम निकट भविष्य में मिलेंगे इसमें संदेह नहीं है। इसके अलावा विभाग में पारदर्शिता लाने के लिए डीजीपी मकवाना ने एक सख्त तबादला नीति लागू की है। एक ही थाने में कई सालों से जमे हुए पुलिसकर्मियों का स्थानांतरण करके उन्होंने अनुचित गतिविधियों पर लगाम लगाई है। इस कदम ने न केवल पुलिसकर्मियों के बीच निष्पक्षता की भावना पैदा की, बल्कि उनकी कार्यक्षमता भी बढ़ाई, जिससे जनता का पुलिस पर विश्वास मजबूत हुआ। डीजीपी मकवाना का मानना है कि प्रभावी पुलिसिंग की नींव मजबूत विवेचना (जांच) में होती है। इसी सोच के साथ उन्होंने पुलिस अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए आधुनिक जांच तकनीकों का प्रशिक्षण अनिवार्य कर दिया है, ताकि हर मामले में न्याय सुनिश्चित हो सके। इन तबादलों में डीजीपी मकवाना इतने सख्त थे कि पूरे मध्य प्रदेश में एक भी सिफारिश उन्होंने स्वीकार नहीं की और जिसे जहां तबादला किया उसको वहां जाना पड़ा।

प्रशिक्षण में क्रांति

डीजीपी मकवाना के नेतृत्व में, एडीजी ट्रेनिंग राजाबाबू सिंह ने पुलिस प्रशिक्षण को पूरी तरह से आधुनिक बनाने का जिम्मा उठाया। नए प्रशिक्षु आरक्षक रामायण का पाठ भी सीखेंगे जिसे जहां उनके मन को शांति मिले वही भगवान राम की 14 वर्ष के वनवास में किए गए संघर्ष से सबक ले सकेंगे। श्रीराम का संघर्ष इन प्रशिक्षुओं को मुश्किल हालातों में लड़ने के लिए संबल प्रदान करेगा। डीजीपी मकवाना का जो काम याद रखा जाएगा वह गंभीर अपराधों की जांच में सुधार और जिम्मेदारी तय करने के लिए उनके द्वारा मुख्यालय से निकट भविष्य में जारी होने वाली नई एसओपी है जिसका मसौदा तैयार है। इसके तहत हर स्तर के अफसर की जिम्मेदारी तय होगी और जांच में देरी या लापरवाही पर अफसर जिम्मेदार ठहराए जाएंगे। इस एसओपी के अनुसार हर जिले के एसपी को हर माह कम से कम चार गंभीर अपराधों की जांच खुद करनी होगी यदि ऐसे मामलों की संख्या कम है तो अन्य गंभीर अपराधों का उन्हें चयन करना पड़ेगा। पर्यवेक्षण अधिकारी विवेचना में किसी भी गलती के लिए जिम्मेदार होंगे और विवेचना पूरी होने पर केस डायरी में स्पष्ट अभीमत दर्ज करना अनिवार्य होगा। इससे एसपी, एडिशन एसपी और डीएसपी सहित विवेचना अधिकारियों की जिम्मेदारियां बढ़ जाएगी और अपराधों पर अंकुश लगेगा।

- **ऐसा पहली बार है जब प्रशिक्षु आरक्षियों को उनके नौ महीने की ट्रेनिंग के दौरान सिर्फ कैंपस तक सीमित न रखकर सीधे जनता के बीच भेजा जा रहा है, इसका मकसद सिर्फ 'कम्युनिटी पुलिसिंग' को बढ़ावा देना नहीं, बल्कि भावी पुलिसकर्मियों को जमीनी हकीकत से रू-ब-रू कराना है।**
- **मध्य प्रदेश पुलिस आज सिर्फ कानून व्यवस्था बनाए रखने वाली संस्था नहीं है, बल्कि समाज के हर पहलू से जुड़कर उसे बेहतर बनाने का माध्यम बन रही है, इस बदलाव का श्रेय डीजीपी कैलाश मकवाना को जाता है, जिनके प्रयासों ने तय पुलिसिंग के पारंपरिक ढांचे से इतर एक आधुनिक, संवेदनशील व प्रभावी मॉडल तैयार किया है।**

संसाधनो की बढ़ोत्तरी

मध्य प्रदेश में डायल 100 की सुविधा जारी थी लेकिन कैलाश मकवाना के प्रयासों से अब डायल 112 कहलाती है इसके कारण डेढ़ सौ से भी अधिक अत्यधिक नई गाड़ियों का काफिला मध्य प्रदेश पुलिस बेड़े में शामिल हुआ है, जिन्हें जिलेवार आबादी के हिसाब से और थानों के हिसाब से अलॉट किया है। यह अत्यधिक वाहन तत्काल रिस्पांस देंगे और अपराधों के नियंत्रण में कारगर साबित होंगे। निश्चित रूप से कैलाश मकवाना के प्रयास बेशक एक छोटा सा कदम हो सक्ता है, लेकिन इसके दूरगामी परिणाम बेहतर और अच्छे होंगे और लोग वर्दी को डर की बजाय भरोसे की नजर से देखेंगे। डीजीपी कैलाश मकवाना के प्रयासों से मध्य प्रदेश पुलिस पूरे देश के लिए एक प्रेरणा बन रही है और क्योंकि उनकी कर्तव्य परायणता बेमिसाल है जिसे उनके कार्यकाल के बाद भी याद रखा जाएगा। ●

एडीजी ट्रेनिंग राजाबाबू सिंह

व्यंग्य

आंख बंद डिब्बा गायब

मुझे गुप्त सूचना मिली कि एक आतंकी हाइड्रोजन बम फोड़ने वाला है, मैंने गुप्त सूचनाकार से कहा कि भाई हमे वहां ले चलो जहां आतंकी के बम फोड़ने का लाइव प्रसारण हो रहा है, अगले दिन हम कोटला जा पहुंचे वो भी 9 बजे, 10 बजे हाइड्रोजन बम फटने का समय मुकर्रर था, कोटला पहुंचे तो पता चला बम फूटने का समय आगे खिसका कर 10 की जगह 11 बजे हो गया है।

प्रदीप डी भट्ट
व्यंग्यकार

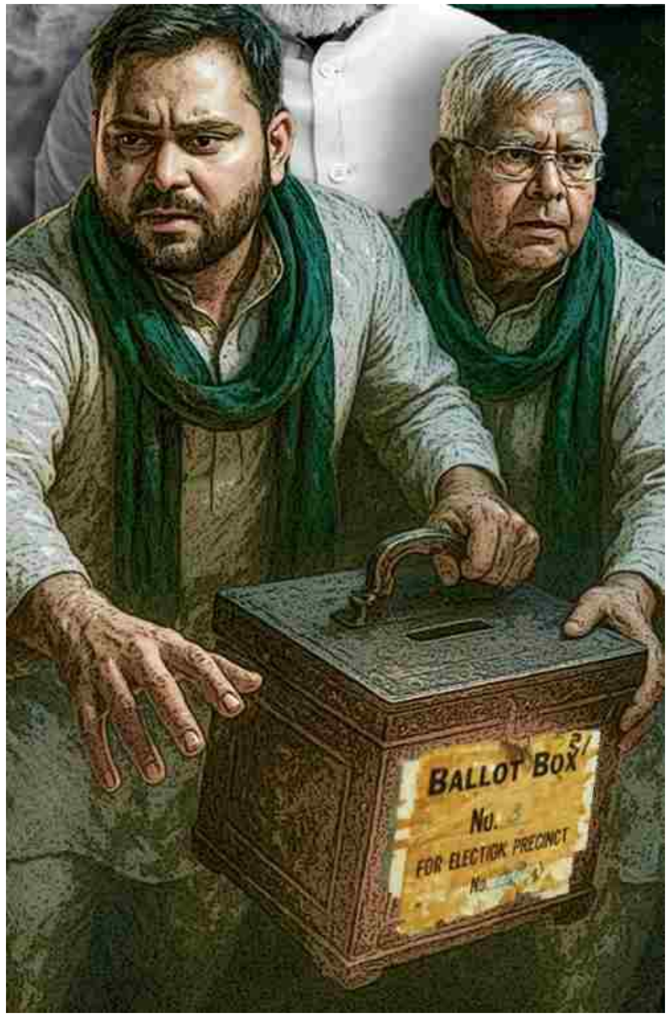

टीवी पर वोट चोर गद्दी छोड़... का नारा सुनते सुनते कानों ने अपनी जगह से उखड़ते हुए बिल्कुल दोनों आंखों के बीच आकर कहा अरे सुनो राहुल गांधी की नौटंकी से हमारे कानों के सिर में दर्द हो रहा है। आखिर हम भी एक हद तक ही डेसिबल शोर झेल सकते हैं। तभी मेरे पड़ोसी ने पास आकर ताना मारा 'बड़े व्यंग्यकार बने फिरते हो सुनो हमें अभी अभी गुप्त सूचना प्राप्त हुई है कि कल एक आतंकी बाबा हाइड्रोजन बम फोड़ने वाला है।' मैंने भी गुप्त सूचनाकार से कहा कि भाई हम पे थोड़ा अहसान करो और वहां ले चलो जहां आतंकी बाबा के बम फोड़ने का लाइव प्रसारण हो रहा है। अगले दिन हम कोटला जा पहुंचे वो भी 9 बजे, 10 बजे हाइड्रोजन बम फटने का समय मुकर्रर था। कोटला पहुंचे तो पता चला बम फूटने का समय आगे खिसका कर 10 की जगह 11 बजे हो गया है। बस फिर क्या था हमने आतंकी बाबा के मुख्यालय के हॉल में टहलना शुरू कर दिया। तभी हॉल में टंगी एक फोटो ने हमें खोपचे में आने का इशारा किया। हमने इधर-उधर देखा तो फोटो बोली वोट चोरी का हाइड्रोजन बम फूटता देखने आए हो। हमने हां में मुंडी हिलाई और परिचय जानना चाहा तो तस्वीर ने नाम पट्टिका से धूल हटाने को कहा, हमने धूल हटाई तो मटमैले कलर में 'एलन ऑक्टेवियन ह्यूम' लिखा दिखा। हमने मस्ती में पूछ लिया तुम यहां काहे टंगे हो रे। तस्वीर फिर बोली मैं एक ब्रिटिश सिविल सेवी, एक पक्षी विज्ञानी और वनस्पति विज्ञानी था। मति मारी गई थी मेरी जो मैंने भारतीयों और ब्रिटिश के बीच एक सेफ्टीवाल्व के रूप में कार्य करने के लिए 28 दिसंबर 1885 में 72 लोगों (भाई साहब आप 72 हूरें न पढ़ लेना, हां नई तो) के साथ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना कर डाली थी।

चू चपड़ करने वाले का राम नाम...

तस्वीर ने एक लम्बा पॉज लिया फिर बोली कांग्रेस पार्टी के उद्भव से लेकर आज तक न जाने कितने अध्यक्ष बने या बनाए गए कभी चोरी से कभी सीना जोरी से, लेकिन मजाल है किसी दूसरे कांग्रेसी नेता ने चूं चपड़ की हो और करते भी कैसे कुछ दिनों या महीनों में ही चूं चपड़ करने वाले का नाम 'राम नाम सत्य' में जो विलीन हो जाने का खतरा रहता था। कभी ट्रक के नीचे कभी होटल के कमरे में खूबसूरत लाश के रूप में तो कभी हवाई जहाज में उल्टे लटके हुए। वैसे कुछ भी कहो हवाई जहाज में मरने का अलग ही मजा है, लेकिन इसके लिए आपके पास कुछ खुफिया राज होने चाहिए ऐसे ही कोई इत्ते महंगे हवाई जहाज की बलि थोड़े दी जाएगी, किसी ऐरे-गेरे के लिए। इसके लिए ऐसे-वैसे और न जाने कैसे-कैसे कर्मों कुकर्मों की आह लेनी पड़ती है। वैसे खतरा मतलब वो जो सफेद बोर्ड पर एक नरमुंड पर लाल रंग से क्रॉस का निशान बना होना। बात समझ में आई या नहीं। अब भला किसको शौक होगा जो उस नरमुंड की जगह अपना मुंड लटकता देखना चाहेगा। खैर असली वोट चोरी या तुम उसे डकैती कहना चाहो या लूट कह लो। मैं तुम्हें आंकड़े देता हूं लेकिन शर्त इत्तीसी है कि तुम जाते-जाते मुझे यहां से चुरा कर ले जाना। मैंने हां में फिर से मुंडी हिलाई तो तस्वीर बड़बड़ाते हुए बोली चलो कागज पेंसिल उठाओ और लिखना शुरू करो।

21 मई 1991 में राजीव गांधी की हत्या हुई तो चुनाव आयोग ने राजीव गांधी की सीट पर चुनाव कैंसिल नहीं किया बल्कि पूरे देश के चुनाव को 22 दिन आगे बढ़ा दिए ताकि कांग्रेस राजीव गांधी की अस्थियों को देश में लेकर घूम सके, अब खुद ही सोचो कांग्रेस तो चुनाव आयोग को भी जेब में रखकर घूमती थी।

वोट चोरी खानदानी पेशा

प्वाइंट नंबर एक-देखो भय्या आजाद भारत में वोट चोरी नहीं बल्कि वोट डकैती डाली गई थी। 1946 में 15 कांग्रेस प्रांतीय समितियों को कांग्रेस अध्यक्ष का चुनाव करना था 15 में से 12 ने सरदार पटेल को वोट दिया 3 ने बहिष्कार किया और नेहरू को वोट की जगह मिला बाबा जी का ठुल्लू, लेकिन अध्यक्ष कौन बना नेहरू। इससे सिद्ध होता है खुदा मेहरबान तो गधा पहलवान।

प्वाइंट नंबर दो-1951 में जम्मू कश्मीर में चुनाव डिक्लेयर हुए। नेहरू, शेख अब्दुल्ला को मुख्यमंत्री बनाना चाहते थे। सीट बंटवारे में कश्मीर घाटी को 43 व जम्मू रीजन को 30 और लद्दाख को केवल 2 सीट दी गईं। कांग्रेस ने चुनाव न लड़ने का फैसला किया, ताकि नेशनल कॉफ्रेंस आसानी से चुनाव जीत जाए। तीसरी पार्टी थी प्रजा परिषद चूंकि उसका घाटी में कोई जनाधार नहीं था इसलिए प्रजा परिषद् ने जम्मू रीजन में चुनाव लड़ने का फैसला किया। लेकिन कांग्रेस की दखल पर तत्कालीन चुनाव आयुक्त ने नॉमिनेश में 13 उम्मीदवारों के पर्चे खारिज कर दिए इस पर प्रजा परिषद ने पहले जम्मू-कश्मीर में फिर दिल्ली में प्रोटेस्ट किया और नेहरू को इस गड़बड़ी की चिट्ठी लिखी, लेकिन जब कोई एक्शन नहीं हुआ तो प्रजा परिषद ने चुनाव बहिष्कार की घोषणा कर दी।

प्वाइंट नंबर तीन-बाबा साहब अंबेडकर नॉर्थ मुंबई से 1952 में 14 हजार वोटों से हारे और वोट कैंसिल कराए गए 78,000। जय प्रकाश नारायण ने भी कहा बहुत बड़ी गड़बड़ है। अब तनिक आप ही सोचो 'दया कुछ तो गड़बड़ है,' से पहले भी कांग्रेस कुछ गड़बड़ है, वामपंथियों कुछ गड़बड़ है चल रहा था। इसलिए डंके की चोट पर अंबेडकर ने कोर्ट में केस फाइल किया और कांग्रेस और वामपंथियों को कटघरे में खड़ा किया।

प्वाइंट नंबर चार-1952 में रामपुर में मौलाना आजाद चुनाव लड़े, मगर बीस हजार वोटों से हार गए, रिटर्निंग ऑफिसर ने रिजल्ट भी डिक्लेयर कर दिया, तभी नेहरू ने यूपीर के सीएम गोविंद वल्लभ पंत को फोन लगाकर कहा कि मौलाना आजाद चुनाव नहीं हारने चाहिए। पंत जी बोले महाराज डीएम रिजल्ट डिक्लेयर कर चुका है। तो नेहरू जी ने तुरंत धमकी दी अगर मौलाना की हार हुई तो तुम्हारी कुर्सी गई। पंत जी ने आनन-फानन में डीएम को फोन लगाया और बोला अगर मौलाना हारा तो हम दोनों की कुर्सी जाना तय है। कुछ करो, फिर डीएम ने जीते हुए उम्मीदवार के बक्से से वोट निकालकर मौलाना के बक्से में डाले और लो जी, मौलाना जीत गए। गांधी जी की किताब सत्य के प्रयोग का सबसे उम्दा उदाहरण...।

प्वाइंट नंबर पांच-कैलाश नाथ वांचू जिनके पास नॉर्मल लॉ की डिग्री भी नहीं थी कांग्रेस ने 24 अप्रैल 1967 में उन्हें चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया बना दिया। भाई साहब खुद ही सोचो ऐसे-ऐसे कारनामे कांग्रेस के अलावा और कोई कर सके है क्या? अब इसे वोट चोरी तो नहीं संवैधानिक लूट कह सकते हैं।

प्वाइंट नंबर छह-रायबरेली चुनाव में सो कॉल्ड आयरन लेडी ने वोट की चोरी नहीं की वरन डकैती डाली, इलाहाबाद हाईकोर्ट ने 1975 में राज नारायण की याचिका पर 1971 के चुनाव का संज्ञान लिया और परिणाम रद्द कर दिया। बस आयरन लेडी को गुस्सा आ गया और 25 जून 1975 को देश में इमरजेंसी थोप दी। गोपाल स्वामी मुख्य चुनाव आयुक्त ने नवीन चावला की लिखित शिकायत दर्ज कराई कि चुनाव आयोग की महत्वपूर्ण सूचनाएं चावला द्वारा कांग्रेस को लीक की जा रही हैं। कांग्रेस ने कहा चावला हमारा बच्चा है ये तो यूं ही दुग्ध पीएगा। मतलब वोट चोरी चुनाव आयोग के एक लपाड़े के द्वारा नही बल्कि आधा चुनाव आयोग ही चोरी हो गया।

प्वाइंट नंबर सात-जस्टिस बहरुल इस्लाम असम हाईकोर्ट के जज पहले इस्तीफा देते हैं फिर कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़ते हैं, लोकसभा चुनाव कैंसिल हो जाता है तो फिर उन्हें राज्य सभा भेजा जाता है बाद में इस्लाम मियां इस्तीफा देते हैं फिर उन्हें सुप्रीम कोर्ट का जज बना दिया जाता है। अब लगाते रहो हिसाब ये चोरी है, लूट है या डकैती।

प्वाइंट नंबर आठ-जब 21 मई 1991 में राजीव गांधी की हत्या हुई तो चुनाव आयोग ने राजीव गांधी की सीटपर चुनाव कैंसिल नहीं किया बल्कि पूरे देश के चुनाव को 21-22 दिन आगे बढ़ा दिया ताकि कांग्रेस राजीव गांधी की अस्थियों को देश में लेकर घूम सके। अब खुद ही सोचो जो पार्टी चुनाव आयोग को जेब में रखकर घूमती थी वो आज चुनाव आयोग के पीछे हाथ धोकर पड़ी है। अधीर रंजन चौधरी जो कांग्रेस के पिछले एलओपी रह चुके हैं खुद कांग्रेस से आजाद होकर बनी टीएमसी यानी तुड़ी मुड़ी कांग्रेस पर आरोप लगा रहे हैं कि ममता नामक दीदी 35-40 लाख फर्जी वोट लिए घूम रही है। कर्नाटक के एन राजन्ना कांग्रेसी होते हुए कांग्रेस लीडर राहुल गांधी पर वोट चोरी के आरोप लगा रहे हैं। तर्क दे रहे हैं कि कर्नाटक में यदि वोट चोरी हुई है तो कांग्रेस कर्नाटक में कैसे जीती।

कैलाश नाथ वांचू जिनके पास नॉर्मल लॉ की डिग्री भी नहीं थी कांग्रेस ने 24 अप्रैल 1967 में उन्हें चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया बना दिया, भाई साहब खुद ही सोचो ऐसे-ऐसे कारनामे कांग्रेस के अलावा और कोई कर सके है क्या? अब इसे वोट चोरी तो नहीं संवैधानिक लूट कह सकते हैं।

बालू जी का खेला ' '

चारा चोर का टाइटल गले में लटकाए घूम रहे ललुआ से जब एबीसी के पत्रकार ने पूछा कि बालू जी जहां आप जीतने की हालत में होते हैं वहां आप जीतते हैं कोई बात नहीं, लेकिन जहां सबको पता है आप हारेंगे वहां कैसे जीतते हो बालू जी, सुनों भैय्या जी 'आंख बंद डिब्बा गायब।' राजशाही खानदान के होनहार दत्तात्रेय ब्राह्मण और फिरोज खान के पोते राहुल गांधी खुद नेशनल हेराल्ड चोरी में जमानत पर घूम रहे हैं और वोट चोरी का वाहियात इल्जाम चुनाव आयोग व मोदी सरकार पर लगा रहे हैं। उस पर बाकायदा पीपीटी प्रेजेंटेशन तैयार कर सो-कॉल्ड मीडिया के सामने पेश करते हैं। अब भईया जब उस प्रेजेंटेशन को अपलोड करने का रियल टाइम चैक किया गया तो पता चला ये तो म्यांमार से अपलोड होकर आया है। मतलब आंकड़ा खुद का चोरी हुआ अब कह रहा है, हाइड्रोजन बम फोड़ूगा। अब उनके ही गैंग के मेंबर हाथ जोड़ रहे हैं, रहने दे भाई तेरे बसका नहीं है। क्यों बेइज्जती में दाग लगवाने पर तुला है। चल हवा आने दे। राहुल गांधी के वोट चोरी के झांसे में आकर पता नहीं कांग्रेस के किस भक्त ने मद्रास हाई कोर्ट में अर्जी देकर कहा कि कोर्ट चुनाव आयोग को निर्देश दे। भाई साब पहले चौकीदार चोर पे सुप्रीम हंटर खाकर भी ये लकड़बग्घे सुधरे नहीं। कोर्ट तो कोर्ट छ्हरी वो भी हाई वाली, लो आ गया गुस्सा वो भी हाई वाला, पहले याचिकाकर्ता को ढंग से रगड़ा फिर एक लाख का जुर्माना ठोक दिया। अब वो बंदा सोच रहा है नमाज बख्शवाने गया था ससुरा रोजा गले पड़ गया।

एक सो कॉल्ड सोफिलोजीस्ट संजय कुमार जिनके ट्वीट से ही कांग्रेस ने वोट चोरी का फंडा विकसित किया। वो संजय कुमार देश से माफी मांग चुके हैं कि डाटा समझने में गलती हुई है, ये एक एरर है। अब इतना लम्बा एरर हुआ कैसे, हुआ तो पढ़ा कैसे और पढ़ा तो किसने इसे समझा। मतलब संजय कुमार महाभारत के संजय बनने की कोशिश में संजय एरर बन गए। सच्चाई ये है कि ये सारी कारगुजारी 140 साल की बूढ़ी कांग्रेस को जवान बनाने लिए थी, लेकिन कांग्रेस के युवराज कभी हाइड्रोजन कभी नाइट्रोजन बम को फुस्सी बम बनाकर फोड़ रहे हैं जिससे कांग्रेस परमानेंट कोमा में चली जाए। और भैय्या अंत में वोट चोरी के अलावा कांग्रेस जाति चोरी में भी बड़ी माहिर है। अब देखो ने जवाहर लाल कौल (इससे पहले के इतिहास में जाऊंगा तो कोई अब्दुल निकलेगा ये विषय अलग है कि उस अब्दुल के दादा किशन लाल ही होंगे) जवाहर लाल नेहरू हो गए, किसी ने पूछा कैसे? फिरोज खान फिरोज गांधी हो गए। एंटोनियो माइनो सोनिया गांधी, प्रियंका गांधी वाड्रा हो गईं, लेकिन भाई साहब गांधी सरनेम को पकड़ के रक्खा हुआ है आखिर भविष्य वाड्रा में थोड़े ही है। अगर भविष्य है तो वो है गांधी में। गांधी भी सोच रहे होंगे, अमा क्या सोच रहे होंगे अपना सिर धुन रहे होंगे। ●

सपा नेता ने कराया उपद्रव ?

उत्तराखंड के काशीपुर में भी ‘आई लव मोहम्मद’ जुलूस के दौरान कट्टरपंथियों और सपा नेता नदीम ने उपद्रव किया, देवभूमि उत्तराखंड में इस तरह का उपद्रव सरकार और सिस्टम को खुली चुनौती है, हालांकि सीएम पुष्कर सिंह धामी ने उपद्रवियों का सही से इलाज करने की पुलिस और प्रशासन को खुली छूट दे रखी है।

डा.वीरेंद्र पुष्पक
वरिष्ठ पत्रकार

आई लव मोहम्मद’ से जुड़े विवाद को लेकर देशभर में जगह-जगह इस्लामी कट्टरपंथियों की उन्मादी भीड़ हिंसक प्रदर्शन कर रही है। उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड और गुजरात समेत देश के कई राज्यों में इससे जुड़े प्रदर्शनों के दौरान हिंसा की गई है। इसकी शुरुआत कानपुर में दर्ज की गई एक एफआईआर से हुई है। इसके बाद अलग-अलग शहरों में पुलिस पर पथराव किए गए और जुलूस में सरेआम ‘सर तन से जुदा’ के नारे लगाए गए हैं। वहीं बरेली में एक मौलाना ने तो इस विवाद में पुलिस इंस्पेक्टर को जान से मारने की धमकी तक दे दी है। बरेली में ‘आई लव मोहम्मद’ लिखे पोस्टर हटाने की कार्रवाई पर पुलिस और मुस्लिम समुदाय आमने-सामने आ गए थे। इत्तेहाद-ए-मिल्लत काउंसिल के राष्ट्रीय महासचिव डॉ. नफीस खान ने मौके पर पहुंचकर खुलेआम इंस्पेक्टर को जान से मारने की धमकी दे दी थी। नफीस का यह वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया, जिसमें वह ‘तेरे हाथ काट लूंगा, तेरी वर्दी उतरवा दूंगा’ कहता नजर आ रहा है। देश के दूसरे राज्यों की ही तरह उत्तराखंड के ऊधमसिंह नगर जिले के काशीपुर में भी ‘आई लव मोहम्मद’ जुलूस के दौरान इस्लामिक कट्टरपंथियों और समाजवादी पार्टी के नेता व कार्यकर्ताओं ने उपद्रव किया। हालांकि पुलिस ने जल्द ही स्थिति काबू में कर ली और उपद्रवियों के खिलाफ सख्त एक्शन लेते हुए सपा नेता नदीम अख्तर सहित बड़ी संख्या में उपद्रवियों को गिरफ्तार कर लिया है। देवभूमि उत्तराखंड में इस तरह का उपद्रव सरकार और सिस्टम को खुली चुनौती है। हालांकि सीएम पुष्कर सिंह धामी ने उपद्रवियों का सही से इलाज करने की पुलिस और प्रशासन को खुली छूट दे रखी है।

डेमोग्राफी चेंज का असर

उत्तराखंड में मुस्लिम आबादी राज्य गठन के बाद 2001 की जनगणना के मुताबिक करीब 1 लाख थी जो 2011 में बढ़कर 14 लाख से ज्यादा हो चुकी है। यानी 14 गुना आबादी बढ़ चुकी है। देवभूमि में मुस्लिम आबादी बढ़ने के साथ डेमाग्राफी भी चेंज हुई है। देवभूमि की डेमोग्राफी चेंज करने में कांग्रेस की बड़ी भूमिका रही है। कांग्रेस ने वोट बैंक बढ़ाने के लिए यूपी, बिहार, पश्चिम बंगाल के अलावा बांग्लादेशियों को राहिंग्यों को पहाड़ों पर बसा दिया। अब डेमोग्राफी चेंज होने के नतीजे सामने आने लगे हैं। 21 सितंबर की रात समाजवादी पार्टी के नेता नदीम अख्तर ने अलीखान मोहल्ले में करीब 400-500 इस्लामी कट्टरपंथियों के साथ मिलकर एक सभा की थी। सभा के बाद भीड़ ने अचानक बैनर और पोस्टरों के साथ बगैर प्रशासन की अनुमति के जुलूस निकाला। भीड़ ने ‘आई लव मोहम्मद’ के नारे लगाए और वाल्मीकि बस्ती से होते हुए शहर की तरफ बढ़ने लगे। पुलिस ने जुलूस को रोकने की कोशिश की तो सपा नेता नदीम अख्तर की पुलिस से नौकझोंक हो गई। भीड़ को साथ देख नदीम ने नौजवानों को भड़का दिया जिससे कट्टरपंथियों का झुंड बेकाबू हो गया। कट्टरपंथियों ने पुलिस पर पथराव किया, लाठी से पीटा और वर्दी तक फाड़ दी। क्योंकि भीड़ के मुकाबले पुलिसकर्मियों की संख्या न के बराबर थी। इसलिए कट्टरपंथियों ने पुलिस वालों को दौड़ा-दौड़ा कर पीटा, सरकारी वाहनों में तोड़फोड़ कर आग लगाने की कोशिश की। सरकारी संपत्ति को नुकसान पहुंचाया। ये वक्त कट्टपंथी उपद्रवियों का था, लेकिन जैसे ही फोर्स बढ़ी और सख्ती बरती गई तो सारे के सारे कट्टरपंथी उपद्रवी तितर बितर हो गए। पुलिस ने मुख्य साजिशकर्ता समाजवादी पार्टी के नेता नदीम अख्तर समेत 7 इस्लामी कट्टरपंथियों को गिरफ्तार कर लिया है। इनके अलावा अज्ञात लोगों के खिलाफ काशीपुर कोतवाली के एसएसआई जोशी ने भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा 190, 191(2), 191(3), 232, 121(1), 132, 221, 324(3), 351(2) और 352 के तहत एफआईआर दर्ज कराई है। रिपोर्ट में सपा नेता नदीम अख्तर को मुख्य आरोपी बनाया है। धर्मनगरी काशीपुर में उपद्रव कराने वाला सपा नेता नदीम अख्तर और उसके गुर्गे शायद भूल गया कि उत्तराखंड में भाजपा की पुष्कर सिंह धामी सरकार है। जो लगभग यूपी के योगी आदित्यनाथ के पदचिह्नों पर चलती है। कानून व्यवस्था से खेलने वालों का इलाज करना जानती है। वो चाहे काशीपुर में ‘आई लव मोहम्मद’ जुलूस के दौरान पुलिस पर हमला करने वाले कट्टरपंथी हों या हल्द्वानी के वनभूलपूरा में अवैध मदरसे पर बुलडोजर की कार्रवाई के दौरान हिंसा फैलाने वाले हों। धामी सरकार ने हिंसा और उपद्रव करने वालों के इलाज की पूरी व्यवस्था कर रखी है। काशीपुर में उपद्रव की खबर जैसे ही मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी तक पहुंची, उन्होंने ऊधमसिंह नगर के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक को सीधे लाइन पर ले लिया और स्पष्ट रूप से कह दिया कि अराजकता किसी कीमत पर बर्दाश्त नहीं होगी। लिहाजा पुलिस कप्तान मणिकांत मिश्र और एडीएम पंकज उपाध्याय मैदान में उतरे। उपद्रव करने वालों को घरों से निकाल निकाल कर पुलिस ने खातिरदारी शुरू कर दी।

कट्टरपंथियों की ‘खातिरदारी’

एसएसपी मणिकांत मिश्रा के नेतृत्व में उपद्रवियों की धरपकड़ के लिए छापेमारी कर घर-घर तलाशी शुरू की गई। इलाके में पीएसी तैनात कर दी गई। प्रशासनिक टीम ने दर्जनों बकायेदार उपद्रवियों के घरों के बिजली कनेक्शन काट दिए और पूरे क्षेत्र में अतिक्रमण विरोधी अभियान चलाकर बुल्डोजर से अवैध कब्जे ध्वस्त करते हुए उपद्रवियों को साफ संदेश दिया कि पुलिस पर हमला करने वालों के खिलाफ सख्त कानूनी धाराएं लगाई गई हैं। क्योंकि मुख्यमंत्री धामी का साफ कहना है कि उत्तराखंड की अस्मिता और देवभूमि की पवित्रता के साथ किसी भी प्रकार का खिलवाड़ बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। यह केवल मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी का बयान नहीं बल्कि उनकी सरकार की ठोस नीति है। धामी सरकार ने यह भी साफ कर दिया है कि उपद्रवियों के लिए उत्तराखंड की पवित्र धरती पर कोई जगह नहीं है। इसलिए पुलिस ने कट्टपंथियों को उनके घरों से निकाल कर सरेआम ‘खातिरदारी’ की। धामी सरकार को कट्टरपंथियों ने छेड़ ही दिया है तो अब धामी उपद्रव करने वालों को छोड़ने वाले नहीं हैं। पुलिस का एक्शन केवल गिरफ्तारी तक ही सीमित नहीं है। बल्कि नगर आयुक्त की अगुवाई में अलीखान मोहल्ले में किए गए अतिक्रमण पर बुलडोजर चलाने से लेकर और बिजली विभाग के अभियंताओं द्वारा बकाएदारों के कनेक्शन काटने तक पहुंच गया। यही नहीं किसी भी प्रकार की अप्रिय घटना को रोकने और लोगों में सुरक्षा का संदेश पहुंचाने के लिए एसएसपी, एएसपी, एडीएम, एसडीएम और भारी पुलिस बल ने फ्लैग मार्च निकाला। साथ ही घुसपैठियों पर शिकंजा कसने के लिए पुलिस ने सत्यापन अभियान शुरू कर दिया। पुलिस प्रशासन ने अलीखान मोहल्ले को सील करके सत्यापन अभियान चलाया ताकि कोई घुसपैठिया भाग न सके। राजस्व विभाग की मदद से भूमि संबंधी दस्तावेज भी खंगाले गए हैं। प्रशासन ने सरकारी भूमि से अवैध कब्जे हटाने का इंतजाम भी कर लिया है। एसएसपी मणिकांत मिश्र ने स्पष्ट कहा है जिन्होंने माहौल खराब किया है, सरकारी संपत्ति को नुकसान पहुंचाया है उनसे ही संपत्ति की भरपाई कराई जाएगी। कुल मिलाकर पुलिस संदेश देना चाहती है कि पुलिस पर हमला करने का अंजाम क्या होता है?

देवभूमि की डेमोग्राफी चेंज करने में कांग्रेस की बड़ी भूमिका रही है, कांग्रेस ने वोट बैंक बढ़ाने के लिए यूपी, बिहार, पश्चिम बंगाल के अलावा बांग्लादेशियों को राहिंग्यों को पहाड़ी राज्य में बसा दिया, अब डेमोग्राफी चेंज होने के नतीजे उपद्रव व हिंसा के रूप में सामने आने लगे हैं।

देवभूमि की पवित्रता से समझौता नहीं

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी कई बार खुले मंच से यह साफ-साफ कह चुके हैं कि उत्तराखंड की शांति, संस्कृति, पवित्रता और आस्था के साथ खिलवाड़ करने वालों को किसी भी कीमत पर भी बख्शा नहीं जाएगा। काशीपुर की ताजा कार्रवाई इसी नीति की जीती-जागती मिसाल है। सरकार का संदेश साफ है राज्य में दंगा, उपद्रव और अराजकता फैलाने वालों को कड़ी से कड़ी सजा दिलाई जाएगी और कानून का राज हर हाल में कायम रखा जाएगा। उत्तराखंड की जनता को भी यह विश्वास है कि धामी सरकार धर्मरक्षक की तरह प्रदेश की अस्मिता और देवभूमि की पवित्रता की रक्षा के लिए पूरी तरह से संकल्पित है। काशीपुर की कार्रवाई इस बात का प्रतीक है कि जो भी तत्व राज्य के सामाजिक ताने-बाने को बिगाड़ने की कोशिश करेगा, उसे कानून का डंडा झेलना ही पड़ेगा। क्योंकि धामी सरकार ने देवभूमि की गरिमा बनाए रखने का संकल्प लिया है और इस दिशा में हर कदम सख्ती और दृढ़ता के साथ आगे बढ़ाया जा रहा है। इससे एक साल पहले हल्द्वानी के बनभूलपुरा में भी फरवरी 2024 में कट्टपंथियों ने सिर उठाने की कोशिश की थी। अवैध मदसरे को ध्वस्त करने गई पुलिस व प्रशासन की टीम पर हमला किया था। बनभूलपुरा थाने में आग लगा दी थी। स्थिति को काबू में करने के लिए प्रशासन को कर्फ्यू तक लगाना पड़ा था। इसके बाद जब सरकार एक्शन में आई तो बनभूलपुरा कांड के मास्टरमाइंड अब्दुल मलिक और उसके परिवार के कई सदस्यों को गिरफ्तार किया गया था। हिंसा के दौरान सरकारी संपत्ति को हुए नुकसान की भरपाई के लिए नगर निगम ने वसूली नोटिस जारी कर 2 करोड़ 44 लाख रुपये की रकम 15 फरवरी तक जमा करने की डेडलाइन अब्दुल मलिक को दी थी।

मुख्यमंत्री धामी का साफ कहना है कि उत्तराखंड की अस्मिता व देवभूमि की पवित्रता से खिलवाड़ बर्दाश्त नहीं किया जाएगा, ये सीएम पुष्कर सिंह धामी का बयान नहीं, बल्कि उनकी सरकार की ठोस नीति है, धामी सरकार ने साफ कर दिया है कि उपद्रवियों के लिए उत्तराखंड की पवित्र धरती पर कोई जगह नहीं है।

पुलिस पर सवाल

काशीपुर में ‘आई लव मोहम्मद’ जुलूस हो या समाजवादी पार्टी के नेता नदीम अख्तर द्वारा जलसे का आयोजन करना। इन दोनों ही कार्यक्रमों की प्रशासन से कोई अनुमति नहीं ली गई थी। इसलिए पुलिस पर सवाल उठ रहे हैं। पुलिस जलसे और जुलूस में मौजूद थी, जबकि बसफोड़ान पुलिस चौकी के प्रभारी एसआई मनोज धोनी को पता था कि न तो जलसे की अनुमति है और न ही जुलूस की तो फिर दोनों कार्यक्रमों का आयोजन क्यों होने दिया? पुलिस ने अलीखान मोहल्ले से शुरू हुआ जुलूस वाल्मीकि बस्ती तक कैसे पहुंचने दिया? क्यों नहीं अलीखान मोहल्ले में ही जूलुस रोका गया? ‘आई लव मोहम्मद’ जुलूस का नेतृत्व नदीम अख्तर, हनीफ गांधी और दानिश चौधरी कर रहे थे। उनके पीछे 400 से 500 की भीड़ थी। जबकि पुलिस बल के नाम पर सिर्फ एसआई मनोज धोनी, सब-इंस्पेक्टर अजीत सिंह, हेड कांस्टेबल जगत सिंह, कांस्टेबल देवनाथ और कांस्टेबल अमरदीप थे। इसलिए काशीपुर पुलिस की कार्यप्रणाली भी जांच के दायरे में आनी चाहिए। क्योंकि बिना पुलिस की रिपोर्ट के किसी भी जुलूस या जलसे की इजाजत नहीं मिलती है। लिहाजा पुलिस ने जानबूझ कर अलीखान मोहल्ले में जलसा होने दिया और फिर जलसे से उठी भीड़ जुलूस के रूप में हिंदू बस्ती की तरफ बढ़ने लगी। जिसे रोकने पर उपद्रव हुआ, इसलिए पुलिस भी इस उपद्रव के लिए जिम्मेदार ठहराई जानी चाहिए। ●

तीर्थाटन

चमत्कारी पाषाण देवी मंदिर

सरोवर नगरी नैनीताल की वादियों में पाषाण देवी मंदिर को लेकर मान्यता है कि यहां श्रद्धा भाव से आने वाले हर चर्म रोगी को बिमारी से मुक्ति मिल जाती है, यही नहीं, अगर किसी को हकलाने की समस्या है, तो वो भी मां पाषाण देवी दूर करती है माना जाता है कि इस मंदिर का जल बेहद पवित्र है, इस जल के शरीर पर पड़ते ही चर्म रोग हो जाता है।

उत्तरांचल दीप डेस्क

पुराणों में देवभूमि उत्तराखंड को पुण्यभूमि भी कहा गया है। यहां अनेकों मंदिर हैं, जिनकी मान्यता अत्यधिक है। यानी उत्तराखंड में शायद ही ऐसी कोई जगह होगी, जहां आपको दिव्य-भव्य, प्राचीन या पौराणिक महत्व के मंदिर न मिले। ये मंदिर न केवल रहस्यमयी हैं बल्कि उनसे जुड़ी मान्यताएं और कथाएं भी लोगों का ध्यान आकर्षित करती हैं। ऐसा ही एक मंदिर नैनीताल की पहाड़ियों पर है, जो अपने अद्‌भुत चमत्कार के लिए लोकप्रिय है। सरोवर नगरी नैनीताल की वादियों में पाषाण देवी मंदिर को लेकर मान्यता है कि यहां श्रद्धा भाव से आने वाले हर चर्म रोगी को बिमारी से मुक्ति मिल जाती है। यही नहीं, अगर किसी को भी हकलाने की समस्या है, तो वो भी मां पाषाण देवी दूर कर देती है। माना जाता है कि इस मंदिर का जल भी बेहद पवित्र है, इस जल के शरीर पर पड़ते ही किसी भी तरह का चर्म रोग हो वो दूर हो जाता है। यदि कोई व्यक्ति इस पवित्र जल का सेवन करता है तो उसकी वाणी से जुड़ी हर तरह की समस्या दूर हो जाती है, खास तौर पर हकलाने की बीमारी से हमेशा के लिए छुटकारा मिल जाता है। मंदिर में रखे इस जल की वजह से ही मंदिर का महत्व और भी ज्यादा बढ़ जाता है। नैनी झील के किनारे पहाड़ी पर स्थित इस मंदिर में मां भगवती विराजमान हैं। मंदिर में माता की प्राकृतिक रूप से मूर्ती स्थापित है मान्यता है कि यहां देवी मां भगवती साक्षात रूप से वास करती हैं। मंदिर की एक विशेषता ये भी है कि यहां श्रद्धालु मां भगवती के पूरे नौ रूपों के दर्शन कर सकते हैं। मंदिर में प्राकृतिक रूप से प्रकट हुई नौ पिंडियां हैं जिन पर पुजारी पहले जल छिड़कते हैं और फिर वही जल श्रद्धालु को दिया जाता है। इस जल का महत्व इतना है कि श्रद्धालू दूर-दूर से इस जल को लेने के लिए यहां आते हैं। यहां आने वाले भक्तों का मानना है कि यहां मिलने वाला जल त्वचा का हर रोग दूर कर देता है। दिलचस्प बात तो ये है कि मां के जल को हर दस दिन में एक बार निकाला जाता है। इस जल को निकालने से पहले, दिन समय और तिथि देखी जाती है, इसके बाद से ही भक्तों की भीड़ लगनी शुरू हो जाती है।

उत्तराखंड में महाशक्तियों का वास

देवभूमि उत्तराखंड में शाक्त परंपरा की महाशक्तियों के पूजन की प्रथा प्राचीन है। इस पर्वतीय राज्य के जनमानस में सबसे बड़ी धार्मिक आस्था भगवान शिव और आदिशक्ति माता पार्वती में है। पार्वती के ही विभिन्न रूपों को महाशक्तियों की तरह पूजा जाता रहा है। इन महाशक्तियों को दुर्गा, काली, चामुंडा, कालिका, महाकाली, नैना देवी, सिरकुंडा देवी जैसे अनेक नामों से पुकारा व पूजा जाता रहा है। भगवान शिव कैलाश के वासी हैं और उनकी अर्धांगिनी आदिशक्ति हिमालय-पुत्री शैलजा-गौरी-पार्वती हैं। यह अनुपम युगल सदियों से उत्तराखंड में फैले हिमालयी क्षेत्र की आस्था का सबसे बड़ा केंद्र रहा है। जिस प्रकार देवों के देव महादेव भगवान शिव अनेक रूपों में यहां विराजमान हैं ठीक उसी तरह माता पार्वती भी अपने अनेकों रूप में यहां विराजमान है। इसलिए कहा जा सकता है कि इस दैवीय युगल को समर्पित मिथकों, कथाओं और वृत्तांतों की संख्या इतनी ज्यादा है कि उनका ठीक से अनुमान लगाना मुश्किल ही नहीं है, बल्कि नामुमकिन है। देवभूमि में महाशक्ति की पूजा के लिए अनगिनत देवालय बनाए गए हैं उन्हें मोटे तौर पर दो वर्गों में बांट सकते हैं। पहले वर्ग में वे मंदिर आते हैं जिनमें शक्तिस्वरूपा देवी मां की मूर्तियां स्थापित हैं। ऐसे मंदिरों में दुर्गा, महिषासुर मर्दिनी, हर-गौरी और चामुंडा आदि की प्रतिमाएं प्रतिष्ठित हैं। दूसरे वर्ग में ऐसे देवालय आते हैं जिनमें देवी को किसी शिला या उसके विग्रह के रूप में पूजा जाता है। इन देवस्थानों में कसारदेवी, पुन्यागिरी, जाखनदेवी, विंध्यवासिनी समेत बहुत से देवस्थान मौजूद हैं। इसी श्रृंखला में नैनीताल में सबसे बड़े शक्तिपीठ के रूप में नैनादेवी मंदिर का नाम है। मान्यता है कि यहां माता सती के नयन यानी आंखें गिरी थी। इन्हीं के नाम पर सरोवरी नहरी नैनीताल का नामकरण होना बताया जाता है।

पर्वतीय राज्य उत्तराखंड के जनमानस में सबसे बड़ी धार्मिक आस्था भगवान शिव और आदिशक्ति माता पार्वती में है, पार्वती के ही विभिन्न रूपों को महाशक्तियों को पूजा जाता है, इन महाशक्तियों को दुर्गा, काली, चामुंडा, कालिका, महाकाली, नैना देवी, सिरकुंडा देवी जैसे अनेक नामों से पुकारा जाता रहा है।

सती के जहां अंग गिरे वहां शक्तिपीठ बने

पौराणिक कथा के अनुसार प्रजापति दक्ष अपनी पुत्री सती का विवाह शिव से नहीं करना चाहते थे, लेकिन दैवीय आग्रह के कारण उन्हें ऐसा करना पड़ा। विवाह के कुछ समय बाद प्रजापति दक्ष ने यज्ञ का आयोजन किया जिसमें सभी देवताओं को तो आमंत्रित किया गया, लेकिन देवों के देव महादेव शिव को नहीं बुलाया गया। शक्तिस्वरूपा माता सती ने इसे अपने पति शिव का अपमान माना और अकेली पिता द्वारा आयोजित यज्ञ में पहुंची और आक्रोश में यज्ञ खंडित करने के लिए हवनकुंड में यह कहते हुए कूद गई कि वो अगले जन्म में भी शिव को ही अपना जीवनसखा चुनेंगी। जब महादेव को इस घटना का पता चला तो उन्होंने अत्यंत क्रोधित होकर प्रजापति दक्ष के यज्ञस्थल को तहस-नहस कर डाला। सती के मृत शरीर को देख शिव वैरागी हो गए और सती के शरीर को लेकर तीनों लोकों में तांडव शुरू कर दिया। महादेव का ताडंव देख सभी देवता भगवान विष्णु के पास पहुंचे और शिव को शांत करने का आग्रह किया। तब भगवान विष्णु ने अपने सुर्दशन चक्र से माता सती के देह को टुकड़ों में बांट दिया। सती की देह के अंग जहां-जहां गिरे वहां शक्तिपीठें स्थापित हो गईं। माता सती के नयन नैनीताल में गिरे और उनसे निकली आंसुओं की धारा से सरोवर का जन्म हुआ। इसलिए नैनीताल में माता नैनादेवी का मंदिर आस्था का प्रतीक है। नैनीताल झील के लगभग बीचोबीच के बिंदु के समीप दाईं तरफ सड़क से लगी पहाड़ी पर एक और महत्वपूर्ण पाषाण देवी मंदिर है। मान्यता है कि जब माता सती की देह को लेकर शिव तीनों लोक में तांडव कर रहे थे तब माता सती की देह से ह्रदय और अन्य हिस्से (अर्थात पाषाण) अयारपाटा की पहाड़ी के दक्षिण-पूर्वी तल पर गिरे। इसी स्थान पर पाषाण देवी का मंदिर स्थापित है। पाषाण देवी के इस मंदिर में देवी शिला के रूप में हैं। इसी शिला की पूजा पाषाण देवी के रूप में की जाती है। आकार में विशाल इस शिला में देवी दुर्गा के नौ स्वरूपों के दर्शन होते हैं। यानी यह अद्वितीय और अद्‌भुत शिला है। माना जाता है कि इस शिला में माता का मुख नजर आता है जबकि उनके पैर नीचे झील में डूबे हुए हैं। इस मंदिर के परिसर में हनुमान की प्रतिमा के साथ शिवलिंग भी स्थापित है। नवदुर्गा का रूप मानी जाने वाली पाषाण देवी की शिला पर श्रद्धालु सिंदूर अर्पित करते हैं और सिंदूर से ही पाषाण देवी का श्रृंगार किया जाता है।

- **पाषाण देवी के मंदिर में देवी शिला के रूप में हैं, इसी शिला की पूजा पाषाण देवी के रूप में की जाती है, आकार में विशाल शिला में देवी दुर्गा के नौ स्वरूपों के दर्शन होते हैं, यानी यह अद्वितीय और अद्‌भुत शिला है, मान्यता है कि इस शिला में माता का मुख नजर आता है जबकि उनके पैर नीचे झील में डूबे हुए हैं।**
- **भगवान शिव कैलाश के वासी हैं और उनकी अर्धांगिनी आदिशक्ति हिमालय-पुत्री शैलजा-गौरी-पार्वती हैं, यह अनुपम युगल सदियों से उत्तराखंड में फैले हिमालयी क्षेत्र की आस्था का सबसे बड़ा केंद्र रहा है, जिस प्रकार देवों के देव महादेव भगवान शिव अनेक रूपों में यहां विराजमान हैं ठीक उसी तरह माता पार्वती भी अपने अनेकों रुप में यहां विराजमान है।**

त्वचा रोग से मिलती है मुक्ति

नैनीताल की सैर करने वाले अंग्रेज व्यापारी पीटर बैरन की किताब 'नोट्स ऑफ़ वांडरिंग्स इन द हिमाला' में पाषाण देवी के मंदिर का उल्लेख मिलता है। पीटर बैरन की किताब के अनुसार पाषाण देवी का मंदिर नैनीताल का सबसे पुराना यानी प्राचीन मंदिर है। इस मंदिर में आसपास के गांवों के पशुचारक पाषाण देवी मंदिर में दूध और मट्ठा चढ़ाया करते थे। ग्रामीणों के बीच पाषाण देवी का आज भी वही स्वरूप पूज्यनीय है। मान्यता है कि पाषाण देवी के मुख को स्पर्श किए हुए जल को लगाने से त्वचा रोगों से तो मुक्ति मिलती है साथ ही प्रेतात्माओं के बंधन से निकलने का रास्ता भी खुल जाता है। लोकमान्यता है कि नव दुर्गा रूपी पाषाण देवी की शिला के नीचे एक गुफा है जिसके भीतर नागों का वास है। हर वर्ष शारदीय नवरात्री में इस मंदिर में नौ दिनों तक लगातार पूजा-आराधना चलती है। नवरात्रों में मां भगवती का पूजन, हवन यज्ञ, कन्या पूजन, सुंदर कांड का पाठ, गणेश पूजन, पंचांगी कर्म, श्री रामचंद्र परिवार का पूजन और अखंड रामायण पाठ जैसे अनुष्ठान होते हैं। पाषाण देवी मंदिर में पूजा की जिम्मेदारी पिछली पांच पीढ़ियों से नैनीताल के ही भट्ट परिवार के पास है। फिलहाल मंदिर के पुजारी जगदीश चंद्र भट्ट हैं जो अपने पिता भैरव दत्त भट्ट की परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं। मंदिर के पुजारी जगदीश भट्ट का कहना है कि देवी मां का यह एक प्राकृतिक स्वरूप है, इसमें किसी भी प्रकार का कोई बदलाव नहीं किया गया है। यहां वस्त्र के रूप में माता को सिंदूर चढ़ाने की मान्यता है। सुबह देवी को स्नान कराने के बाद सिंदूर का चोला वस्त्र के रूप में चढ़ाया जाता है। मंदिर के पुजारी जगदीश चंद्र भट्ट कहते हैं कि मंदिर की स्थापना के समय से ही यहां अखंड ज्योति प्रज्जवलित है। पुजारी रोजाना दुर्गा सप्तशती व सुंदरकांड का पाठ करते हैं। श्रावण और माघ महीनों में नियमित पाठ के अलावा शिव का रुद्राभिषेक भी किया जाता है। पुजारी का कहना है कि माता दुर्गा को चढ़ाए जाने वाले अभिमंत्रित जल को प्रत्येक दस दिन में एक बार निकाला जाता है और उसे हकलाने और अन्य व्याधियों के रोगियों को औषधि के रूप में दिया जाता है। मंदिर के परिसर में निर्मित हनुमान प्रतिमा और शिवलिंग बाद में स्थापित किए गए थे। लोकमान्यता के अलावा पौराणिक और ऐतिहासिक साक्ष्यों की मानें तो नैनीताल का पाषाण देवी मंदिर उत्तराखंड के सबसे पुराने शिला-शक्तिपीठों में से एक है। देवी मां के गर्दन से ऊपर के शरीर का हिस्सा, आंखें, कान, नाक प्रत्यक्ष रूप से दिखते हैं और गर्दन से नीचे का शरीर जैसे उनकी भुजाएं और पादुकाएं ताल के अंदर विराजमान हैं। लोकमान्यता है कि देवी का यह रूप सरोवर के अंदर से अपने आप प्रकट हुआ था। पाषाण देवी को नैनीताल की सबसे प्राचीन देवी माना जाता है यानी जितनी पुरानी नैनीताल की झील है, उतना ही पुराना मां भगवती का स्वरूप है।

तौकीर का किला ध्वस्त

तौकीर रजा गलत फहमी का शिकार था क्योंकि 2010 के बरेली दंगों में तत्कालीन सीएम मायावती ने तौकीर रजा को दंगा भड़काने के आरोप में गिरफ्तार कराया था, लेकिन पार्टी के मुस्लिम नेताओं के दबाव में मायावती ने उसकी रिहाई भी कराई थी, इससे तौकीर रजा की गलत फहमी पुख्ता हो गई कि वो कितने भी दंगे भड़काए सरकार उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकती।

अतुल सिन्हा
टीवी जर्नलिस्ट

इत्तेहादे मिल्लत काउंसिल (आईएमसी) के अध्यक्ष और इस्लामिक धर्मगुरू मौलाना तौकीर रजा ने 11 नवंबर 2024 को जयपुर में मुसलमानो की जमात के बीच मुसलमानों को एकजुट होकर दिल्ली का घेराव करने का आह्वान किया था, बड़बोले और भड़काऊ तकरीर के लिए कुख्यात मौलाना तौकीर रजा ने कहा था कि जिस दिन हम लोग सड़कों पर उतर आएंगे तो तुम्हारी रूह कांप जाएगी। तुम्हारी से मतलब सरकार से था। तौकीर रजा ने कहा था कि हुकूमत हमेशा बेईमान रही है लेकिन आज की सरकार सबसे ज्यादा बेईमान है। सरकार हम पर नजर रखती हैं लेकिन अपने ही मंदिरों में प्रसाद के रूप में चढ़ाई जाने वाली गाय की चर्बी पर नजर नहीं डालती। मौलाना का सबसे पंसद जुमला है कि 'हमारे नौजवान बुजदिल नहीं है। हमने अपने नौजवान को कंट्रोल कर रखा है जिस दिन आउट ऑफ कंट्रोल हो गए तो तुम्हारे बस की बात नहीं इन्हें रोक पाना।' मौलाना सिर्फ सुर्खियों में रहने के लिए इस तरह की धमकी देता था ऐसा नहीं था बल्कि वो गलत फहमी का शिकार इसलिए था क्योंकि 2010 के बरेली दंगों में तत्कालीन मुख्यमंत्री मायावती ने तौकीर रजा को दंगा भड़काने के लिए जिम्मेदार मानते हुए गिरफ्तार कराया था, लेकिन बसपा के मुस्लिम प्रभावशाली नेताओं के दबाव में मायावती ने तौकीर रजा की रिहाई भी कराई थी। इससे तौकीर रजा की गलत फहमी पुख्ता हो गई कि वो कितने भी दंगे भड़काए, कितना भी जहर उगले सरकार उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकती, लेकिन वो ये भूल गया था कि उत्तर प्रदेश में अब मायावती या अखिलेश यादव की सरकार नहीं है। बल्कि योगी आदित्यनाथ की सरकार है। जो अपराध और कानून व्यवस्था को जेब में रखने वालों का सही इलाज करती है। योगी आदित्यनाथ खुद बरेली कांड के बाद कह चुके हैं कि मौलाना भूल गया था कि यूपी में किसका शासन है? योगी ने साफ-साफ कहा कि बरेली में कानून व्यवस्था से खिलवाड़ करने वालों से सख्ती से निपटा जा रहा है।

पश्चिमी यूपी का चेहरा बनने की चाहत

रामपुर के मुस्लिम सपा नेता मोहम्मद आजम खान भी कभी तौकीर रजा की तरह ही जहर उगलते थे। लेकिन योगी आदित्यनाथ की सरकार बनने के बाद से वो जेल और कचहरी के चक्कर में फंसे है। मोहम्मद आजम खान का राजनीतिक किला लगभग ध्वस्त हो चुका है। उनके ड्रिम प्रोजेक्ट जोहर यूनिवर्सिटी का नक्शा बदल चुका है। यूपी में क्या अब रामपुर में भी उनका जलवा नहीं रहा। हाल ही में मोहम्मद आजम खान जेल से रिहा हुए हैं, लेकिन वो स्वभाव के मुताबिक बोलने की हिम्मत नहीं कर पा रहे हैं। हालांकि सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने जेल से छूटते ही मोहम्मद आजम खान पर डोरे डालने शुरू कर दिए हैं। एक साल बाद 2027 में यूपी विधानसभा चुनाव होने हैं लिहाजा मौलाना तौकीर रजा पश्चिमी यूपी में अपना रुतवा कायम करने के लिए मैदान में उतरा ही था कि सिर मुंडाते ही ओले पड़ गए। तौकीर रजा चाहता था कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश में वो मुसलमानों का बड़ा रहनुमा बन जाएगा और लोग मोहम्मद आजम खान को भूल जाएंगे। इसलिए भी वो हिंदुओं और सरकारों के खिलाफ जहर उगलने लगा था। 2027 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की मदद करने के लिए भी वो यूपी में हिंसा फैलाना चाहता था। तौकीर रजा कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी वाड्रा का करीबी बताया जाता है। वो मुसलमानों के वोट बैंक का ठेकेदार भी बनने की कोशिश कर रहा था। क्योंकि सपा नेता मोहम्मद आजम खान जब से मुकदमों में फंसे हैं राजनीतिक रूप से कमजोर पड़ चुके हैं। क्योंकि जिस नेता की यूपी में कभी तूती बोलती थी वो और उसका परिवार घर से ज्यादा जेल में रहता है। इससे भी आजम खान का रुतबा कम हुआ है। शायद इसी खाली जगह को मौलाना तौकीर रजा भरने की कोशिश कर रहा था। लेकिन यूपी की कानून व्यवस्था से खेलना इस बार उसे भारी पड़ रहा है।

तौकीर रजा के गुर्गे तो उससे भी दो कदम आगे थे, तौकीर के सबसे करीबी डॉक्टर नफीस ने तो बरेली के पुलिस इंस्पेक्टर के हाथ काटने व वर्दी उतरवाने की धमकी तक दे दी थी, इससे समझा जा सकता है कि मौलाना तौकीर रजा हर हाल में दशहरा से पहले बरेली में आग लगाना चाहता था।

इंस्पेक्टर का हाथ काटने की धमकी

आई लव मोहम्मद के नाम पर कट्टरपंथी फिरका देश में हिंसा फैलाने की कोशिश कर रहा है। बरेली में भी मौलाना तौकीर रजा ने आई लव मोहम्मद के नाम पर मुसलमानों को भड़काया, अपने गुर्गों को एक्टिव किया। व्हाट्सएप ग्रुप बनाकर भड़काऊ वीडियो वायरल कर 26 सितंबर को जुमे की नमाज के नाम पर भीड़ को इकट्ठा किया। बरेली के पड़ोसी जिलों से ही नहीं बल्कि बिहार और पश्चिमी बंगाल तक से मुसलमान युवकों को बुलाया गया। उपद्रवियों को संदेश दिया गया कि बरेली में दंगा भड़काना है इसके लिए भले ही पुलिस वालों की हत्या ही क्यों न करनी पड़े। तौकीर रजा के गुर्गे तो उससे भी दो कदम आगे थे। तौकीर के सबसे करीबी डॉक्टर नफीस ने तो बरेली के पुलिस इंस्पेक्टर के हाथ काटने व वर्दी उतरवाने की धमकी तक दे दी थी। इससे समझा जा सकता है कि मौलाना तौकीर रजा हर हाल में दशहरा से पहले बरेली में आग लगाना चाहता था। इसलिए आई लव मोहम्मद के पोस्टर के साथ प्रदर्शन करने वालों की भीड़ में सिर तन से जुदा करने के नारे भी लगाए गए थे। बरेली पुलिस ने तौकीर रजा के करीबी गुर्गे फैजान सकलेनी और तौकीर रजा के मीडिया प्रभारी मुनीर इदरीसी को सिर तन से जुदा करने के नारे लगाने के आरोप में गिरफ्तार किया है। इसके लिए पुलिस ने 2000 सीसीटीवी फुटेज खंगाले। तौकीर के मीडिया प्रभारी मुनीर इदरीसी ने ही 26 सितंबर को प्रेम नगर इलाके में भीड़ को भड़काया फिर उसे लेकर कोतवाली की तरफ मार्च किया। मुनीर अकरम इत्तेहाद मिल्लत कौंसिल पार्टी का मीडिया प्रभारी व प्रवक्ता बनकर मीडिया और अखबारों में पार्टी की तरफ से बयान जारी करता था। गिरफ्तारी के बाद पुलिस से बोला कभी मैं इत्तेहादे मिल्लत काउंसिल के प्रवक्ता के तौर पर कोतवाली आता था, आज आरोपी के तौर पर मैं लाया गया हूं। सब वक्त की बात है। यानी मीडिया प्रभारी मुनीर इदरीसी का कोतवाली में भी जलवा रहता था।

सरकारी एक्शन से हा...हाकार

26 सितंबर को मौलाना तौकीर रजा और उसके गुर्गों ने जो करना था वो कर लिया। अब बारी सरकार के एक्शन की थी। लिहाजा बरेली में उपद्रव करने वाले मौलाना तौकीर रजा के पांच सहयोगियों को ई-चार्जिंग स्टेशन पर बिजली चोरी के आरोप में 1.25 करोड़ रुपये से अधिक की वसूली का नोटिस थमा दिया गया। एक संयुक्त टीम ने बानखाना मोहल्ले में छापेमारी की और पांच ई-चार्जिंग केंद्रों पर बिजली चोरी पकड़ी। पांचों चार्जिंग केंद्रों के मालिकों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया और 1.25 करोड़ रुपये से अधिक की वसूली के नोटिस जारी किए गए। इन चार्जिंग स्टेशनों पर चोरी की बिजली से ई रिक्शा की बेटरी चार्ज कर लाखों की कमाई की जा रही थी। बिजली विभाग के मुख्य अभियंता (प्रथम जोन) ज्ञान प्रकाश का कहना है कि वसीम खान पर 15.39 लाख रुपये की विद्युत बकाया है, मोनिश खान पर 22.29 लाख रुपये, बरकान रजा खान पर 37.32 लाख रुपये, अमन रजा खान पर 26.92 लाख रुपये और गुलाम नबी पर 26.57 लाख रुपये बकाया है। ये सभी मौलाना तौकीर रजा के करीबी हैं, जो दबंगई के बल पर बिजली चोरी कर लाखों की कमाई कर रहे थे। लगभग एक साल पहले भी इसी तरह की छापेमारी में इन्हीं आरोपियों की चार चार्जिंग इकाइयों में बिजली चोरी पकड़ी गई थी। ज्ञान प्रकाश का कहना है कि बिजली चोरी का जुर्माना अदा न करने वाले बकायेदारों के खिलाफ वसूली प्रमाणपत्र (आरसी) जारी की जा रही है। मुख्य अभियंता का कहना है कि बिजली विभाग के कर्मचारियों की संभावित संलिप्तता की जांच के लिए तीन सदस्यीय समिति का गठन किया गया है। अगर किसी अधिकारी या कर्मचारी की संलिप्तता पाई जाती है तो उसके खिलाफ कठोर कार्रवाई की जाएगी। वैसे सच ये भी है कि इलाके के जेई और लाइनमैन की मिलीभगत के बिना कोई बिजली चोरी नहीं कर सकता है।

तौकीर रजा कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी वाड्रा का करीबी बताया जाता है, वो 2027 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की मदद करने के लिए यूपी में हिंसा फैलाना चाहता था, वो अल्पसंख्यक वोट बैंक का ठेकेदार बनने की कोशिश में भी है, क्योंकि सपा नेता आजम खान जब से मुकदमों में फंसे हैं राजनीतिक रूप से कमजोर पड़ चुके हैं।

बुलडोजर एक्शन

बरेली शहर में उपद्रव करने वाले मौलाना तौकीर रजा और उसके गुर्गों पर प्रशासन की चौतरफा कार्रवाई जारी है। एक तरफ जहां बरेली विकास प्राधिकरण उपद्रवियों के अवैध निर्माण बुलडोजर से ध्वस्त कर रहा था तो दूसरी ओर नगर निगम ने भी वर्षों बाद सैलानी क्षेत्र में सड़क-फुटपाथ पर किए गए स्थाई अवैध निर्माण के विरुद्ध अभियान चला रखा है। बरेली हिंसा के मास्टरमांइड तौकीर रजा के करीबी नफीस खान का बारात घर रजा पैलेस बुलडोजर से ध्वस्त कर दिया गया। बरेली विकास प्राधिकरण के वीसी का कहना है कि आवास का नक्शा पास कराकर बारात घर बना गया है, इसलिए कार्रवाई की गई है। रजा पैलेस पर शोयेब बेग पुत्र स्व. अथहर हुसैन बेग पूर्व पीसीएस अधिकारी का निवास होने का बोर्ड चस्पा था। तौकीर के एक और करीबी नफीस खान की चश्में की दुकान को सील कर दिया गया, जो चश्मा बनाते-बनाते अपने को डाक्टर बताने लगा था। तौकीर रजा को शरण देने वाले फरहत के मकान और चार दुकानों को सील किया गया है। नदीम खान के बारे में पता चला है कि तौकीर रजा के रसूख के दम पर उसने करोड़ों रुपये की जमीन पर अवैध रूप से चार दुकानें बनवाई थी जिन्हें सील कर दिया गया। नगर निगम ने मुस्लिम बहुल सैलानी क्षेत्र में बुलडोजर चलाकर नाले-नालियों पर बनी दुकानों को ध्वस्त करने का अभियान चलाया। सैलानी में नगर निगम अतिक्रमण के विरुद्ध बीते पांच वर्ष से कोई अभियान चलाने की हिम्मत नहीं कर पाया था। जिससे सड़क और फुटपाथ की भूमि पर अवैध कब्जेदारों ने मनमाने ढंग से निर्माण कर लिए था। अब बुलडोजर ने सब साफ कर दिया है। श्यामतगंज से मीरा की पैठ तक डेढ़ किलोमीटर से अधिक हिस्से में करीब 200 से अधिक दुकानों व घरों के सामने बने रैंप, छज्जे, दीवार व अन्य स्थाई कब्जे को ध्वस्त कर दिया गया। इस कार्रवाई के बाद पूरी सड़क अपने पुराने स्वरूप में लौट आई है। इससे लोगों ने राहत की सांस ली। प्रशासन की ध्वस्तीकरण की कार्रवाई के दौरान कब्जेदारों ने विरोध करने के लिए एकजुट होने की कोशिश की, लेकिन भारी पुलिस बल को देख उनके हौंसले पस्त हो गए और वह पीछे हट गए। पुलिस व प्रशासन की कार्रवाई पर कुछ लोग या ये कहें कि कुछ नेता सवाल उठा रहे हैं। इस पर बरेली के एडीजी का साफ कहना है कि जो लोग ये कहते हैं कि वो निर्दोष हैं या उनको झूठा फंसाया जा रहा है, तो वो अपने साक्ष्य लेकर हमारे सामने आए। हमने पूरे साइंसेटिफिक एविडेंस कलेक्शन के बाद ग्राउंड पर लोगों से पूछताछ करके ही उपद्रव करने वालों को गिरफ्तार किया है।

महिला कमांडो तैनात

बरेली में अब उपद्रवियों की खैर नहीं है, क्योंकि प्रशासन ने त्यौहारों के सीजन में माहौल खराब करने वालों को ठीक करने की जिम्मेदारी अब महिला कमांडो को दे दी है। ये महिला कमांडो कोई साधारण कमांडो नहीं है। ये विशेष ट्रेनिंग ले चुकी हैं और इन्हें अच्छे से पता है कि आखिर उपद्रवियों से कैसे निपटा जाता है। सीएम योगी ने इस यूनिट को पिछ्ले महीने ही लॉन्च किया था। इन सभी महिला कमांडो को मार्शल आर्ट आती है साथ ही इन्हें अत्याधुनिक हथियार चलाना भी आता है। यूपी के बरेली में जिन महिला कमांडो को उतारा गया है वो प्रदेश की पहली महिला कमांडो यूनिट है। ●

खतरे में बांज का जंगल

बांज को उत्तराखंड का जीवन वृक्ष कहा जाता है, क्योंकि ये वृक्ष केवल ऑक्सीजन ही नहीं देता, बल्कि जलस्त्रोतों को जीवित रखता है, मिट्टी को कटने से बचाता है, भूस्खलन को रोकता है और ग्रामीण जीवन के लिए चारा व ईंधन देता है, पहाड़ के पर्यावरण से गहरा ताल्लुक रखने वाला बांज धीरे-धीरे जंगलों से गायब हो रहा है।

अफजल फौजी
नैनीताल

उत्तराखंड जिसे आमतौर पर देवभूमि भी कहा जाता है, यह सिर्फ हिमालय की ऊंची चोटियों, नदियों और मंदिरों से ही नहीं, बल्कि अपने हरे-भरे वनों और जैव-विविधता से भी प्रसिद्ध है। यहां के हर एक वृक्ष का संबंध केवल प्रकृति से ही नहीं बल्कि समाज, संस्कृति और परंपराओं से भी है। इन्हीं में से एक विशेष वृक्ष है बांज। बांज को उत्तराखंड का जीवन वृक्ष कहा जाता है। कारण यह है कि ये वृक्ष केवल ऑक्सीजन ही नहीं देता, बल्कि जलस्त्रोतों को भी जीवित रखता है, मिट्टी को कटने से बचाता है, भूस्खलन को रोकता है और ग्रामीण जीवन के लिए चारा व ईंधन उपलब्ध कराता है। यदि बांज न हो, तो पहाड़ों की नमी और हरियाली धीरे-धीरे समाप्त हो जाए। इसलिए पर्यावरण को समृद्ध रखने में बांज के जंगलों की महत्वपूर्ण भूमिका है। बांज की जड़े वर्षा जल को अवशोषित करने व भूमिगत करने में मदद करती हैं जिससे जलस्त्रोतों में सतत प्रवाह बना रहता है। बांज की पत्तियां जमीन पर गिरकर दबती सड़ती रहती हैं, इससे मिट्टी की सबसे ऊपरी परत में ह्यूमस (प्राकृतिक खाद) का निर्माण होता रहता है। पहाड़ के पर्यावरण, खेती-बाड़ी, समाज व संस्कृति से गहरा ताल्लुक रखने वाला बांज धीरे-धीरे जंगलों से गायब होता जा रहा है। मध्य हिमालयी क्षेत्र में बांज की विभिन्न प्रजातियां (बांज, तिलौंज, रियांज व खरसू आदि) 1200 मीटर से लेकर 3500 मीटर की ऊंचाई के मध्य स्थानीय जलवायु, मिट्टी व ढाल की दिशा के अनुरूप पाई जाती हैं। उत्तराखंड में बांज के पेड़ों का काफी महत्व है। इसे पहाड़ का हरा सोना भी कहा जाता है। इसकी लकड़ी काफी मजबूत होती है, जिससे इसे निर्माणकाष्ठ के रूप में अधिक उपयोग किया जाता है। यह पेड़ अनेक देशों, पूरब में मलेशिया और चीन से लेकर हिमालय और काकेशस क्षेत्र में होते है। सिसिली से लेकर उत्तर ध्रुवीय क्षेत्र तक में पाया जाता है। उत्तरी अमरीका में भी यह मिलता है। पेड़ की पहचान इसके पत्तों और फलों से होती है। इसके पत्ते खांचेदार होते है और इसका फल गोलाकार और ऊपर की ओर नुकीला होता है।

बांज का पेड़ साल में लगभग 2000 बांज फल देता है, इसके पेड़ को बड़ा होने में काफी समय लगता है और यह 200 से 300 साल तक जिंदा रह सकता है, यह पेड़ 20 साल की उम्र में फल देना शुरू करता है, बांज का वृक्ष हरा, लाल, व काला होता है।

इनके फल को बांज फल कहते है। इसके कुछ फल मीठे होते है तो कुछ कड़ुए। पेड़ दिखने में सुंदर होता है इसलिए इसे सड़कों के किनारे और पार्कों में लगाया जाता है। बांज के पेड़ का फल पकने के बाद लाल रंग का और बीच में पीले रंग का होता है। खाने के सिवाए इन फलों से टैनिस भी बनाया जाता है। जो चमड़ा पकाने के काम आता है।

पेड़ एक लाभ अनेक

बांज के फलों का आटा सुआरों को भी खिलाया जाता है। इसके लिए पहले फल को उबालकर उसे सुखाया जाता है और फिर उसके आटे का केक बनाकर सुअर को दिया जाता है। एक बांज का पेड़ उगाना हो तो इसके फल की मदद से ही उगाया जा सकता है। बांज पेड़ साल में लगभग 2000 बांज फल देता है। बांज के पेड़ को बड़ा होने में काफी समय लगता है और यह 200 से 300 साल तक जिंदा रह सकता है। यह पेड़ 20 साल की उम्र में फल देना शुरू करता है। बांज के पेड़ कई रंग हरे, लाल, व काले होते हैं। यह पेड़ 100 से 150 फीट की ऊंचाई तक बढ़ सकते हैं। पर्यावरण को समृद्ध रखने में बांज के जंगलों की महत्वपूर्ण भूमिका मानी जाती है। बांज के पेड़ की जड़े वर्षा के जल को अवशोषित करने व भूमिगत करने में मदद करती हैं जिससे जलस्त्रोतो में सतत प्रवाह बना रहता है। इसकी पत्तियां प्राकृतिक खाद बनाती है। बांज की लम्बी व विस्तृत क्षेत्र में फैली जड़ें मिट्टी को जकड़े रखती हैं जिससे भू कटाव नहीं हो पाता। इसलिए बांज के जंगल को जैव विविधता का अतुल भंडार कहा जाता है। बांज का पेड़ अपने तने व शाखाओं में लाइकिन, ऑरकिड, मॉस व फर्न जैसी वनस्पतियों को फलने फूलने और विकसित होने का अवसर देता है। यही नहीं कई छोटे-छोटे जीव, कीड़े मकोड़े व नन्हें पौधे बांज की गिरी पत्तियों के ढेर में शरण पाते हैं।

बांज के पेड़ों का कटान

ग्रामीण कृषि व्यवस्था में भी बांज की अहम भूमिका है। इसकी हरी पत्तियां पशुओं के लिये पौष्टिक आहार मानी जाती हैं। इसकी सूखी पत्तियां पशुओं के बिछावन लिए भी उपयोग की जाती हैं, पशुओं के मल मूत्र में सन जाने से बाद में इससे अच्छी खाद बनती है। ईंधन के रूप में बांज की लकड़ी सर्वोतम होती है, अन्य लकड़ी की तुलना में इससे ज्यादा ताप और ऊर्जा मिलती है। किसानों द्वारा बांज की लकड़ी का उपयोग खेती के काम में आने वाले विविध उपकरणों कुदाल, दरातीं की मूठ, हल के नसूड़े, पाटा व दन्याली के निर्माण में किया जाता है। ईंधन व चारे के लिए बांज का अधांधुंध व गलत तरीके से उपयोग करना बांज के लिए सबसे ज्यादा घातक सिद्ध हुआ है। दरअसल बांज की पत्तियों व उसकी शाखा को बार-बार काटते रहने से पेड़ पत्तियों से विहीन हो जाता है। इससे पेड़ की विकास क्रिया रुक जाती है और वह ठूंठ बनकर खत्म हो जाता है। जंगलों में पशुओं चरने से भी बांज के नवजात पौधों को बहुत नुकसान पहुंचता रहा है। इसके अलावा उत्तराखंड में कई स्थानों पर चाय और फलों के बाग लगाने के लिएभी बांज के वनों का सफाया कर दिया गया। नैनीताल के भवाली, रामगढ़, नथुवाखान, मुक्तेश्वर, धारी, धानाचूली, पहाड़पानी, भीड़ापानी तथा अल्मोड़ा के पौधार, जलना, लमगड़ा, शहरफाटक, बेड़चूला, चौबटिया, दूनागिरी, पिथौरागढ़ के चैकोड़ी, बेरीनाग व झलतोला, टिहरी के चम्बा, धनोल्टी, पौडी के भरसाड़ तथा चमोली के तलवाड़ी, ग्वालदम व जंगलचट्टी सहित कई स्थानों पर जहां आज सेब, आलू व चाय की खेती हो रही है वहां पहले बांज के घने वन थे। सरकारी कार्यालयों में लकडी़ के कोयलों की पूर्ति के लिए भी पूर्वकाल में बड़ी संख्या में बांज के पेड़ काटे गए। बांज के पेड़ का कटान होने से भी उत्तराखड जैसे पहाड़ी राज्य में मानसून के सीजन में भूस्खलन की घटनाएं बढ़ी हैं। वन विभाग भी मान रहा है कि कुमाऊं के पर्वतीय क्षेत्रों के जंगलों में 80 फीसद चीड़ के पेड़ है, जबकि तीन फीसद से कम बांज का जंगल है। कुमाऊं विश्वविद्यालय के अल्मोड़ा परिसर में डॉ. जेएस रावत के अध्ययन से भी यह साबित हो चुका है कि बांज के जंगलों से 23 फीसद जल संग्रहण होता है। इसके अलावा चीड़ से 16 फीसद, खेतों से 13 फीसद, बंजर भूमि से पांच फीसद और शहरी भूमि से केवल दो फीसद की जल वृद्धि होती है।

- **नैनीताल के भवाली, रामगढ़, नथुवारवान, मुक्तेश्वर, धारी, धानाचूली, पहाड़पानी, भीड़ापानी, अल्मोड़ा के पौधार, जलना, लमगड़ा, शहरफाटक, बेड़चूला, चौबटिया, दूनागिरी, पिथौरागढ़ के चैकोड़ी, बेरीनाग व झलतोला, टिहरी के चम्बा, धनोल्टी, पौडी के भरसाड़ व चमोली के तलवाड़ी, ग्वालदम एवं जंगलचट्टी आदि स्थानों पर जहां आज सेब, आलू व चाय की खेती हो रही है वहां पहले बांज के घने वन थे।**
- **बांज के पेड़ की जड़े वर्षा के जल को अवशोषित करने में मदद करती हैं जिससे जलस्त्रोतो में सतत प्रवाह बना रहता है, इसकी पत्तियां प्राकृतिक खाद बनाती है, बांज की विस्तृत क्षेत्र में फैली जड़ें मिट्टी को जकड़े रखती हैं जिससे भूस्खलन नहीं होता, इसलिए बांज को जैव विविधता का भंडार कहा जाता है।**

बांज के संरक्षण की जरूरत

उत्तराखंड में बांज के जंगलों की सबसे ज्यादा दुर्गति ब्रिटिश काल में हुई। चीड़ के वृक्षारोपण को व्यावसायिकता की दृष्टि से महत्व दिए जाने के कारण बांज के वन सीमित क्षेत्र में ही रह गए थे। आज आबादी वाले क्षेत्रों में बांज और इसकी विभिन्न प्रजातियो के जंगल सिमट कर रह गए हैं। आरक्षित वनों को छोड़कर बांज के जंगलों की हालत अत्यन्त दयनीय है। जिससे हिमालय के पर्यावरण व कृषि उत्पादन पर इसका कुप्रभाव पड़ पर रहा हैं। उत्तराखंड की कुछ गैर सरकारी संस्थाओं और व्यक्तियों ने बांज के जंगलों के संरक्षण व उसके विकास की दिशा में कई सार्थक प्रयास किए हैं। इससे गांव समुदायों में एक नई चेतना जागृत हो रही है। बांज के संरक्षण व विकास के सामूहिक प्रयास हमें अभी से करने होंगे, अन्यथा वह दिन दूर नहीं जब बांज एक दिन दुर्लभ वनस्पतियों की श्रेणी में शामिल हो जाएगा। उत्तराखंड के इस लोकगीत 'नी काटा नी काटा झुमराली बांजा, बजांनी धुरो ठण्डो पाणी...' का आशय भी यही है कि लकदक पत्तों वाले बांज को मत काटो, इन बांज के जंगलों से हमें ठंडा पानी मिलता है। उत्तराखंड में प्रकृति से इंसान को मिली सबसे मूल्यवान चीजों में पौधे भी शामिल हैं। पौधे चार तरीके से फायदेमंद हो सकते हैं स्वास्थ्य-सेवा में, टिकाऊ अर्थव्यवस्था के निर्माण में, पर्यावरण संरक्षण में और पर्यावरण के नवीनीकरण में। एक और यह तथ्य भी है की इसकी सूखी चौड़ी पत्तियों का आवरण जहां जमीन को धूप की गर्मी से बचाता है वहीं बरसात के पानी को तेजी से बहने से रोकता है जिससे पानी को जमीन के अंदर जाने का अधिक समय मिलता है। इस तरह बारामासी धारे पंदेरे ठंडे पानी का सुलभ और मन लुभावन स्त्रोत बन जाते हैं। इन सारे फायदों पर गौर करने पर ये साफ समझ में आता है कि प्रकृति से इंसान को मिली सबसे मूल्यवान चीजों में पर काम करना होगा।

बांज के पेड़ के फायदे-

बांज की लकड़ी से ही पहाड़ी गांवों में ओखली बनाई जाती हैं, ओखली पहाड़ी जीवन से जुड़ा एक एसा हथियार है जिसके बिना धान की कुटाई नहीं की जा सकती। ईंधन के रूप में बांज की लकडी़ सर्वोतम होती है, अन्य लकड़ी की तुलना में इससे ज्यादा ताप और ऊर्जा मिलती है इसकी बारीक कैडिंया जल्दी जलती हैं ओर बड़ी लकड़ी आराम से जलती है। बांज के तने से बना कोयला दांत मंजन के काम में भी लाया जाता है यही नहीं इस कोयले पर सैकी हुई रोटी टेस्टी होती है। बांज की लकड़ी के राख में दबे कोयले जो सुबह चूल्हा जलने के लिए अंगार देते हैं। यानी पहाड़ी जीवन में आग जलाने के काम आते हैं। बांज का पेड़ बड़ा छायादार होता है इसकी छाया में बैठने पर ठंड महसूस होती है। बांज की जड़ का पानी शुद्ध होता है। क्योंकि यह लंम्बी दूरी तक फैली हुई रहती हैं। उत्तराखंड में पलायन के कारण गांवों में बहुत सी कृषि भूमि बिना उपयोग के पड़ी हुई है। ऐसी भूमि पर बांज के जंगल उगाए जा सकते हैं।

साहित्य को समर्पित रचनाकार

हल्द्वानी में रहते हुए डॉ.बीआर पनेरु की सक्रियता का अंदाज इससे ही लगाया जा सकता है कि देवभूमि प्रकाशन, हल्द्वानी (नैनीताल) से गत 14 वर्षों में विविध विषयों पर उनकी 30 चर्चित पुस्तकें प्रकाशित हुई है और यह क्रम अभी रुका नहीं बल्कि निरंतर जारी है।

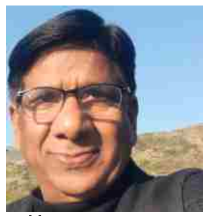

डॉ. अरुण कुकसाल
चामी पौड़ी

डॉ. बीआर पनेरू विद्यालयी शिक्षा विभाग, उत्तराखंड के वरिष्ठ अधिकारी रहे हैं। विभागीय सेवा में रहते हुए उन्होंने दशकों तक विभिन्न महत्वपूर्ण पदों के कार्यों व दायित्वों का सफलता पूर्वक निर्वहन किया। एक कुशल शिक्षक, प्रशिक्षक और शैक्षिक प्रशासक के साथ निरंतर चिंतनशील अध्येयता के रूप में उनकी लोकप्रिय पहचान है। विद्यालयी शिक्षा विभाग, उत्तराखंड में कार्य करते हुए 'भारत-विभाजन (वर्ष-2005)' और 'भारत-विभाजन और हिंदी कथा-साहित्य (वर्ष-2006)' उनकी बहु-चर्चित प्रकाशित पुस्तकें रही हैं। राजकीय सेवा से निवृत्त होने के बाद वे समर्पित भाव से साहित्य लेखन में व्यस्त हैं। हिंदी भाषा लेखन में प्रामाणिक व्याकरण, शब्दकोश, पर्यायवाची कोश, मुहावरा कोश, विपरीतार्थक शब्दकोश, अंत्याक्षरी-दिग्दर्शन, काव्यांग विवेचन, व्यावहारिक हिंदी, प्रयोजन मूलक हिंदी, वस्तुनिष्ठ सामान्य हिंदी, हिंदी भाषा का इतिहास, हिंदी की प्रतिष्ठित कहानियों और कविताओं पर समीक्षात्मक पुस्तकें उन्होंने प्रकाशित की हैं। उन्होंने पं. चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी', अध्यापक पूर्णसिंह, प्रेमचंद और जयशंकर 'प्रसाद' की प्रमुख कृतियों का विश्लेषणात्मक संपादन किया है।

हल्द्वानी में रहते हुए डॉ.बीआर पनेरू की सक्रियता का अंदाज इससे ही लगाया जा सकता है कि देवभूमि प्रकाशन, हल्द्वानी (नैनीताल) से गत 14 वर्षों में विविध विषयों पर उनकी 30 चर्चित पुस्तकें प्रकाशित हुई है। और यह क्रम अभी रुका नहीं बल्कि निरंतर जारी है। यह सुखद संयोग है कि मुझे उनकी अधिकांश पुस्तकों का अध्ययन करने का सुअवसर मिला है। डॉ. पनेरू के लेखन में साहित्य के विविध आयाम उद्घाटित हुए हैं। उनकी रचनाओं में हिंदी भाषा लेखन को प्रामाणिक, वैज्ञानिक एवं व्याकरणीय मानकों की कसौटी पर परखा गया है। उनका संपूर्ण लेखन एक गंभीर अध्येयता की शोधपरख दृष्टि से परिष्कृत हुआ है। उनकी रचनाएं पाठकों को रोचकता के साथ साहित्य लेखन में वैज्ञानिक भाषा और उसके उत्तरोत्तर विकास की क्रमबद्ध व्याख्या प्रस्तुत करती हैं। इस संदर्भ में उनकी सभी रचनाएं शिक्षण एवं शैक्षिक प्रशिक्षण की दृष्टि से बेहद उपयोगी संदर्भ साहित्य है। हिंदी साहित्य लेखन में ऐसे प्रमाणिक लेखन की नितांत आवश्यकता भी है। डॉ. बीआर पनेरू अपने लेखन के माध्यम से हिंदी साहित्य में विद्यमान इस रिक्तता को भाषा की समृद्धता की ओर ले जाने का महत्वपूर्ण और प्रशंसनीय कार्य कर रहे हैं।

हाल ही में डॉ.बीआर पनेरू की नवीनतम कृति 'उत्तराखंड के साहित्यकार' देवभूमि प्रकाशन, हल्द्वानी (नैनीताल) से प्रकाशित हुई है। इस पुस्तक में 212 साहित्यकारों का आत्मवृत्त के साथ साहित्यिक परिचय एवं 67 साहित्यिक ग्रंथों तथा 23 प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं का परिचय अत्यंत रोचक, व्यवस्थित, तथ्यपरक और प्रमाणिक तरीके से प्रस्तुत किया गया है। प्रख्यात साहित्यकार प्रो.लक्ष्मण सिंह बिष्ट 'बटरोही' जी ने इस किताब का आमुख लिखा है। उत्तराखंड के दिवंगत साहित्यकारों, प्रसिद्ध साहित्यकारों से लेकर वर्तमान और नव लेखकों का परिचय उनके कालक्रमानुसार इस किताब में संजोया गया है। पुस्तक में हिंदी, अंग्रेजी, गढ़वाली और कुमाऊंनी के 105 साहित्यकारों को उल्लेखित किया गया है। पुस्तक के परिशिष्ट में स्वनाम धन्य साहित्यकार चंद्रकुंवर बर्त्वाल, सुभाष पंत, गौरा पंत 'शिवानी', शैलेश मटियानी, देवेश ठाकुर और गोविंद चातक के व्यक्तित्व और कृतित्व पर समग्रता में विद्वानों के शोधपरख आलेख शामिल किए गए हैं। यह पुस्तक उत्तराखंड हिमालय की विगत दो शताब्दियों पूर्व के साहित्यकारों से लेकर आज के नव-सजृनशील व्यक्तित्वों और उनके कृतित्वों के सामुहिक समागमन का दायित्व लिए हुए है। इस प्रक्रिया में उत्तराखंडी समाज में विगत दो शताब्दियों में रचा गया प्रमुख साहित्य इसमें मुखरित हुआ है। अतः उत्तराखंडी समाज में साहित्यिक अतीत की स्थिति, वर्तमान दशा और भविष्य की दिशा इस किताब में स्वाभाविक रूप में जीवंत हुई है। इस नाते, यह किताब एक तरह से हमारे उत्तराखंडी समाज के निरंतर बदलते साहित्यिक मिजाज को भी परिलक्षित करती है। हिन्दी साहित्य लेखन में ऐसे प्रमाणिक लेखन की नितांत आवश्यकता है। इन संदर्भों में डॉ. पनेरू हिन्दी साहित्य में विद्यमान इस रिक्तता को भाषा की समृद्धता की ओर ले जाने का महत्वपूर्ण और प्रशंसनीय कार्य कर रहे हैं।

यह पुस्तक उत्तराखंड हिमालय की विगत दो शताब्दियों पूर्व के साहित्यकारों से लेकर आज के नव-सजृनशील व्यक्तित्वों और उनके कृतित्वों के सामुहिक समागमन का दायित्व लिए हुए है। लोकरत्न पंत 'गुमानी', तारादत्त गैरोला, गोविंदवल्लभ पंत, पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल, गौरा पंत 'शिवानी', शेरदा 'अनपढ़', गोविन्द 'चातक', क्षितिज शर्मा से लेकर दिनेश कर्नाटक, शिरीष कुमार मोर्य, हिमांशु जोशी, माया गोला, ललित मोहन रयाल, कविता भट्ट 'शैलपुत्री, पवनेश ठकुराठी तक युवा साहित्यकार इसमें शामिल हैं। यह महत्वपूर्ण है कि सभी साहित्यकारों के साहित्य जगत को प्रदान किए गये विशिष्ट योगदान का उन्होने जिक्र किया है। इस प्रक्रिया में, उत्तराखण्डी समाज में विगत दो शताब्दियों में रचा गया प्रमुख साहित्य इसमें मुखरित हुआ है। अतः उत्तराखण्डी समाज में साहित्यिक अतीत की स्थिति, वर्तमान दशा और भविष्य की दिशा इसमें स्वाभाविक रूप में जीवंत हुई है। इस नाते, यह किताब एक तरह से हमारे उत्तराखण्डी समाज के निरंतर बदलते साहित्यिक मिजाज को भी परिलक्षित करती है। पुस्तक के विविध आयामों के दृष्टिगत यह एक श्रमसाध्य कार्य था। दीर्घकालीन समय और दृड संयम से अनेक श्रोत्रों से प्रामाणिक जानकारी जुटाना आसान नहीं है। यह खुशी की बात है कि डॉ. बीआर पनेरू का यह संपादकीय कार्य अग्रेतर भी जारी है। अतिशीघ्र ही 'उत्तराखंड के साहित्यकार' का द्वितीय भाग पाठकों के मध्य चहकेगा। इसके लिए लेखक मित्र पनेरू जी को शुभकामनाएं एवं अग्रिम बधाई।

जमीन से 40 फीट ऊपर नहर

52 डाट के कायाकल्प का श्रेय नैनीताल के पूर्व डीएम धीराज सिंह गर्ब्याल को दिया जाता है, उन्होंने इस धरोहर को टूरिस्ट स्पॉट के तौर पर विकसित करने का मन बनाया, 78 लाख रुपये का बजट स्वीकृत होते ही इसके सौंदर्यीकरण का काम शुरु हो गया।

उत्तरांचल दीप डेस्क

उत्तराखंड के पहाड़ी क्षेत्र हों या मैदानी इलाके यहां खेती प्राकृतिक वर्षा और नहरों पर ही निर्भर है। पहाड़ी इलाकों से सटे मैदानी क्षेत्र हल्द्वानी और इसके आसपास के क्षेत्र की भूमि में बोरिंग कर जमीन से पानी निकालना आज भी आसान नहीं है। इसलिए खेती सिर्फ नहरों से मिलने वाले पानी अथवा बारिश पर ही निर्भर है। खेतों की सिंचाई के लिए ब्रिटिशकाल में तो एक ऐसी नहर बनाई गई थी जिसके बारे में सुनकर अथवा पढ़ कर हर कोई हैरान हो सकता है। क्योंकि 1882 में जब भारत में अंग्रेज शासन कर रहे थे तब हल्द्वानी के करीब 10 किलोमीटर दूर फतेहपुर वन क्षेत्र में अंग्रेजों ने 52 डांठ (पिलर) पर नहर बनाकर खेतों तक पानी पहुंचाने की व्यवस्था की थी। जो खरखाव के अभाव में अब जर्जर हो गई थी। स्थानीय लोगों ने इस नहर का सौंदर्यीकरण करने के बाद पर्यटन के लिहाज से विकसित करने की मांग उठाई थी। स्थानीय लोगों का कहना है कि कई दशकों से इस नहर का उपयोग नहीं हो रहा है। ऐसे में यह नहर अब धीरे-धीरे खंडर में तब्दील होती जा रही है। लिहाजा सरकार को चाहिए कि इस नहर का सौंदर्यीकरण कर पर्यटन के रूप में विकसित किया जाए, जिससे उत्तराखंड का न सिर्फ रेवेन्यू बढ़ेगा बल्कि स्थानीय युवाओं को रोजगार भी मिलेगा। ग्रामीणों की मांग सरकार तक पहुंची तो इसे पर्यटन के रूप में विकसित करने का प्लान भी बना, लेकिन कई बार सरकारी कार्य अटक और लटक भी जाते हैं। लेकिन 52 डाट के कायाकल्प का श्रेय नैनीताल के पूर्व जिलाधिकारी धीराज सिंह गर्ब्याल को दिया जाता है। उन्होंने इस जगह को टूरिस्ट स्पॉट के तौर पर विकसित करने का मन बनाया। 78 लाख रुपये का बजट स्वीकृत होते ही इसके सौंदर्यीकरण का काम शुरू हो गया। 52 डाट पर बनी नहर से एक बार फिर से पानी बहने लगा। जिससे स्थानीय किसानों को खेती के लिए पानी भी मिल रहा है। स्थानीय निवासी गिरीश चंद्र जोशी का कहना है कि यह ब्रिटिशकालीन नहर है जिसका सौंदर्यीकरण किया गया है। बावन डाट को देखने के लिए और यहां घूमने के लिए पर्यटक आ रहे हैं। वे यहां आकर अंग्रेजों द्वारा बनाई गई इस ऐतिहासिक नहर के बारे में जानकारी लेते हैं। वो खुद पर्यटकों को इस नहर के बारे में जानकारी देते हैं। कई शोधार्थी भी इसे देखने आते हैं और इसकी बनावट, ढाल आदि को लेकर विस्तृत अध्ययन करते हैं। अब यह जगह हल्द्वानी के टूरिस्ट स्पॉट की फेहरिस्त में शुमार हो गई है। दूर-दूर से लोग यहां घूमने आ रहे हैं। वीकेंड पर यहां खासी भीड़ देखने को मिलती है। रील बनाने वाले और सेल्फी लेने वाले इस खूबसूरत जगह को अपने कैमरे में कैद कर रहे हैं। गिरीश चंद्र जोशा का मानना है कि आने वाले समय में यह जगह और ज्यादा सैलानियों से गुलजार होगी ऐसी उन्हें उम्मीद है।

ब्रिटिशकाल में हल्द्वानी से करीब 10 किलोमीटर दूर के दर्जनों गांवों के किसान अपने खेतों की सिंचाई जमीन से 40 फीट ऊपर पिलर पर बनी इसी नहर से करते थे। सिंचाई विभाग समय-समय पर इस नहर की मरम्मत करता रहता था, लेकिन भाखड़ा नदी से यहां आने वाला पानी सूखने के बाद इस नहर का उपयोग नहीं रहा था। लिहाजा इस नहर में पानी आना ही बंद हो गया था। फतेहपुर क्षेत्र में ब्रिटिशकालीन सिंचाई नहर अब अपना अस्तित्व खो रही थी। 52 पिलरों पर बनी इस नहर का करीब 140 साल पहले निर्माण किया गया था। इस नहर की कारीगरी और डिजाइन देखते ही बनती है। ऐसे में स्थानीय लोगों का मानना है कि अगर सरकार इस नहर को पर्यटन के लिहाज से विकसित करे, तो यह स्थान प्रदेश के प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों में शामिल हो सकता है। फतेहपुर गांव के जागरूक ग्रामीण नीरज तिवारी का कहना है कि ब्रिटिशकालीन इस धरोहर को बचाने के लिए कई बार मुख्यमंत्री और अधिकारियों से अनुरोध किया गया। सरकार ने ग्रामीणों की भावनाओं का आदर किया और ऐतिहासिक नहर पर्यटन स्थल बन गई। सिंचाई विभाग के अधीक्षण अभियंता रामबाबू सिंह का कहना है कि बरसात के दौरान नहर सिंचाई के लिए प्रयोग में लाई जाती है। नहर की लंबाई करीब 1 किलोमीटर के आसपास है, यह नहर फतेहपुर से लामाचौड़ तक गुजरती है और कई दर्जन गांव की खेती को सिंचाई के लिए भाखड़ा नदी से पानी उपलब्ध कराती है। बरसात से पहले टूटी-फूटी नहर की मरम्मत करा ली जाती है, लेकिन इस नहर को धरोहर के तौर पर संरक्षित करने और इस नहर को बाहर से आने वाले पर्यटक देख सकें इसको लेकर कुमाऊं मंडल विकास निगम इस नहर का सुंदरीकरण किया है, जिससे नहर के अस्तित्व को बचाया जा सका है। उनका कहना है कि 1882 में अंग्रेजों द्वारा हल्द्वानी से सटे फतेहपुर में बेल-बसानी वाले मार्ग पर 52 पिलरों पर बनाई गई ये नहर किसानों की लाइफलाइन समझी जाती है। नहर 40 फीट ऊपर बड़े-बड़े 52 पिलरों पर खड़ी है। इसलिए इसका नाम 52 डाट नहर पड़ा। आज इस जगह को बावन डाट के नाम से ही जाना जाता है।

1882 में जब भारत में अंग्रेज शासन कर रहे थे तब हल्द्वानी के करीब 10 किलोमीटर दूर फतेहपुर वन क्षेत्र में अंग्रेजों ने 52 डांठ (पिलर) पर नहर बनाकर खेतों तक पानी पहुंचाने की व्यवस्था की थी,जो खरखाव के अभाव में अब जर्जर हो गई थी।

पर्यटन

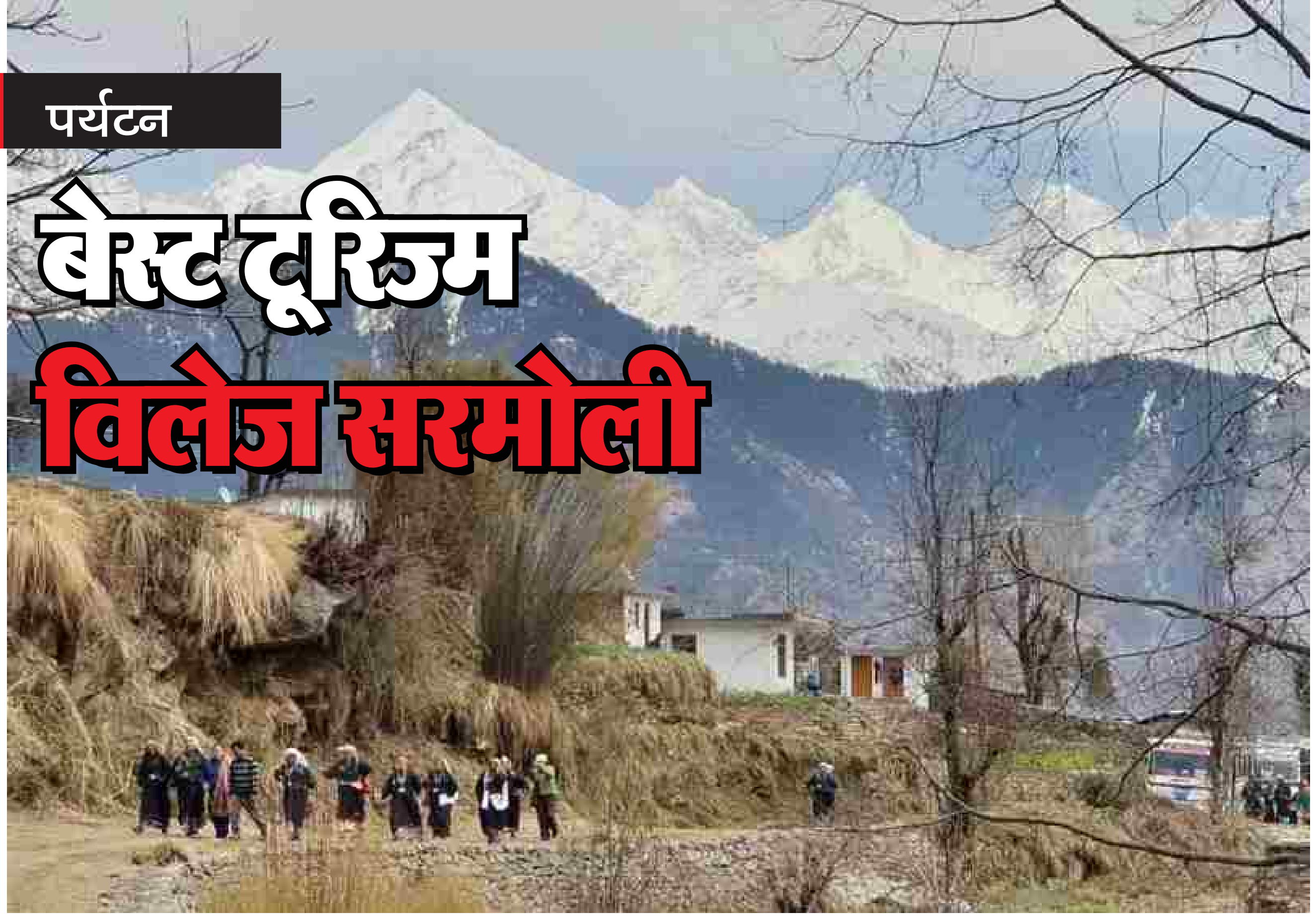

बेस्ट टूरिज्म विलेज सरमोली

सरमोली गांव सिर्फ पहाड़ी का एक हिस्सा नहीं, बल्कि एक ऐसा अनुभव है जो मन, शरीर और आत्मा को तरोताजा करता है, इसलिए भागदौड़ भरी जिंदगी में सुकून के दो पल बिताने के लिए टूरिस्ट पहाड़ों की इन्हीं शांत वादियों की ओर रुख करते हैं।

हरीश भट्ट
रामनगर

उत्तराखंड को कुदरत ने खूबसूरती से नवाजा है। इसलिए देश और विदेश से सैलानी यहां आत्मिक सुकून की तलाश में आते हैं। पहाड़ों की हरियाली, घाटियां, वन्यजीव, पक्षी, फूलों की घाटी, झरने, गुफाएं सैलानियों को आकर्षित करते हैं। पर्यटकों के लिए पिथौरागढ़ जिले में मुनस्यारी का सरमोली गांव तो एक छिपे हुए स्वर्ग के समान है। यह गांव एकांत और शांति की तलाश करने वालों के लिए परफेक्ट डेस्टिनेशन है। पिथौरागढ़ जिले का यह सुंदर गांव अपनी स्थाई जीवनशैली के लिए भी जाना जाता है। सरमोली ट्रैकर्स, पक्षी प्रेमियों और फोटोग्राफरों के लिए एक खास डेस्टिनेशन है। इस गांव की सुंदरता में हरे-भरे जंगल, बर्फ से ढके पहाड़ और सीढ़ीदार खेत चार चांद लगाते हैं। यह बेहद शांत स्थान पर्यटकों को प्रकृति के साथ जुड़ने और करीब रहने का मौका देता है।

सरमोली को एक दर्शनीय स्थल बनाने वाली बात इसकी स्थिरता और पर्यावरण-अनुकूल प्रथाओं के प्रति प्रतिबद्धता है। यहां रहने वाले परिवार प्रकृति का बहुत सम्मान करते हैं और हिमालय के पारिस्थितिकी तंत्र के प्रति जागरूक रहते है। यहां सैलानी जिस किसी से भी मिलते हैं, वह पर्यावरण संरक्षण के लिए अथक परिश्रम करता हुआ नजर आता है। स्थानीय समुदाय ने स्थाई कृषि तकनीकों, पुनर्वनीकरण (वनों को फिर से स्थापित करना) को अपनाया है और कचरे व प्लास्टिक के उपयोग को कम करने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। इस गांव की एक और खास बात यह है कि यहां के निवासी पर्यटकों को भी उनके प्रवास के दौरान पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रोत्साहित करते हैं। ताकि पर्यावरण का संतुलन बना रहे। पहाड़ों पर आने वाली आपदाएं कम से कम हों। यह सरमोली गांव पर्यटकों को स्थानीय संस्कृति से परिचित होने का अवसर भी देता है। यहां पारंपरिक कुमाऊंनी शैली के होमस्टे बनाए गए हैं। जहां पर्यटक पहाड़ी ग्रामीण जीवन का अनुभव कर सकते हैं। ये होमस्टे ग्रामीणों के गर्मजोशी भरे और स्वागतशील स्वभाव की झलक भी दिखाते हैं, यहां के निवासी अपनी परंपराओं और व्यंजनों के स्वाद को साझा करने के लिए उत्सुक भी रहते हैं।

- **उत्तराखंड के 13 जिलों में 13 डेस्टिनेशन विकसित करने व होम स्टे जैसी योजनाओं को शुरु करने से उत्तराखंड में टूरिज्म को पंख लगे हैं, इससे यहां के गांवों को भी पहचान मिली है, अब तो उत्तराखंड के गांव राष्ट्रीय स्तर पर भी पहचान बना रहे हैं।**
- **सरमोली गांव में कुमाऊंनी शैली के होमस्टे बनाए गए हैं, जहां पर्यटक पहाड़ी ग्रामीण जीवन का अनुभव करते हैं, ये होमस्टे ग्रामीणों के गर्मजोशी भरे स्वागतशील स्वभाव की झलक दिखाते हैं, यहां के निवासी अपनी परंपराओं और व्यंजनों के स्वाद को साझा करने के लिए उत्सुक भी रहते हैं।**

आदर्श टूरिस्ट डेस्टिनेशन

पर्यटक यहां सामुदायिक गतिविधियों में हिस्सा ले सकते हैं और ग्रामीणों के दैनिक कार्यों में उनका साथ दे सकते हैं। इसका मतलब है कि पर्यटक खेती, खाना पकाने या यहां तक कि पेड़ लगाने या जल स्रोतों के रखरखाव में स्थानीय लोगों की मदद कर सकते हैं। कहने का मतलब ये है कि उत्तराखंड का सरमोली गांव जागरूक पर्यटकों के लिए एकदम सही स्थान है। यही नहीं यह गांव कुछ अद्भुत प्राकृतिक अजूबों का प्रवेश द्वार भी कहा जाता है। सहासिक पर्यटक यहां ट्रैकिंग और हाइकिंग का आनंद ले सकते हैं। इस गांव के आसपास की पहाड़ियों के पीछे छिपे हुए झरनों की खोज कर सकते हैं। मिलम ग्लेशियर और नंदा देवी राष्ट्रीय उद्यान, दोनों ही दर्शनीय स्थलों की यात्रा सरमोली से की जा सकती है। प्रकृति प्रेमियों के लिए यहां पक्षी विहार भी है। यानी इस क्षेत्र में रहने वाली विविध पक्षी प्रजातियों, जिनमें हिमालयी मोनाल, चील और तीतर शामिल हैं, को देखकर मन प्रसन्न हो सकता है। इसे ऐसे भी समझ सकते हैं कि मुनस्यारी का सरमोली गांव सिर्फ पहाड़ी का एक हिस्सा ही नहीं, बल्कि एक ऐसा अनुभव है जो मन, शरीर और आत्मा को तरोताजा करता है। इसलिए भागदौड़ भरी जिंदगी में सुकून के दो पल बिताने के लिए टूरिस्ट पहाड़ों की इन्हीं शांत वादियों की ओर रुख करते हैं। हालांकि देशभर में एक से एक कई टूरिस्ट स्पॉट हैं जहां सालभर पर्यटकों की भीड़ रहती है। लेकिन सरमोली गांव अपने आप में एक आदर्श टूरिस्ट डेस्टिनेशन है।

बेस्ट टूरिज्म विलेज का खिताब

ये सच है कि उत्तराखंड की वादियों का कोई सानी नहीं है। इसकी तस्दीक अब भारत सरकार ने भी की है। भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय ने पिथौरागढ़ जिले के सरमोली गांव का चयन देश के बेस्ट टूरिज्म विलेज के रूप में किया है। पर्यटन मंत्रालय ने देश के तमाम गांवों का सर्वे करने के बाद उत्तराखंड के इस गांव को बेस्ट टूरिज्म विलेज का दर्जा दिया है। इसकी आधिकारिक घोषणा इसी साल 27 सितंबर को दिल्ली में की गई है। एक प्रतियोगिता के तहत पिथौरागढ़ के इस गांव को बेस्ट टूरिज्म विलेज के लिए चुना गया है। इस प्रतियोगिता में देखा गया कि गांव में कौन-कौन सी सुख सुविधाएं हैं? गांव में साफ सफाई की क्या स्थिति है? गांव के रहन-सहन को भी इसमें नंबर दिए गए। इसके साथ ही लोगों का व्यवहार, गांव का वातावरण, इसकी कनेक्टिविटी, गांव का माहौल जैसे बिंदुओं पर परखा गया। राज्य सरकार ने इस प्रतियोगिता के लिए 795 गांवों के आवेदन भारत सरकार को भेजे थे। जिसके बाद सरमोली गांव को इस श्रेणी में शामिल किया गया। भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय से इसे लेकर उत्तराखंड सरकार को एक आधिकारिक पत्र भेजा लिहाजा 27 सितंबर को दिल्ली में हुए कार्यक्रम में राज्य पर्यटन विभाग से जुड़े अधिकारी शामिल हुए। उत्तराखंड के पर्यटन मंत्री सतपाल महाराज का कहना है कि राज्य के लिए यह बेहद सुखद बात है कि पिथौरागढ़ जैसे क्षेत्र के सरमोली गांव को बेस्ट टूरिज्म विलेज के लिए चुना गया है। उन्होंने कहा इससे राज्य के टूरिस्ट प्लेसेस को पहचान मिलेगी। साथ ही गांव को लेकर भी लोगों का नजरिया बदलेगा। सरमोली गांव निवासी और सामुदायिक और प्राकृतिक पर्यटन की गांव में नींव रखकर इसे पंख लगाने वाले मल्लिका विर्दी को भी दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में पुरस्कार दिया गया। इस पुरस्कार के मिलने से सरमोली गांव सहित पूरे जिले में खुशी है। यह उन महिलाओं के लिए गर्व की बात है जिन्होंने पर्यटन और पर्यावरण संरक्षण की विशेष पहचान बनाने के लिए अथक मेहनत की है।

मल्लिका विर्दी ने बदली तस्वीर

2003-04 में पिथौरागढ़ के मुनस्यारी में पर्यटकों की संख्या बढने लगी थी, लेकिन होटलों की संख्या सीमित होने से पर्यटकों को ठहरने की समस्या का सामना करना पड़ता था। पर्यटकों के ठहरने की दिक्कतों को देखते हुए 2004 में मूल रूप से केरल निवासी मल्लिका विर्दी ने सरमोली गांव में होमस्टे बनाने पर विचार किया। मल्लिका ने गांव वालों से अपना यह विचार साझा किया और होमस्टे के लाभ गिनाते हुए प्रेरित किया। ग्रामीणों की कमजोर आर्थिक स्थिति को देखते हुए मल्लिका विर्दी ने महिलाओं के माध्यम से होम स्टे संचालन का निर्णय लिया। गांव की महिलाओं की लगन और उनके मार्गदर्शन पर गांव में वर्तमान में तीन दर्जन से अधिक होमस्टे संचालित होते हैं। इसके बाद मल्लिका विर्दी ग्रामीणों की चहेती बन गई और उन्हें दो बार ग्रामीणों ने वन सरपंच चुना। वर्ष 2007 से स्थानीय समुदाय ने मैसर वन कौतिक नाम से लोकप्रिय वन एवं पर्यावरण मेले का आयोजन शुरू किया है। इसके साथ हिमालय कला सूत्र नामक प्रकृति और संस्कृति उत्सव प्रारंभ किया। इस उत्सव ने स्थानीय ही नहीं बाहर से आने वाले पर्यटकों को भी आकर्षित किया। यानी मल्लिका विर्दी की सोच धरातल पर उतरने लगी संरक्षण आधारित प्रकृति पर्यटन और सामुदायिक पर्यटन को पंख लगने लगे। सुरम्य गांव सरमोली के होमस्टे देशी विदेशी पर्यटकों को रास आने लगे। इस तरह पर्यटकों की पहली पसंद होमस्टे बन गए।

- **भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय ने पिथौरागढ़ जिले के सरमोली गांव का चयन देश के बेस्ट टूरिज्म विलेज के रूप में किया है, पर्यटन मंत्रालय ने देश के तमाम गांवों का सर्वे करने के बाद उत्तराखंड के इस गांव को बेस्ट टूरिज्म विलेज का दर्जा दिया है।**
- **सरमोली में रहने वाले परिवार प्रकृति का बहुत सम्मान करते हैं और हिमालय के पारिस्थितिकी तंत्र के प्रति जागरुक रहते है, यहां सैलानी जिस किसी से भी मिलते हैं, वह पर्यावरण संरक्षण के लिए अथक परिश्रम करता हुआ नजर आता है।**

होम स्टे से टूरिज्म को पंख लगे

घुमावदार और तीव्र मोड़ वाली सड़कें, ऊंचे, ऊंचे पहाड़, कलकल करती नदियां, हर तरफ हरियाली और शांति वादियां ये सभी देवभूमि उत्तराखंड की खूबसूरती में चार चांद लगाते हैं। उत्तराखंड का सुहावना मौसम झरने, पहाड़ पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। जिससे यहां बारह महीने पर्यटकों की आमद रहती है। पर्यटकों की उपस्थिति और प्रसिद्ध टूरिस्ट स्पॉट पर बढ़ती भीड़ व महंगाई के कारण उत्तराखंड के गांव गुलजार होने लगे हैं। यानी सैलानियों से गुलजार होते गांव पर्यटकों की आरामगाह बन रहे हैं। बीते कुछ सालों में उत्तराखंड में पर्यटन को लेकर विशेष काम किया गया है। 13 जिलों में 13 डेस्टिनेशन, होम स्टे जैसी योजनाओं को शुरू करने से उत्तराखंड में टूरिज्म को पंख लगे। जिससे यहां के गांवों को भी पहचान मिली है। यानी उत्तराखंड के गांव को राष्ट्रीय स्तर पर भी पहचान बना रहे हैं। इसलिए उत्तराखंड के सरमोली गांव को बेस्ट टूरिज्म विलेज का खिताब मिला है। क्योंकि यह गांव अपनी समृद्ध संस्कृति, साफ-सफाई और शांति वादियों के लिए हमेशा चर्चाओं में रहा है। इस गांव में अलग-अलग मौसम में शकरकंद, राजमा और दाल जैसी फसलों की पैदावार होती है। सरमोली गांव के बारे में कहा जाता है की केरल की रहने वाली मल्लिका विर्दी और उनके पति ने लगभग दो दशक पहले इस गांव को आधिकारिक रूप से गोद लिया था। वह चाहते थे कि शहर की भागदौड़ से दूर वो एक ऐसा गांव बसाएं जहां बेहद शांति हो। मौजूदा समय में पर्यटकों के रुकने के लिए यहां 36 से अधिक होमस्टे हैं। यहां बनाए गए होमस्टे भी विशेष शैली के बनाए गए हैं। इनमें उत्तराखंड की संस्कृति की झलक दिखती है। इन सभी होमस्टे को गांव के ही लोग ही चलाते हैं। बेस्ट टूरिज्म विलेज सरमोली पहुंचाने के सबसे करीबी हवाई अड्डा पंतनगर है। यहां से दिल्ली और दूसरे शहरों से सीधी फ्लाइट आती रहती हैं। इसके बाद आप टैक्सी के जरिये पिथौरागढ़ तक पहुंच सकते हैं। जिसके बाद स्थानीय मैक्स, गाड़ियों के जरिये सरमोली गांव पहुंच सकते हैं। रेल मार्ग से आने वाले पर्यटकों के लिए काठगोदाम रेलवे स्टेशन कुमाऊं का आखिरी रेलवे स्टेशन है। यहां से सरमोली गांव लगभग 280 किलोमीटर दूर है। इस सफर को आप बस या खुद की गाड़ी से तय कर सकते हैं। बेस्ट टूरिस्ट विलेज सरमोली गांव 12 महीने पर्यटकों के स्वागत के लिए उत्सुक रहता है।

दृष्टिकोण

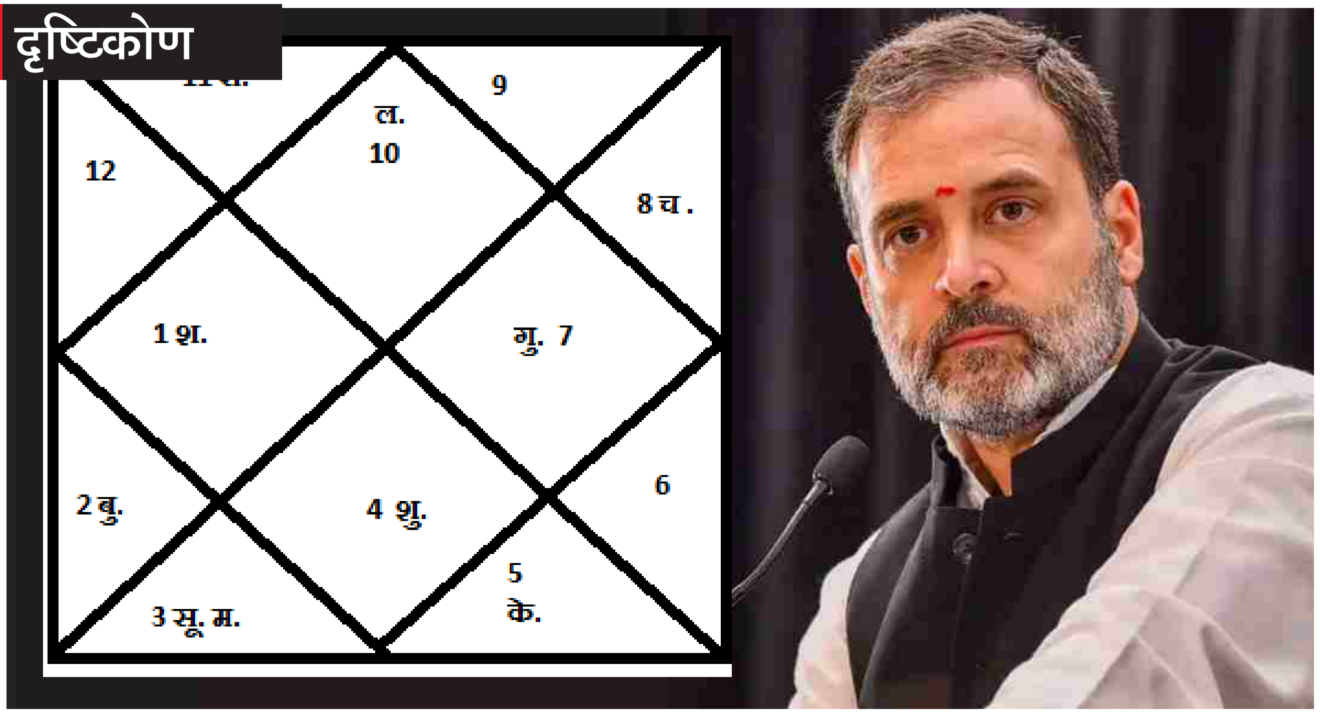

राहुल के भाग्य में राजयोग नहीं ?

राहुल गांधी 11 साल से सत्ता से बेदखल हैं और भविष्य में भी उनके पीएम बनने के योग नहीं हैं, राहुल की जन्म कुंडली का अध्ययन करने वाले ज्योतिषाचार्य मानते हैं कि राहुल गांधी प्रधानमंत्री बनने वाले नहीं हैं, क्योंकि आज तक जितने भी देश के प्रधानमंत्री बने हैं उन सभी की कुंडली में कुछ ग्रह योगों में समानता रही है।

बाबू सिंह
वरिष्ठ पत्रकार

प्रधानमंत्री बनने का ख्वाब देख रहे राहुल गांधी को देश की सेना पर यकीन नहीं है, राहुल को देश की सीबीआई, ईडी, आईटी, अदालतों, चुनाव आयोग पर भरोसा नहीं है, राहुल गांधी देश के प्रधानमंत्री, गृह मंत्री, रक्षा मंत्री पर विश्वास नहीं करते, राहुल गांधी वो नेता है जिन्हें संविधान और लोकतंत्र खतरे में नजर आता है, लेकिन कांग्रेस ने किस तरह लोकतंत्र और संविधान की धज्जियां उड़ाई है ये जानते हुए भी अनजान बनने का ड्रामा करते हैं। वो हर भारत विरोधी ताकत के झूठ पर यकीन करने वाले भारतीय नेता हैं। इससे समझा जा सकता है कि पब्लिक जिसे पप्पू कहती है वो कितना खतरनाक है, ये केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू भी कह चुके हैं। केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू ने बड़ा खुलासा करते हुए कहा कि राहुल गांधी बहुत खतरनाक रास्ते पर चल रहे हैं। मोदी सरकार को अस्थिर करने के लिए जॉर्ज सोरोस ने एक ट्रिलियन डॉलर सरकार को अस्थिर करने के लिए दिए हैं। इसलिए राहुल गांधी जब भी राजनीतिक मंच से बोलते हैं तो सरकार के खिलाफ जहर उगलते हैं। देश को कमजोर करने में पूरी ताकत लगाते हैं, समाज बांटने और सरकार से बगावत के लिए जनता को भड़काते हैं। राहुल विपक्ष में हैं इसलिए सरकार से सवाल करने का उनका लोकतांत्रिक अधिकार है, लेकिन जब देश मुश्किल में हो तो सरकार से सवाल करने के बजाए सरकार के साथ खड़े होने की उनकी प्रवृत्ति नहीं है। यानी राहुल के बारे में कहा जाए कि वो राजनीति के माध्यम से भारत की एकत व अखंडता को क्षति पहुंचाने की हर कोशिश कर रहे हैं। इसमें राहुल गांधी का कोई दोष नहीं है, क्योंकि उनकी कुंडली उनका भविष्य और उनके चरित्र, राजनीति करने का नजरिया सब कुछ स्पष्ट कर देती है। राजघराने में भले ही राहुल गांधी पैदा हुए हों, लेकिन उनकी कुंडली में राजयोग नहीं है। ऐसे में हर किसी को समझ आ जाएगा कि बार-बार लॉन्चिंग होने के बावजूद वो लॉन्च क्यों नहीं हो पा रहे हैं?

राहुल के रहते सत्ता से बाहर रहेगी कांग्रेस

राहुल गांधी 11 साल से सत्ता से बेदखल हैं और भविष्य में भी उनके पीएम बनने के योग नहीं हैं। यानी राहुल गांधी की जन्म कुंडली का अध्ययन करने वाले ज्योतिषाचार्य भी मानते हैं कि फिलहाल तो राहुल गांधी प्रधानमंत्री बनने वाले नहीं हैं। क्योंकि आज तक जितने भी देश के प्रधानमंत्री बने हैं उन सभी की कुंडली में कुछ ग्रह योगों में समानता रही है। जैसे दशमेश की दशम भाव से स्थिति, राजनीतिक सत्ता के कारक सूर्य की दशम भाव से स्थिति, दशम भाव राज सत्ता का भाव हैं। लगभग सभी प्रधानमंत्री की जन्म कुंडली में दशमेश और सूर्य दशम भाव से केंद्र या त्रिकोण भावों में बैठे हैं। अधिकतर मामलों में दशमेश या सूर्य दोनों का ही दशम भाव पर स्थिति या दृष्टि द्वारा प्रभाव है। लगभग सभी प्रधानमंत्रियों के मामलों में दशम भाव पर गुरु का भी प्रभाव पाया गया है। भाग्य के नवम भाव के स्वामी की स्थिति भी लग्न और नवम भाव से अच्छी देखी गई है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि सही समय पर उन्नति प्रदान करने वाले ग्रहों की दशा, अंतर्दशा आना है, जो अंततः भाग्य ही तय करता है। सभी मामलों में जब वो प्रधानमंत्री बने तब लग्न, पंचम, नवम या फिर दशम भाव के स्वामी ग्रहों की दशा अंतर्दशा चल रही थी। अधिकतर मामलों में लग्न से त्रिकोण भावों के स्वामी की ही दशा चल रही थी। अगर यह सब सिद्धांत राहुल गांधी की जन्म कुंडली में देखें तो इनमें से उनकी कुंडली पर एक भी लागू नहीं होता। राहुल गांधी की कुंडली में दशमेश चंद्रमा दशम भाव से छठे भाव में है और उसका दशम भाव से कोई संबंध नहीं है। सूर्य दशम भाव से द्वादश भाव में है, जो दशम भाव में अशुभ स्थिति है। गुरु का भी दशम भाव पर सीधा प्रभाव नहीं है। यह सब नकारात्मक बिंदु है, जो उनके प्रधानमंत्री बनने की संभावना को कमजोर करते हैं। यानी कांग्रेस जब तक राहुल गांधी पर दाव लगाएगी वो सत्ता से बाहर रहेगी। ज्योतिष के जानकार कहते हैं कि यदि राहुल गांधी की कुंडली में राजयोग नहीं है तो उन्हें जबरदस्ती प्रधानमंत्री कैसे बनाया जा सकता है?

राहुल गांधी की कुंडली में राहु की दशा चल रही है, वहीं उनके 11वें भाव में मंगल बैठा हुआ है और वह छठे भाव में सूर्य के साथ है, इससे राहुल अपने शत्रुओं के खिलाफ तो जीतकर आगे बढ़ सकते हैं, पर राजयोग नहीं होने से प्रधानमंत्री जैसे सर्वोच्च पद तक नहीं पहुंच सकते है।

राहुल गांधी का 2029 में चांस नहीं

राहुल गांधी का जन्म 19 जून 1970 में दोपहर 2 बजकर 28 मिनट पर दिल्ली में हुआ था। उस समय पूर्वी क्षितिज पर तुला राशि का उदय हुआ था। एक नीच भंग राजयोग और एक विपरीत राजयोग कुंडली में बना हुआ है। तुला लग्न के लिए योगकारक शनि अपनी नीच राशि मेष में सप्तम भाव में बैठे हैं और उनका नीच भंग हो रहा है। द्वादशेश बुध अष्टम भाव में बैठे हैं, जो विमल नामक विपरीत राजयोग बना रहे हैं। लग्नेश शुक्र उन्नति के दशम भाव में बैठे हैं और लग्न में नैसर्गिक शुभ ग्रह गुरु बैठे हैं, जो लगातार निराशाजनक परिणाम के बाद भी राहुल गांधी को लड़ने की शक्ति दे रहे हैं और पार्टी का उन्हें साथ भी मिल रहा है। ज्योतिषाचार्य रामेश्वर लांजुळकर का मानना है कि राहुल गांधी पर अभी राहु की दशा चल रही है, जो अप्रैल 2037 तक चलेगी। इस अवधि में सभी ठीक रहा तो दो लोकसभा चुनाव होने की संभावना है। राहु पंचम भाव में बैठे हैं और नैसर्गिक शुभ ग्रह गुरु की दृष्टि में है। ज्योतिष के प्राचीन ग्रंथ लघु पाराशरी के सिद्धांतानुसार राहु-केतु तभी योगकारक प्रभाव देते हैं, जब वे केंद्र में बैठे हों और त्रिकोण भावों के स्वामी के प्रभाव में हो या फिर त्रिकोण भावों में बैठे हो और केंद्र भावों के स्वामी के प्रभाव में हो। इसलिए यहां राहु योगकारक प्रभाव देने के लिए बाध्य नहीं है। पर हां वह त्रिकोण भाव में बैठे हैं और उसका राशि दिग्बली होकर नीचभंग राजयोग बना रहा है। इसलिए शुभ परिणाम देने की क्षमता राहु में निश्चित रूप से है। बात साल 2029 के लोकसभा चुनाव की जाए तो तब राहुल गांधी की राहु दशा में बुध की अंतर्दशा चल रही होगी। यह बुध द्वादशेश होकर अष्टम भाव में बैठकर विपरीत राजयोग का निर्माण कर रहा है। अष्टम भाव अचानक, आश्चर्यजनक परिणाम देने के लिए भी विख्यात है। मतलब ऐसा कि सभी को लगेगा कि काम होना निश्चित है, तब अचानक काम बिगड़ जाएगा और जब सबको लगेगा कि काम बनना मुश्किल है तब अचानक काम बन जाएगा। तो अष्टम भाव में बैठे बुध, जो भाग्य भाव के स्वामी भी हैं। जो राहुल गांधी को अब तक के मुकाबले सबसे अधिक मजबूती के साथ प्रधानमंत्री पद का दावेदार बनाएंगे। पर शनि और सूर्य मंगल के बीच में पाप कर्तरी योग में बैठे होने और भाग्य भाव के स्वामी होकर अष्टम भाव में बैठना इनकी ऐसी कमजोरी है, जो शायद ही वे दूर कर पाएं। ऐसे में यह आशंका बन रही है कि राहुल गांधी प्रधानमंत्री नहीं बनेंगे या फिर बन भी जाते हैं तो बहुत कम अवधि तक के लिए बन पाएंगे, जो पांच वर्ष का कार्यकाल किसी कारण वश पूरा नहीं कर पाएंगे।

ज्योतिषाचार्यों की राय

प्रसिद्ध ज्योतिष डॉ. मधुप्रिया ने भी राहुल गांधी की कुंडली का अध्ययन किया है। उनका कहना है कि राहुल गांधी की कुंडली तुला लग्न और धनु राशि की है। बृहस्पति उनके लग्न में हैं, लेकिन अभी अष्टम चल रहे हैं। उनकी राहु की दशा है और उसमें शनि की अंतर्दशा चल रही है। यानी शनि इनका नीच का बैठा है। साल 2024 शनि का साल था, ऐसे में क्योंकि शनि उनका नीच का था लिहाजा शनि ने उन्हें पूरी तरह से प्रभुत्व में नहीं आने दिया। कहावत भी है कि शनि राजा को रंक बना सकता है। इससे समझा जा सकता है कि राहुल गांधी सत्ताधारी परिवार में पैदा होने के बाद भी सत्ता प्राप्त नहीं कर पाए हैं। डॉ. मधु प्रिया कहती है कि गौर करने वाली बात ये भी है कि जब से इनकी राहु में शनि की अंतर्दशा आई है, ये कांग्रेस के अध्यक्ष भी नहीं रहे और पीएम पद के सर्वमान्य दावेदार भी नहीं हैं। अगर इनके ग्रहों की बात करें तो 2026 तक इनकी राहु में शनि की अंतर्दशा है, लिहाजा तब तक तो इनके पीएम बनने की कोई भी संभावनाएं नहीं हैं। उनका कहना है कि अगर राहुल कभी सत्ता में आए भी तो इनकी कुंडली में एक अंगारक योग है जो राजीव गांधी की कुंडली में भी था। ये योग है राहु-शनि और मंगल का। ये भी एक वजह है कि हो सकता है ये फ्रंट फेस न बनें। क्योंकि ये योग इनके परिवार में चला आ रहा है। राहु-शनि-मंगल का योग इनका अंगारक योग बनाता है।

जन्म कुंडली राहुल गांधी का भविष्य, उनके चरित्र, राजनीति करने का नजरिया सब कुछ स्पष्ट कर देती है, राजघराने में भले ही राहुल गांधी पैदा हुए हों, लेकिन उनकी कुंडली में राजयोग नहीं है, ऐसे में हर किसी को समझ आ जाएगा कि बार-बार लॉन्चिंग होने के बावजूद वो लॉन्च क्यों नहीं हो पा रहे हैं?

बहुत प्रबल है नरेंद्र मोदी की कुंडली

ज्योतिषाचार्य अश्विनी सहगल का भी यही मानना है कि राहुल गांधी की कुंडली में राजयोग ही नहीं है तो वो प्रधानमंत्री भी नहीं बन सकते। राहुल गांधी की कुंडली में सूर्य उतना प्रबल नहीं है और सूर्य ही गद्दी पर लेकर जाता है। जबकि नरेंद्र मोदी की कुंडली बहुत प्रबल है और विश्व प्रसिद्धी मिलने के कारण लोग चाहते हैं कि वही पीएम बने रहे। मोदी ही भारत को विश्व गुरु की स्थिति में लेकर आएंगे। जबकि राहुल गांधी नेता प्रतिपक्ष रहते हुए ही भारत को भारी नुकसान पहुंचाना चाहते हैं। ज्योतिषाचार्य अनिल वत्स का मानना है कि राहुल गांधी ने राजघराने में जन्म तो लिया, लेकिन राजयोग नहीं मिल पाएगा। उनका कहना है कि राहुल गांधी की कुंडली में राहु की दशा चल रही है। वहीं उनके 11वें भाव में मंगल बैठा हुआ है और वह छठे भाव में सूर्य के साथ है। इससे राहुल गांधी अपने निजी शत्रुओं के खिलाफ तो जीतकर आगे बढ़ सकते हैं, लेकिन राजयोग नहीं होने की वजह से प्रधानमंत्री जैसे सर्वोच्च पद तक नहीं पहुंच सकते है। यानी राहुल गांधी की कुंडली देखी जाए तो ऐसा कोई भी योग नजर नहीं आता जो उन्हें शीर्ष पर पहुंचाने वाला हो।

विफलता मिलती रहेगी राहुल को

ऐस्ट्रॉलजर अश्विन रावल का मानना है कि राहुल गांधी की कुंडली में शुक्र पाप ग्रहों के बीच में सैंडविच है और सप्तम स्थान में नीच राशि का शनि है इसलिए अभी तक इनका विवाह नहीं हो पाया है। चंद्र से सप्तम स्थान में सूर्य मंगल है, वह भी विवाह के लिए नेगेटिव प्रभाव दे रहे हैं। राहुल गांधी की कुंडली में चंद्रमा अकेला है मतलब उसके साथ या आसपास कोई ग्रह नहीं है। तो केमद्रुम योग बना हुआ है। यही वजह है कि बार-बार उनको विफलता मिलती है। इसलिए कई बार इनका निर्णय गलत हो जाता है। दूसरे लोगों के विचारों से राहुल गांधी जल्दी प्रभावित हो जाते हैं। इनकी कुंडली में बुध अष्टम स्थान में है और दो पाप ग्रहों के बीच में है। इसकी वजह से राजनीति में जिस चीज की सबसे ज्यादा चलती है यानी वाणी उसकी वजह से राहुल गांधी मात खा जाते हैं। उनकी बातों को लोग कई बार बहुत गंभीरता से नहीं लेते हैं और विपक्षी दल इनकी गंभीर बातों का भी मजाक बना देता है। ●

द बंगाल फाइल्स

‘ताशकंद फाइल्स’ और ‘कश्मीर फाइल्स’ के बाद विवेक अग्निहोत्री ने बंगाल की फाइल्स ओपन की हैं, विवादास्पद इसमें कुछ भी नहीं हैं, यह फिल्म भारती बैनर्जी के माध्यम से भारत छोड़ो आंदोलन के कालखंड से अब तक दर्द सह रही नारी का प्रतिबिंब बनकर वर्तमान परिप्रेक्ष्य को रेखांकित करती हैं।

अरुण सिंह
मुंबई ब्यूरो

बॉलीवुड के जाने माने डायरेक्टर विवेक रंजन अग्निहोत्री की फिल्म ‘द बंगाल फाइल्स’ विवादों के बीच रिलीज हो गई है, लेकिन इस फिल्म की रिलीज पर पश्चिम बंगाल सरकार ने अघोषित बैन लगा रखा है। ‘ताशकंद फाइल्स’ और ‘कश्मीर फाइल्स’ के बाद विवेक अग्निहोत्री ने बंगाल की फाइल्स ओपन की हैं। विवादास्पद इसमें कुछ भी नहीं हैं। यह फिल्म भारती बैनर्जी के माध्यम से भारत छोड़ो आंदोलन के कालखंड से अब तक दर्द सह रही नारी का प्रतिबिंब बनकर वर्तमान परिप्रेक्ष्य को भी रेखांकित करती हैं। फिल्म दो समय रेखाओं पर चलती है एक आजादी से पहले 1940 के दशक की और दूसरी वर्तमान समय की। फिल्म की शुरुआत लॉर्ड माउंटबैटन, नेहरू और जिन्ना के बीच देश के बंटवारे की चर्चा से होती है। जहां कांग्रेस और मुस्लिम लीग पाकिस्तान बनाने की मांग करते हैं, वहीं गांधी इसका विरोध करते हैं। हिंदू-मुस्लिम तनाव ही फिल्म का मुख्य विषय है। फिल्म में नया मोड़ तब आता है जब शिवा पंडित (सीबीआई अफसर) की इंट्री होती है। जिन्हें एक दलित लड़की गीता मंडल की गुमशुदगी की जांच का जिम्मा दिया जाता है। संदेह दो लोगों पर जाता है सरदार हुसैनी, मुस्लिम विधायक, और भारती बनर्जी, जो कभी गांधी के साथ अहिंसा के रास्ते पर चली थीं। सरदार हुसैनी पर आरोप है कि वह बांग्लादेशी घुसपैठियों को पश्चिम बंगाल में बसाकर उन्हें भारतीय नागरिक बनाकर इलाके की डेमोग्राफी चेंज कर रहा है। उनका वोट बैंक के रूप में इस्तेमाल करता है। ताकि उसकी हुकुमत चलती रहे। तफ्तीश के दौरान शिवा पंडित को आजादी की लड़ाई लड़ चुकी भारती बनर्जी मिलती है। जिसने अगस्त 1946 के बंगाल का ‘डायरेक्ट एक्शन डे’ देखा था। जिसमें हजारों लोग मारे गए थे, नोआखाली के दंगे देखे थे। आज भी बीते दिनों की उन भयानक यादों में वो खो जाती है। शिवा पंडित पाता है कि हालात आज भी कमोबेश 1940 के दशक जैसे ही हैं। हुक्मरान आज भी अपने स्वार्थ के लिए ‘वी द पीपल’ को इस्तेमाल कर रहे हैं।

इंटरेस्ट व कंफ्यूजन एक साथ

फिल्म निर्देशन विवेक अग्निहोत्री की राइटिंग और रिसर्च बढ़िया है, ये उनके मीडिया में आ रहे इंटरव्यूज से भी समझा गया है। फिल्म ‘द बंगाल फाइल्स’ अतीत में हमारे कर्णधारों द्वारा की गई भूलों को तथ्यों के साथ रेखांकित करती है। सवाल ये हैं कि ये रिसर्च इतनी गहराई से की है कि वो दो फिल्मों में समा जाती। इसलिए भी फिल्म लंबी हो गई हैं। बेहतर होता इसे दो पार्ट में बनाया जाता और कहानी उस जगह छोड़ते जिससे दर्शकों में इंटरेस्ट बना रहता। फिल्म कहीं-कहीं बोझिल होने लगती हैं, दर्शक इंतजार करता है कि फिल्म कब खत्म होगी। साथ ही कंफ्यूज भी होता रहता है कि फिल्म वर्तमान में है या अतीत में। निर्देशक ने कई सीन तो इतने प्रभावी बनाए हैं कि आप पलक झपकाना भी भूल जाते हैं। जैसे-महिलाओं को हैंगर से लटकाना, दो मोटरसाइकलों से सरदार बने अमर के दो टुकड़े हो जाना, जज की सरेआम बेईज्जती, नमाजी द्वारा बच्चे को गोली मारना व काकू की गर्दन काटना, हुसैनी द्वारा शिवा को बच्चे के सामने सॉरी बुलवाना, अमर व भारती का लाशों को ढोना, गिद्धों का लाशों पर मंडराना, पानी नहीं होने पर पसीना पीते हुए दिखाना और बच्चे का सड़क पे पड़ी रोटी खाना, ये दिखता है कि उनके निर्देशन में कितनी गहराई है। जिसे सिनेमाटोग्राफर अतर सिंह सैनी ने कैमरे में जबरदस्त तरीके से कैद किया हैं। फिल्म के संगीतकार रोहित शर्मा ने संगीत अच्छा दिया हैं। हालांकि क्लाईमैक्स बहुत ज्यादा प्रभावी नहीं बन पाया है।

फिल्म की तीन घंटे 24 मिनट की लम्बाई बड़ी बाधा हैं, एडिटर शंख राजाध्यक्ष करीब 25 मिनट कम कर सकते थे, रियलिटी का डोज ओवरलोड हैं, साउथ की मूवीज के एक्शन दृश्य आराम से झेलने वालों को कोई परेशानी नहीं होगी, पर कमजोर दिल वालों को शायद यह फिल्म थोड़ा परेशान कर सकती है।

कला का बेहतर प्रदर्शन

बात कलाकारों के अभिनय की करें तो सीबीआई अफसर के रूप में दर्शन कुमार अफसरों की सुने या ईमानदारी से काम करे। इस कश्मकश में फसें नजर आते हैं। हालांकि सीबीआई अफसर के रोल में दर्शन कुमार ने काफी इम्प्रेस किया है। गदर-2 के बाद सिमरत कौर रंधावा ने पल्लवी जोशी के जवानी वाले किरदार में कमाल किया हैं। उनके चेहरे के आते-जाते हाव-भाव और लंबे संवादों की निरंतरता काबिले तारीफ हैं। पल्लवी जोशी की चुप्पी कमाल की हैं, वो आंखों से बहुत कुछ बोल जाती हैं। क्लायमेक्स में व्यथा बयां कर वे दर्शकों के आंसू निकलवा लेती हैं। अमर बने एकलव्य सूद ने एक सिख के किरदार में जान डाल दी हैं। अनुपम खेर ने महात्मा गांधी के रोल को बखूबी जिया हैं। हुसैनी बने शाश्वत चटर्जी और नमाशी चक्रवर्ती अपने किरदारों में जबरदस्त क्रूरता का परिचय देते हैं। मिथुन चक्रवर्ती का रोल छोटा होने के बावजूद वे प्रभावी रहे हैं। राजेश खेरा, पुनीत इस्सर, प्रियांशु चटर्जी, सौरव दास ने भी उम्दा काम किया हैं। फिल्म की खूबियों की बात की जाए तो फिल्म में कुछ कमियों को नजरअंदाज कर दिया जाए तो विवेक रंजन अग्निहोत्री ने एक बेहतरीन फिल्म पेश की है। उनका लेखन और निर्देशन असर छोड़ता है। थिएटर में जाकर ही आप इसका एक्सपीरियंस कर सकते हैं। कलाकारों का दिल छूने वाला अभिनय इसका प्लस पॉइंट हैं। इसमें रियलिटी कूट-कूट कर भरी है, इसके लिए कला निर्देशक बधाई के पात्र हैं। फिल्म की तीन घंटे 24 मिनट की लम्बाई सबसे बड़ी बाधा हैं। एडिटर शंख राजाध्यक्ष लगभग 25 मिनट कम कर सकते थे। रियलिटी का डोज ओवरलोड हैं। साउथ की मूवीज के एक्शन दृश्य आराम से झेलने वालों को कोई परेशानी नहीं होगी। कमजोर दिल वालों को शायद यह फिल्म थोड़ा परेशान कर सकती है।

पश्चिम बंगाल में फिल्म पर रोक

‘द बंगाल फाइल्स’ रिलीज हो चुकी है लेकिन पश्चिम बंगाल की सीएम ममता बनर्जी ने इस फिल्म पर अघोषित प्रतिबंध लगाया तो एक नया विवाद खड़ा हो गया है। फिल्म पर बैन को लेकर इंडियन मोशन पिक्चर प्रोड्यूसर्स एसोसिएशन (आईएमपीपीए) ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिखकर पश्चिम बंगाल में फिल्म ‘द बंगाल फाइल्स’ पर लगे अघोषित बैन को हटाने की मांग की है। आईएमपीपीए का कहना है कि फिल्म को केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड (सीबीएफसी) से वैधानिक मंजूरी मिलने के बावजूद, पश्चिम बंगाल राज्य में इसके सार्वजनिक प्रदर्शन को रोका जा रहा है। संगठन का आरोप है कि राज्य सरकार ने फिल्म पर कोई आधिकारिक प्रतिबंध नहीं लगाया है, लेकिन अप्रत्यक्ष तरीकों से फिल्म की रिलीज में बाधाएं उत्पन्न की है। पश्चिम बंगाल में ‘द बंगाल फाइल्स’ को दर्शकों तक पहुंचने से रोका जा रहा है, जिससे न सिर्फ दर्शकों का अधिकार प्रभावित हो रहा है, बल्कि निर्माता और वितरक भी डर और दबाव का सामना कर रहे हैं। संगठन का कहना है कि पश्चिम बंगाल सरकार कानून व्यवस्था और आवश्यक सुरक्षा प्रदान करने में विफल रही है, जो कि किसी भी रचनात्मक अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए अनिवार्य है। फिल्म के निर्माण में भारी निवेश किया गया है, जिसकी भरपाई केवल उसकी स्क्रीनिंग से संभव है। यदि फिल्म की रिलीज में इस तरह की बाधाएं जारी रहीं तो इससे निर्माताओं, वितरकों और संपूर्ण फिल्म उद्योग को गंभीर आर्थिक नुकसान उठाना पड़ेगा। इस तरह की स्थिति से न केवल कला और सिनेमा के विकास पर असर पड़ेगा, बल्कि यह फिल्म प्रमाणन प्रक्रिया की वैधता पर भी सवाल खड़े करेगा। पत्र के आखिर में आईएमपीपीए ने प्रधानमंत्री से अपील की है कि वो इस मामले में जल्द हस्तक्षेप करें और यह सुनिश्चित करें कि ‘द बंगाल फाइल्स’ जैसी प्रमाणित फिल्मों को देश के किसी भी हिस्से में निर्बाध रूप से प्रदर्शित किया जा सके। संगठन ने कहा है कि ये सिर्फ एक फिल्म का मामला नहीं है, बल्कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और रचनात्मकता के सम्मान से जुड़ा व्यापक मुद्दा है।

सिनेमाघर मालिकों को धमकी

फिल्म की प्रोड्यूसर पल्लवी जोशी ने पश्चिमी बंगाल में फिल्म को रिलीज ना होने देने पर अपनी नाराजगी जाहिर की। उन्होंने आईएनएस से बातचीत करते हुए कहा, कि ‘हमें पता चला है कि पश्चिम बंगाल के सिनेमाघर मालिकों को हमारी फिल्म रिलीज करने पर अंजाम भुगतने की धमकी दी जा रही है। यह बहुत गंभीर मामला है। यह किसी भी कलाकार और फिल्म इंडस्ट्री के लिए सही नहीं है। आज यह हमारी फिल्म के साथ हो रहा है, कल यह किसी और के साथ भी हो सकता है, प्रेस के साथ, मीडिया के साथ, या फिर आम लोगों के साथ भी हो सकता है।’ फिल्म निर्देशक विवेक रंजन अग्निहोत्री की ‘द बंगाल फाइल्स’ इस साल की सबसे चर्चित फिल्मों में से एक है। यह फिल्म बंगाल के ‘डायरेक्ट एक्शन डे’ और 1946 के कलकत्ता दंगा की दर्दनाक घटनाओं को दिखाती है। निर्देशक के सच उजागर करने वाली फाइल्स ट्रिलॉजी का यह तीसरा पार्ट है।

- **फिल्म ‘द बंगाल फाइल्स’ अतीत में हमारे कर्णधारों द्वारा की गई भूलों को तथ्यों के साथ रेखांकित करती है, रिसर्च इतनी गहराई से की है कि वो दो फिल्मों में समा जाती, इसलिए फिल्म लंबी हो गई है, बेहतर होता इसे दो पार्ट में बनाया जाता और कहानी उस जगह छोड़ते जिससे दर्शकों में इंटरेस्ट बना रहता।**
- **पश्चिम बंगाल सरकार ने ‘द बंगाल फाइल्स’ पर अघोषित प्रतिबंध लगा रखा है, लिहाजा फिल्म पर बैन को लेकर इंडियन मोशन पिक्चर प्रोड्यूसर्स एसोसिएशन (आईएमपीपीए) ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिखकर पश्चिम बंगाल में फिल्म ‘द बंगाल फाइल्स’ पर लगे अघोषित बैन को हटाने की मांग की है।**

मासिक राशिफल

पंडित उपेन्द्र कुमार उपाध्याय
9897450817, 9897791284
ज्योतिषाचार्य, आयुर्वेदरत्न, कथावाचस्पति, यज्ञानुष्ठान विशेषज्ञ
अध्यक्ष-श्री शिवशक्ति ज्योतिष पीठ, बदायूं
निवास प्रभातनगर, निकट इंद्राचौक, सिविल लाइंस, बदायूं (यूपी)

मेष-

इस माह धैर्य बनाए रखें, क्योंकि आपकी समझदारी और प्रयास आपको सफलता जरूर दिलाएंगे। भागीदारी वाले व्यवसायों और चालाकी भरी आर्थिक योजनाओं में निवेश न करें। आपके वरिष्ठ इस माह देवदूतों जैसा व्यवहार करने वाले हैं। अप्रेल में आपको ढेरों दिलचस्प निमंत्रण मिलेंगे-साथ ही आपको आकस्मिक उपहार मिलने के योग बन रहे हैं। वैवाहिक जीवन का आनंद लेने के पर्याप्त मौके हैं मिलेंगे। उपाय: मानसिक हिंसा से बचे, प्रभु में विश्वास रखें कार्य सिद्ध होंगे। भाग्यांक 9

वृषभ:-

इस माह आपके चेहरे पर मुस्कान बिखरी रहेगी और अजनबी भी जाने-पहचाने से महसूस होंगे। यह माह ऐसी चीजों को खरीदने के लिए बढ़िया है, जिनकी कीमत आगे चलकर बढ़ सकती है। घरेलू जिंदगी सुकूनभरी और रुशनुमा रहेगी। इस माह आपको सब-कुछ प्रेम के रंग में रंगा दिखाई देगा। कार्यालय में कोई आपको बढ़िया खबर दे सकता है। उपाय: गणेशजी की चार परिक्रमा लेकर आशीर्वाद ले कार्य सिद्ध होंगे। भाग्यांक 8

मिथुन:-

इस माह खीज और चिढ़चिढ़ेपन के अहसास को खुद पर हावी न होने दें। इस माह धन योग है। आप काफी धन कमा सकते हैं। बच्चे आपको व्यस्त रखेंगे और सुकून देंगे। प्रिय के साथ बाहर जाते समय अपने पहनावे और बरताव में नयापन दिखाएं। महत्वपूर्ण लोगों के साथ बातचीत करते समय अपने शब्दों को ध्यान से चुनें। जीवनसाथी के साथ शांत रहे ताकि लड़ाई-झगड़ा न हो। उपाय: काले चने, उड़द, तिल, सरसो का तेल दान करें कार्य सिद्ध होंगे। भाग्यांक 6

कर्क:-

इस माह बिना वजह के वाद-विवाद से कुछ हासिल नहीं होगा। कोई बेहतरीन विचार आपको आर्थिक तौर पर फायदा पहुंचा सकता है। अपने शब्दों पर काबू रखें, वरना परिवार के बुजुर्ग आहत हो सकते हैं। उन्हें अहसास कराएं कि आप उनका खयाल रखते हैं। इस माह के अंत में कारोबार के लिए की जाने वाली यात्रा फायदेमंद साबित होगी। जीवनसाथी आपका काम बिगाड़ सकता है। धैर्य रखें। उपाय: काला-सफेद कपड़ा साधु संतों को दान करें कार्य सिद्ध होंगे। भाग्यांक 1

सिंह:-

इस माह आपका आत्मविश्वास और आसान कामकाज आपको आराम के लिए समय देंगे, लेकिन धन आपकी मुट्ठी से सरक सकता है। आपके अच्छे सितारे आर्थिक तंगी नहीं आने देंगे। ऐसे इंसान से मुलाकात हो सकती हैं, जो आपको खुद अपनी जिंदगी से ज्यादा प्रेम करता होगा। कार्यालय में जिसके साथ आपकी सबसे कम बनती है, उससे संबंध सुधरेंगे। वैवाहिक जीवन का असली स्वाद चख सकते हैं। उपाय: गुरु या पिता की आज्ञा का पालन करें कार्य सिद्ध होंगे। भाग्यांक 8

कन्या:-

इस माह रियल एस्टेट संबंधी निवेश अच्छा-खासा मुनाफा दे सकता है। घर में कुछ बदलाव भावुक बना सकते हैं। अपने प्रिय जीवनसाथी के बिना समय बिताने में दिक्कत महसूस करेंगे। कार्यक्षेत्र में चीजें वाकई बेहतरी की ओर बढ़ सकती हैं। यात्रा और शिक्षा से जुड़े काम आपकी जागरुकता में वृद्धि करेंगे। आपके लिए यह माह खूबसूरत रोमानी रहेगा। सेहत का ख्याल रखे वरना आपकी परेशानी बढ़ सकती है। उपाय: धर्म स्थान पर झंडा दान करें कार्य सिद्ध होंगे। भाग्यांक 7

तुला:-

लंबे समय से अटके मुआवजे और कर्ज आदि इस माह आपको मिल जाएंगे। दूसरों को प्रभावित करने की आपकी क्षमता आपको कई सकारात्मक चीजें दिला सकती है। आपके जहन में काम का दबाव होने के बावजूद आपका प्रिय आपके लिए खुशी के पलों को लाएगा। किसी लघु या मध्यावधि पाठ्यक्रम में दाखिला लेकर अपनी तकनीकी क्षमताओं में निखार लाने का समय है। जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा। उपाय: अपने पार्टनर को गुलाब दें कार्य सिद्ध होंगे। भाग्यांक 9

वृश्चिक:-

रिश्तेदारों का सहयोग तनाव कम करेगा। सगे संबंधियों से मिलन होगा। उधार मांगने वाले लोगों को नजर अंदाज करें। बच्चे और परिवार को केंद्र में रखें। किसी दिलचस्प इंसान से मुलाकात की प्रबल संभावना है। अहम प्रोजेक्ट जिस पर आप काफी समय से काम कर रहे हैं वह टल सकता है। महत्वपूर्ण लोगों के साथ बातचीत करते वक्त शब्दों का ध्यान रखें। जीवनसाथी प्रेम से भरपूर रहेगा। उपाय: पूजा स्थान पर सफेद शंख स्थापित करें, कार्य सिद्ध होंगे। भाग्यांक 2

धनु:-

इस माह खुद को किसी सृजनात्मक काम में व्यस्त रखना बेहतर रहेगा। बीमारी से लड़ने के लिए खुद को तैयार रखें। इस माह आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार आएगा, लेकिन धन का व्यय आपकी योजनाओं में बाधा डाल सकता है। प्रिय से रोमांटिक मुलाकात होगी। कार्यक्षेत्र में तरक्की मिल सकती। जीवनसाथी यह बताएगा कि आप उसके लिए कितने कीमती हैं। उपाय: सोते समय तांबे के बर्तन में पानी रखे सुबह घर के बाहर पेड़ पौधों में डाले कार्य सिद्ध होंगे। भाग्यांक 8

मकर:-

यह माह मौज-मस्ती और आनंद से भरा रहेगा। मजे लेने की अपनी प्रवृत्ति पर काबू रखें। मनोरंजन पर जरूरत से ज्यादा खर्च करने से बचें। बिना कुछ खास किए आप आसानी से लोगों का ध्यान आकर्षित करने में कामयाब रहेंगे। एक लंबा दौर जो काफी समय से आपको दबोचे हुए था, खत्म हो चुका है। जल्दी ही आपको जीवन-साथी मिलने वाला है। आपके वैवाहिक जीवन में और निखार आने का प्रबल योग है। उपाय: किसी तरह का घमंड न करें कार्य सिद्ध होंगे। भाग्यांक 8

कुंभ:-

इस माह कमीशन, लाभांश या रायल्टी के जरिए फायदा होने का योग बन रहा है। आपको ऐसी योजनाएं शुरू करनी चाहिए, जो पूरे परिवार के लिए समृद्धि लाने में सहायक हों। आपका प्यार आपके दिल को ठेस पहुंचा सकता है। लेखन और मीडिया के क्षेत्र में कार्य करने वालों को बड़ी ख्याति प्राप्त होने से प्रसन्नता होगी। अपने व्यक्तित्व और रंग-रूप को बेहतर बनाने की कोशिश संतोषजनक साबित होगी। उपाय: छोटी कन्याओं को भोजन कराएं कार्य सिद्ध होंगे। भाग्यांक 6

मीन:-

यह माह फायदेमंद साबित होगा। आप किसी पुरानी बीमारी से राहत और आराम महसूस करेंगे। अच्छा पैसा कमाएंगे, लेकिन खर्च में इजाफा आपकी बचत को मुश्किल बना देगा। आप अपनी कामयाबी की फेहरिस्त में एक नया मोती जड़ेंगे। दूसरों के सामने आदर्श स्थापित करने के लिए खुद को बेहतर बनाने की कोशिश जारी रखें। इस माह आपको निराशा हाथ लग सकती है। उपाय: अपने प्रिय को पिंक कलर के मोती या सिप की बनी हुई वस्तु गिफ्ट करें। कार्य सिद्ध होंगे। भाग्यांक 3